मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 56 | अंक : 7 | जनवरी, 2016 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹10

अमर रहे गणतन्त्र हमारा

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

नया विश्वास

माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे के नेतृत्व में वर्तमान सरकार के दो वर्ष पूर्ण होने पर राजधानी जयपुर में 13 दिसम्बर 2015 के दिन एक भव्य समारोह आयोजित किया गया। समारोह में प्रवीणता सूची में स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को लेपटॉप का वितरण किया गया। जिलास्तरीय कार्यक्रमों में प्रभारी मंत्रीगण द्वारा लेपटॉप वितरण किया जा रहा है। विगत दो वर्षों में राज्य में हुए विभिन्न विकास कार्यों की झांकी, इस अवसर पर प्रस्तुत की गई। इन जनहितैषी विकास कार्यों की सराहना केन्द्र एवं अन्य राज्यों के द्वारा की जा रही है। राजस्थान तेज गति से विकसित राज्यों की श्रेणी में आने के लिए आगे बढ़ रहा है। यह हमारे लिए हर्ष एवं गौरव का विषय है।

जहाँ तक शिक्षा विभाग की बात है, प्रदेश में राजकीय विद्यालयों के प्रति नया विश्वास संचरित हुआ है और इसका प्रमाण है, इन विद्यालयों में हुआ लगभग नौ लाख नए बच्चों का नामांकन। विद्यालयों में शिक्षकों के पद भरे जाने के लिए इस वर्ष लगभग 500 डी.पी.सी. हुई है। स्टाफिंग पैटर्न का फार्मूला विभिन्न स्तरों पर विचार विमर्श एवं शिक्षाविदों के साथ परामर्श से तैयार किया गया है। इसमें विभिन्न श्रेणी के शिक्षकों एवं कर्मचारियों की संख्या का व्यावहारिक आवश्यकता के अनुरूप निर्धारण किया गया है। हमारा दृढ़ संकल्प है कि प्रत्येक विद्यालय में वहाँ पढ़ाए जाने वाले विषय का अध्यापक पहुँचे और हम इसे पूरा करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

विद्यालयों में विज्ञान लेब के लिए एक-एक लाख रुपये दिए गए हैं। विभिन्न श्रेणियों में पात्र विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां दी जा रही हैं। हमारी लोकप्रिय माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे शिक्षा क्षेत्र में सुधार के लिए कृतसंकल्पित हैं और उनके स्तर से हमारे हर प्रस्ताव को प्राथमिकता के साथ स्वीकृति प्राप्त हो रही है। इस हेतु हम उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

मैं चाहता हूँ कि बोर्ड परीक्षा से पहले के दो-तीन महीनों में हमारे विद्यार्थी खूब मन लगाकर अध्ययन करें। महाभारत के शान्ति पर्व में कहा गया है-नास्ति विद्यासमं चक्षुः अर्थात् विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है। अतः विद्यार्थियों को जितना हो सके, अधिक से अधिक ज्ञान ग्रहण कर लेना चाहिए। इसके लिए पुनरावृत्ति आवश्यक है। चाणक्य कहते हैं कि बिना अभ्यास के विद्या नष्ट हो जाती है-अनभ्यासेईहता विद्या। अतः परीक्षा से पूर्व के इस महत्त्वपूर्ण समय में विद्यार्थी पाठ्यक्रम अनुसार पुनरावृत्ति करते हुए परीक्षा पैटर्न अनुसार तैयारी करें। शिक्षकों से भी मेरी अपील है कि वे अपनी सम्पूर्ण योग्यता एवं सामर्थ्य माता-पिता द्वारा उच्चतम विश्वास के साथ उन्हें सौंपे गए बच्चों का जीवन निर्माण करने में लगा दें। इसी में उनकी प्रतिष्ठा एवं पहिचान निहित है।

जनवरी माह में 26 जनवरी हम गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाते हैं। यह हमारा राष्ट्रीय पर्व है। इस दिवस पर स्वतंत्रता के समर में प्राणों का उत्सर्ग करने वाले अमर शहीदों को श्रद्धासुमन भेंट करते हुए राष्ट्र के विकास और सुनाम के लिए संकल्प देशवासियों को लेना चाहिए और निसंदेह यह संदेश विद्यालयों, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया जा सकता है। शिक्षकों को इस दिशा में पहल करनी चाहिए। इस माह में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस एवं स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती भी है। स्वामी विवेकानन्द का जन्मदिन युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। राज्य में वर्तमान में 71 मॉडल स्कूल संचालित हैं, जिनका नामकरण स्वामीजी के नाम से किया गया है। मुझे विश्वास है कि हमारे शिक्षक एवं विद्यार्थी इन दोनों महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण की दिशा में पहल करेंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

> “चाणक्य कहते हैं कि बिना अभ्यास के विद्या नष्ट हो जाती है-अनभ्यासेईहता विद्या। अतः परीक्षा से पूर्व के इस महत्त्वपूर्ण समय में विद्यार्थी पाठ्यक्रम अनुसार पुनरावृत्ति करते हुए परीक्षा पैटर्न अनुसार तैयारी करें। शिक्षकों से भी मेरी अपील है कि वे अपनी सम्पूर्ण योग्यता एवं सामर्थ्य माता-पिता द्वारा उच्चतम विश्वास के साथ उन्हें सौंपे गए बच्चों का जीवन निर्माण करने में लगा दें। इसी में उनकी प्रतिष्ठा एवं पहिचान निहित है।”

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 56 | अंक : 7 | मार्गशीर्ष–पौष २०७२ | जनवरी, 2016

प्रधान सम्पादक
सुवालाल
●
वरिष्ठ सम्पादक
प्रकाश चन्द्र जाटोलिया
●
सम्पादक
मोमाराम चौहान
●
सह सम्पादक
मुकेश व्यास
●
प्रकाशन सहायक
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय है।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 001
दूरभाष : 0151–2628876
फैक्स : 0151–2201861
E-mail : shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

शिक्षाकल्प : मेरा पृष्ठ
- ज्योति किरण बनें 5

आलेख
- गुरु गोविन्द सिंह और राजस्थान 6
  हरकेश भारद्वाज
- मानव की जाति सभी एकै पहचानबो 8
  जसपाल कौर
- निर्भयता 9
  उषा टेलर
- बापू का स्वप्न, संकल्प और आज 10
  डॉ. शिखा रतनीकांत पालीवाल
- सुभाष की भारतीयता केन्द्रित क्रांतिधर्मिता 12
  रमेश कुमार शर्मा
- महामूल्य डॉ. सत्येंद्र बोस 14
  भवानी प्रसाद चतुर्वेदी
- स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एजुकेशन : एक परिचय 15
  सुनीता चावला
- एस.आइ.क्यू.ई. : शाला में क्रियान्विति 16
  सतीश परिहार
- टेंट पेग कम्पास 19
  जितेन्द्र करण सिंह चौहान
- कुछ मत करो 21
- गीता में श्री-श्री
  सत्यनारायण शर्मा
- नेतृत्व एवं प्रबंधन 22
  रामेश्वर लाल शर्मा
- संस्कारों की प्रतिरूप नारी 31
  रामचन्द्र स्वामी
- ब्रह्मलिंगा से प्राप्त श्री राम एवं देवी सीता का पुरातात्विक साक्ष्य 32
  जफर उल्लाह खाँ
- व्याख्यान के अतिरिक्त अन्य शिक्षण-प्रविधियाँ 36
  डॉ. आर.पी. कर्मयोगी
- अध्ययन-अध्यापन में भाषा की उपयोगिता 37
  बनाराम
- ओलम्पिक खेलों का सफर 39
  राजेन्द्र सिंह
- स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की उपादेयता 40
  मकबूल हुसैन

रपट
- राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह–2015 41
  मुकेश व्यास

शैक्षिक उपलब्धि
- स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति 43
  मनोज तंवर

इस माह का गीत
- आओ हम सब मिलकर गाएँ... 18
  संकलन : पूजा चौहान

स्तम्भ
- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 23-29
- विद्यालय प्रांगण 30
- शाला प्रांगण 47-48
- शैक्षिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 44-46
- राजस्थान के लोक देवता : डॉ. राधाकिशन सोनी
  समीक्षक–डॉ. लक्ष्मीशंकर आचार्य
- हरी-हरी घास और काली गौरैया : मोनिका गौड़
  समीक्षक–डॉ. मदन सैनी
- ये फलाने आगे : डॉ. मूलचंद बोहरा
  समीक्षक–अमिता मिश्रा
- ब्रह्मसूत्र (वेदांत दर्शन) :
  व्याख्याकार डॉ. के.बी. शर्मा, रामकिशन शर्मा
  समीक्षक–जगन्नाथ प्रसाद श्रीवास्तव

पाठकों की बात

- माह दिसम्बर 2015 की शिविरा पत्रिका प्राप्त हुई। इस के शिविरा पत्रिका के अंक बाह्य आवरण का कलेवर एवं साजसज्जा पिछले अंकों की तुलना में काफी बेहतर व आकर्षक आ रहे हैं। निदेशक महोदय श्रीमान सुवालाल जी की बात 'सरकारी विद्यालय' के स्थान पर 'मेरा विद्यालय' का भाव गहरे अर्थ को समेटे अच्छा लगा। आलेख प्रतिभा सम्मान में इमरान खान का परिचय प्रेरणादायी लगा। राष्ट्रीय गणित दिवस पर महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का जीवन परिचय हमें गौरव का भान कराता प्रतीत हुआ। सरकारी योजनाओं के कॉलम में बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करती सरकारी योजनाएँ जानकारीपूर्ण संग्रहणीय लगा। पूनमपुरी गोस्वामी का कार्टून भी पत्रिका के स्तर में इजाफा करते प्रतीत हुए। वैभवशाली सिरोही आलेख स्तरीय जानकारियों से ओतप्रोत लगा। सिरोही के इतिहास का सागर गागर में समाहित होता प्रतीत हो रहा था। —सत्यपालसिंह चारण, जालोर
- शिविरा पत्रिका का ज्ञान का खजाना सदा कहता रहे इसी क्रम में शिक्षकों, लेखकों व साहित्यकारों के स्वस्थ चिन्तन-मनन के भावों को प्रकाशित किया जाता है। शिविरा के मुख्य पृष्ठ पर डॉ. अम्बेडकर व पं. मदनमोहन मालवीय के चित्रों का अंकन सराहनीय है। शिक्षा मंत्री ने शिक्षकों की विश्वसनीयता को बरकरार रखने की अपील की है इससे शिक्षकगण अपने कर्त्तव्य के प्रति आत्मचिन्तन करें कि हम हमारा दायित्व पूर्ण करने में सक्षम हैं।
  शैक्षिक चिन्तन के अन्तर्गत 'स्वदेशी शिक्षा-सच्ची शिक्षा' तथा 'सीखना जिन्दगी' आलेख पठनीय हैं। शिविरा के अंतिम पृष्ठ के अंदर के पृष्ठ पर प्रकाशित चित्र में शिक्षा मंत्री तथा पुरस्कृत शिक्षक पवेल के द्वारा वर्तमान शिक्षक इमरान को सम्मानित किया जाना शिक्षा विभाग के लिए प्रेरणास्पद है। शैक्षिक प्रतिभाओं की उपयोगिता को उजागर करने में शिविरा पत्रिका की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। कार्टूनों के माध्यम से भावना को प्रकट करने का अवसर शिविरा द्वारा देना बेहतर है। —सावलराम परिहार, बालोतरा
- शिविरा दिसम्बर 15 का अंक मिला। आद्योपांत पढ़ा। मन गद्गद् हो गया। पत्रिका की जितनी तारीफ की जाए कम है। प्रत्येक रचना इतनी सारगर्भित एवं रोचक थी कि अंक को 'बाँच-बाँच कर फिर बाँचा' फिर भी मन नहीं भरा। स्तरीय पत्रिका के प्रकाशन के लिए साधुवाद। 'सीखना जिंदगी है' 'इन्हें सहानुभूति नहीं समानुभूति चाहिए', 'स्वदेशी शिक्षा-सच्ची शिक्षा' आदि आलेख रोचक लगे। माननीय निदेशक महोदय जी का 'सरकारी विद्यालय' के स्थान पर 'मेरा विद्यालय' दिशाकल्प, नई सोच को प्रतिपादित करने वाला लगा। पाठक लिखते हैं के अन्तर्गत महेश कुमार चतुर्वेदी ने संक्षिप्त चिंतन-शैक्षिक जगत की अनूठी पत्रिका-शिविरा पर सच्चाई से रूबरू कराया। हर माह शिविरा का आमुख (कलेवर पृष्ठ) शानदार कलात्मक चित्रण के साथ माह के संदर्भित दिवस एवं पर्व विशेष को उकेरकर बहुत कुछ मौन संदेश देने में महान् भूमिका का संदेश देने में सक्षम है। इस हेतु संपादक मंडल का प्रयास वाकई काबिल है। हर अंक संग्रहणीय है। सहेजकर रखने की इच्छा होती है। —सुनील कुमार कम्बोलिया, प्रतापगढ़
- 'अपनों से अपनी बात में' आदरणीय प्रो. वासुदेव देवनानी जी ने शिक्षा विभाग की दो वर्षों की शानदार उपलब्धियों के लिए प्रदेश के सभी विद्यार्थी शिक्षक एवं अभिभावकों, अधिकारियों व कार्मिकों का अभिनन्दन किया है। यह प्रसन्नता का विषय है। 'दिशाकल्प मेरा पृष्ठ' में निदेशक महोदय, माध्यमिक शिक्षा ने 'सरकारी विद्यालय' नाम के विकल्प के रूप में 'मेरा विद्यालय' नाम सुझाया है। श्रेष्ठ सुझाव है विद्यालय के प्रति अपनत्व की भावना जागेगी जैसे अपना घर-मेरा घर कहने पर हम घर से जुड़ जाते हैं। दिसम्बर माह के प्रासंगिक महापुरुषों, दिवसों का उल्लेख कर अच्छी परम्परा का निर्वहन किया है। यथा श्री निवास रामानुजन, पं मदनमोहन मालवीय की क्रिसमस दिवस, मानव अधिकार आदि आदि।
  श्री मिश्रा ने शिक्षक गौरव श्री इमरान की श्रेष्ठ उपलब्धियों का चित्रण कर पाठकों को उनसे रूबरू करवाया है। विशेष बात यह देखने में आई कि स्वास्थ्य स्तंभ में स्वस्थ जीवन जीने के सरल उपाय श्री अमरानंद जैन द्वारा सुझाए गए हैं जो उपादेय हैं। कृपया इस स्तंभ को सतत रूप से चलाते रहें। सभी के लिए निर्विवाद रूप से उपयोगी है। सीखना जिंदगी है, प्रेरणास्पद आलेख है। सद्भावना, सच्चा अर्थ, यथार्थतः सत्य है कि धर्म ग्रन्थों को जीवन में उतारना ही ज्ञान का सच्चा अर्थ है। मात्र रटते रहना कोरी बकवास है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने देशप्रेम को सही परिभाषित किया है। वर्मा जी का आलेख 'इन्हें सहानुभूति नहीं समानुभूति' चाहिए सही कहा है। श्री सतीश चन्द्र श्रीमाली का आलेख शिक्षा में निहित है संस्कारों के गुण संकेतित है। संस्कार निर्माण में विद्यालय की अहम भूमिका के लिए अन्य आलेख भी स्तरीय है। गुणवत्ता चयन हेतु साधुवाद। —टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

▼ ***चिन्तन***

मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, वह उनका निर्माता, नियंत्रणकर्ता और स्वामी है।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

सुवालाल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

ज्योति किरण बनें

शिक्षा ऐसे व्यक्ति का विकास करती है जो जीवन की सम्पन्नता को पहिचान सके। शिक्षा विद्यार्थी को मात्र केवल अर्थोपार्जन के लिए ही तैयार नहीं करती अपितु उस की चेतना को भी परिष्कृत करने का कार्य करती है।

शिक्षा के पुनीत कार्य से जुड़े हम सभी का दायित्व है कि हम ऐसे प्रयास करें जिससे विद्यार्थियों में तकनीकी कौशल के साथ-साथ आत्मचेतना को भी विकसित करने का मार्ग प्रशस्त हो। शासन आपके स्तर पर विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है।

तत्कालीन संस्था प्रधानों एवं कार्मिकों ने राजकीय विद्यालयों की नई पहिचान देने में विद्यालय विकास कोष के उपयोग के साथ जनसहभागिता प्राप्त करने में अनूठा प्रयास किया है। प्रयास की निरन्तरता, राजकीय विद्यालयों में आमजन का विश्वास जागृत करने में प्रभावी कदम होगा। जनसहभागिता से ही विकास शुल्क की राशि के पुनर्निर्धारण पर मंथन एवं विद्यालयों में स्थानीय स्तर पर शैक्षणिक व्यवस्था उपलब्ध कराना, राजकीय विद्यालय को 'अपना विद्यालय' बनाने की दिशा में सकारात्मक कदम है।

राज्य की शालाओं के शैक्षिक परिदृश्य में तेजी से आ रहा परिवर्तन इसका प्रमाण है। न केवल प्रभावी पर्यवेक्षण, अपितु सतत मूल्यांकन द्वारा सम्बन्धित सभी पक्षों के सर्वोत्कृष्ट की अपेक्षा है। आगामी तीन माह बोर्ड परीक्षाओं के लिए अधिक सुव्यवस्थित प्रयास, विद्यालय एवं कार्यरत कार्मिकों के प्रति दृढ़ आत्मविश्वास में वृद्धि परीक्षा परिणाम को नई ऊँचाई तक ले जाने में सफल होंगे। हम अपने-अपने कर्तव्य क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ करने का प्रयास करें, विद्यार्थियों के जीवन में ज्योति किरण बनें।

26 जनवरी, गणतन्त्र दिवस की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

(सुवालाल)

"शिक्षा के पुनीत कार्य से जुड़े हम सभी का दायित्व है कि हम ऐसे प्रयास करें जिससे विद्यार्थियों में तकनीकी कौशल के साथ-साथ आत्मचेतना को भी विकसित करने का मार्ग प्रशस्त हो। शासन आपके स्तर पर विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है।"

जयंती विशेष

गुरु गोबिन्द सिंह और राजस्थान

❑ द्वारकेश भारद्वाज

प्राचीन सभ्यता के केन्द्र पटना में 342 वर्ष पूर्व सन् 1666 में जन्मे दसवें व अंतिम गुरु गोबिन्द सिंह का नाम भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। गुरु तेग बहादुर सिंह जो नवें गुरु थे, का आमेर रियासत (अब जयपुर) के तत्कालीन नृपति मिर्जा रामसिंह से आत्मीय सम्बंध थे। पटना में जिस स्थल पर गुरु गोबिन्द सिंह का जन्म हुआ। वह उस काल में आमेर की ही रियासत का एक भाग था और यह भी संयोग था कि आमेर नृपति रामसिंह के साथ गुरु तेग बहादुर गुरु गोबिन्द सिंह के जन्म के वक्त आसाम में मुगल शासन की मुखालफत करने के कारण अहोम के राजा पर औरंगजेब के चाहे अनुसार चढ़ाई करने गये थे। वहीं गुरु तेग बहादुर को गुरु गोबिन्द सिंह के जन्म का मंगल समाचार मिला था।

आसाम जो कामरूप देश कहलाता था एवं जादू-टोनों व पाशविक शक्तियों से प्रभावित करने में नामधारी था, में इन घातक व मारक शक्तियों से रक्षार्थ नृपति रामसिंह गुरु तेग बहादुर को अपने साथ ले गये थे। पटना से शिशु गुरु गोबिन्द सिंह को तेग बहादुर पंजाब ले आये थे व पंजाब राजस्थान की सरहदें मिली होने के कारण पंजाब के सिखों व वीर बांके व आन बान शान की रक्षार्थ बलि हो जाने वाले राजपूत शासकों का आपसी मेल मिलाप बना रहा। चालीस वर्ष की वय प्राप्त करते-करते तो गुरु गोबिन्द सिंह ने कट्टरपंथी मुगल शासक औरंगजेब के कुशासन व अत्याचार के खिलाफ संगत व पंगत के माध्यम से जनशक्ति को सैन्य शक्ति के रूप विकसित कर दिया और उन्होंने राजस्थान की वीर भूमि में यहां की जनशक्ति व राजाओं को साथ लेने की दृष्टि से दक्षिण की ओर कूच करते हुए दमदमा साहब पंजाब से 20 अक्टूबर 1706 को चलकर नोहर भादरा (श्री गंगानगर) झुझना व जुम होते हुए 1 नवम्बर 1706 को ढूंढाड़ राज्य में करीब छह सौ साल पहले मिर्जा राजा मानसिंह प्रथम पांच सिक्ख जड़िया परिवारों को आमेर लाए थे। हुआ यूं कि

मुगल सेनापति मानसिंह प्रथम काबुल और कंधार को जीतने के बाद लाहौर के गवर्नर रहे थे। वहां पर सूर्यवंशी जड़िया कारीगरों के कुंदन की जड़ाई में मीनाकारी के काम को देख मानसिंह प्रभावित हुए। वे लाहौर से पांच सिक्खों सरदार गोपा सिंह, जवा सिंह, गोपालसिंह, हजारी सिंह व बख्तावर सिंह को आमेर ले आए। उन्हें जयगढ़ किले में ठहराने के बाद आमेर में रंगनी मंदिर के पास रहने के लिए हवेली दी। इस खानदान में पचवीं सरदार कुदरत सिंह ने कुंदन की मीनाकारी कला को विश्व में विख्यात बनाया। इनके पुत्र व जड़ाई कारीगर सरदार इन्दर सिंह 'कुदरत' के मुताबिक प्रथम के समय में सिक्ख धर्म के 10 वें गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज धार्मिक यात्रा के दौरान आमेर आए। आमेर नरेश मानसिंह ने गुरुदेव को नजराना पेश किया और सिक्ख जड़िया कारीगरों की बनाई सोने में हीरे जड़ी तलवार में भेंट की। गुरु गोबिन्द सिंह आमेर से ही पुष्कर पहुंचे और यहां गोबिन्द घाट बनवाया। इन सिक्खों ने चौड़ा रास्ता में गोवर्धननाथ जी मंदिर के पास जयपुर का पहला गुरुद्वारा बनाया। इसमें गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज की दसवीं वाणी का हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ होने से इस गुरुद्वारे का देश में विशेष महत्व है। उस समय यहां पुष्कर का कार्तिक पूर्णिमा मेला लगता था। यह जानकारी देते हुए राजापार्क गुरुद्वारा के जनरल सेक्रेटरी डॉ. अमवार सिंह बताते हैं कि राजस्थान के रजवाड़ों ने मुगल शासक के खिलाफ खुलकर सामने न आने के कारण उन्होंने जनशक्ति को संगठित करने का बीड़ा उठाया। लेकिन पुष्कर के पंडे-पुजारियों ने यह कह कर क्षमा मांग ली कि पूजा अर्चना व यजमानों की मंगल कामना करने वाले क्या हथियार उठाएंगे। गुरु गोबिन्द सिंह के भी शुभ आगमन का पंडों की बही में भी उल्लेख मिलता है और पुष्कर में गोबिन्द घाट भी जिसे गुरु भक्त निर्मल साधुओं ने बनाया था। गुरु गोबिन्द सिंह के आगमन की पुष्टि करता है। पुष्कर में गुरु का पड़ाव एक सप्ताह का रहा।

गुरु अपने तीन सौ सिक्ख सरदारों की टुकड़ी के साथ 18 नवम्बर 1706 को नरायना पहुंचे और दादू धाम में संत दादू के पांचवें उत्तराधिकारी संत जैतराम से भेंट की। दोनों संतों ने दादू द्वारे के बाहर पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर संगत के हित की व ज्ञान की बात की। जिस स्थल पर दोनों संतों ने ज्ञान चर्चा की थी उसे सिक्ख इतिहास में गुरु गोबिन्द सिंह का थड़ूरा बताया गया है। इस ही स्थल पर गुरुद्वारा बनाने का प्रयास था, लेकिन दादू पंथियों ने इसे नहीं स्वीकारा। गुरु गोबिन्द चाहते थे कि दादू पंथी आलम स्वयं फक्कड़ साधु भी शस्त्र उठा लें और उनके साथ राष्ट्र में जो अत्याचार व अन्याय हो रहा है का मुकाबला करने में उनके पंथ का साथ दें। दादू पंथी संत जैतराम ने कहा कि "जैतो मारे ईंट डीक, दे ओ शीश झुकाया।" तो गुरु ने उलटकर जवाब दिया कि "ये जो मारे ईंट डीक, पाथर दे ओ जलाय।"

जैतराम के अनुरोध पर गुरु गोबिन्द सिंह ने अपनी सिक्ख सरदारों के बेड़े के साथ भोजन करना स्वीकार तो कर लिया लेकिन उन्होंने कहा कि महाराज हमारे बेड़े में बाज भी है। जो केवल मांस भक्षण ही करता है। इसके करने के बाद ही हम भोजन करेंगे।

जैतराम जी ने कहा महाराज दादू द्वारे में

मांस खाना तो दूर रहा यहां तो इसका नाम तक जुबान पर नहीं आता। जो जुआंर बाजरा हम खाते है। वही इसको भी खिला देंगे। आखिर कोई उपाय न देख गुरु गोबिन्द सिंह ने जुआर बाजरा बाघ के सामने रखवा दिया और बाघ को कहा आज यही खा ले। बाघ ने जुआर बाजरा चुग लिया।

गुरु गोबिन्द सिंह कहा करते थे 'चिड़िया से मैं बाज लड़ाऊँ।' नारायणा आते जाते गुरु गोबिन्द सिंह नारायणा के पास सावरदा गांव भी कुछ देर रुके। यहाँ के ठाकुर से मिले थे।

जहाँ गुरु भक्त एक अनामधारी बंजारा संत गुरु की याद में भव्य गुरुद्वारा बनवा रहा है। यद्यपि सावरदा में गुरु प्रवास के कोई पुष्टि प्रमाण तो नहीं मिलते लेकिन गुरु ग्रन्थ साहिब की हस्त लिखित बीड़ यहां के ठाकुर के पास होना ही इसकी पुष्टि करता है। नारायणा के दादू द्वारे में भी एक ऐसी ही बीड़ दर्शनार्थ उपलब्ध है जो गुरु गोबिन्द सिंह ने भेंट की थी। लेकिन डॉ. अवतार सिंह का कहना है कि गुरु गोबिन्द सिंह ने अपने हाथ से कोई बीड़ नहीं लिखी थी। एक बीड़ या तो निर्मले साधुओं ने लिखी या बीड़ लेखक बाबा दीपसिंह थे। यह भी ज्ञात हो कि गुरु ग्रन्थ साहिब की बीड़ में छः गुरुओं के साथ तीन तीस भक्तों की वाणी है। उनमें टोंक के धन्नाभगत व मेवाड़ के भगत पीपा की वाणी भी सम्मिलित है। सरदार महेन्द्रसिंह सबरवाल जिन्होंने अपने सहयोगी सरदार हरबंश सिंह के साथ सबसे पहले नारायणा में 11 मार्च 1979 को तेरह (13) बीघा भूमि लेकर निशान साहिब फहराया व एक कमरे में गुरु महाराज का प्रकाश कर ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री चरण कमल साहिब की नींव डाली। जिस नारायणा की पावन भूमि पर दादू के बाद गुरु गोबिन्द सिंह के चरण पड़े थे वहां आज भव्य गुरुद्वारा बन गया है। जिस की गुंबज पर अढ़ाई किलो का स्वर्ण कलश चढ़ाया गया है। और रोजाना देश–विदेश के सैकड़ों श्रद्धालु मत्था टेकने आते है। बातचीत के दौरान सरदार महेन्द्र सिंह सबरवाल ने एक जानकारी और दी कि जयपुर में चाँदियों के रास्ते में रहने वाले सरदार इकलाम सिंह के पास अब तक उपलब्ध एक मात्र स्वर्णाक्षरों में लिखी बीड़ की पांच कौड़ी आज भी उपलब्ध है। जो वे वर्ष में एक बार मकर संक्रान्ति को ही दर्शन हेतु उपलब्ध करवाते है।

जयपुर में कर्नल भवानीसिंह की धर्मपत्नी महारानी पद्मिनी के पास उनके ऐतिहासिक गुरु गोबिन्द सिंह की लाई ऐतिहासिक तलवार जिससे उन्होंने शेर मारा था मौजूद है। यह तलवार गुरु गोबिन्द सिंह ने सिरमौर हिमाचल प्रदेश प्रवास के दौरान यहां के तत्कालीन शासक वैदिनी प्रकाश को भेंट स्वरूप दी थी। जिसे महारानी पद्मिनी अपने माता–पिता (महाराजा सिरमौर) की मृत्यु के बाद जयपुर ले आई। वर्तमान में वह ऐतिहासिक तलवार हर दिन सुबह–शाम राजपरिवार के पूजा गृह में तथा प्रायः जनसाधारण के दर्शनार्थ चन्द्रमहल के प्रीतम निवास में कांच के शोकेस में सुरक्षित रखी जाती है। गुरु गोबिन्द सिंह ने नारायणा से दक्षिण को कूच करते समय स्वामी चैतराम ने बताया कि नांदेड़ (महाराष्ट्र में) माधोदास नाम का अलमस्त, फक्कड़ व मायाविक शक्तियों का सेवक रहता है। वह उसके पास जाने वालों की आवभगत भी खूब करता है। लेकिन रात में मायाविक शक्तियों के प्रभाव से आगुन्तक को उठाकर पटकी देकर अट्टहास करता है। गुरु ने इस विलक्षण साधु से मिलने हेतु वहीं से मानस बनाया व आगे चलकर गुरु से माधोदास प्रभावित हुए। गुरु प्रेरणा से वही माधोदास आगे चलकर बंदा बैरागी हुआ जिसने अन्याय से मुकाबला करने हेतु सैन्य संगठन कर सर हिन्द में मुगलों से लोहा लिया।

नारायणा से कूच करते समय गुरु गोबिन्द सिंह ने दादू की मंढी (छतरी) को तीर से सलामी दी जिसका उनके साथ के सिख सरदारों ने यह कहकर विरोध किया कि आपने ही तो खालसा को फरमान दिया था कि गौर, मढ़ी, मत भूले ना माने। गुरु मतानुसार मढ़, मढ़ी, मसान के आगे सिर झुकाना (सलाम) देने की मनाही है। गुरु ने कहा कि मैंने तो दादू की मढ़ी की तरफ तीर की अणी झुकाकर पंथ की परिपक्वता की परीक्षा ली है। यदि आप इसे अपराध मानते है तो जो चाहे सजा दें। साथ चल रहे खालसा पंथियों ने मढ़ी को तीर से सलाम करने के अपराध में गुरु द्वारा बनाये गये नियम (धार्मिक आचार संहिता) के विरुद्ध माना। अतः उन पर उस वक्त के चलन के रुपये एक सौ पच्चीस की सजा लगाई गई। तभी से जिसका कड़ा प्रसाद बनाकर बांटा गया। कुछ दस्तावेजों में तनखैया राशि पांच सौ रुपया बताई गई। तभी से सिख पंथ में तनखैया घोषित करने की परम्परा चली। जिसके तहत ही पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह व पूर्व केन्द्रीय मंत्री बूटा सिंह को स्वर्ण मंदिर अमृतसर के पंच प्यारों ने धर्म विरुद्ध आचरण के लिए तनखैया घोषित कर बूट पॉलिश की सजा दी थी।

नारायणा से दक्षिण जाते हुए गुरु गोबिन्द सिंह बागोर (भीलवाड़ा) भी रुके यहां के सामंत का आतिथ्य भी स्वीकार किया। बताया गया है कि यहीं गुरु गोबिन्द सिंह जी को औरंगजेब के देहांत की खबर मिली थी। बागोर से ही गुरु ने अपनी नव गठित खालसा सेना को बहादुरशाह की मदद को भेजा था। ऐसा उल्लेख वरिष्ठ पत्रकार सीताराम झालानी ने अपनी पुस्तक राजस्थान वार्षिकी 97 में किया है।

इस प्रकार राजस्थान से गुरु गोबिन्द सिंह का भावनात्मक व क्रियात्मक सम्बन्ध रहा है। यही कारण है कि प्रतिवर्ष हजारों खालसा पंथी नारायणा, पुष्कर सावरदा आदि स्थानों पर आकर अपने को धन्य मानते हैं। पुष्कर का गोबिन्द घाट, नारायणा व सावरदा का गुरुद्वारा तथा चन्द्रमहल में रखी गुरु जी की तलवार उनकी पावन स्मृतियाँ है।

बी–63, हवेली कम्पाउंड,
सेठी कॉलोनी
जयपुर–302004

प्रकाश पर्व 16 जनवरी

मानस की जाति सभै एकी पहचानवी

❒ जसपाल कौर

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म 22 दिसम्बर 1666 को पटना साहिब में माता गुजरी जी की गोद से हुआ। उन्होंने बहुत से युद्ध लड़े और विजयी हुए। गुरु गोविन्द सिंह जी ने 9 वर्ष की आयु में ही दिल्ली में अपने पूज्य पिताजी का बलिदान होते हुए देखा था। कश्मीर के लोगों की धर्म रक्षा के लिए एक संत पुरुष का बलिदान जरूरी था तब आपने अपने पिता से कहा कि ''आपसे बढ़कर दूसरा धर्मात्मा पुरुष कौन है?'' तब गुरु तेग बहादुर ने कश्मीरी पंडितों की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया। दिल्ली में मुगल शासकों ने उनके सम्मुख सभी प्रकार के प्रलोभन एवं भय का प्रदर्शन कर धर्म परिवर्तन के लिए कहा किन्तु उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। तब 11 नवम्बर 1675 ईस्वी को गुरु तेग बहादुर जी को चाँदनी चौक में शहीद कर दिया गया। अबोध आयु में गुरु गोविन्द सिंह जी ने गुरु गद्दी को संभाला। आपने शास्त्र शिक्षा के साथ-साथ शस्त्र शिक्षा को अपने जीवन में पूर्णतः समन्वित किया।

बचपन से ही गुरु गोविन्द सिंह जी संस्कृत, हिन्दी, पंजाबी, फारसी और अरबी भाषाओं को सीखने में रुचि लेते थे। निशानेबाजी और तीरंदाजी उन्हें सबसे ज्यादा प्रिय थी। पिता की शहादत के पश्चात गोविन्द सिंह जी ने धर्म-क्रांति लाने का निश्चय किया। उन्होंने मुगल साम्राज्य के साथ सशस्त्र संघर्ष करने की योजना बनाई। उनके अनुयायी भारत, तिब्बत, अफगानिस्तान, मध्य एशिया आदि देशों में फैलकर धर्म का प्रचार करने लगे। गुरु गोविन्द सिंह जी क्रांतिकारी विचारों के धनी थे। भारतीयों में जोश भरने के लिए उन्होंने कहा था-

''चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊँ
सवा लाख से एक लड़ाऊँ
तभी गोविन्द सिंह नाम कहाऊँ।'

गुरुजी पूर्णतः प्रजातंत्रात्मक थे। इसीलिए उन्होंने सिक्खों के लिये कोई उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया बल्कि धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मसलों के हल के लिए 'गुरु ग्रंथ साहिब जी' की हजूरी में हल ढूंढ़ने पर बल दिया। आपने गुरु शिष्य परम्परा के बारे में कहा कि- गुरु को छात्रों में संस्कार सृजन करने के लिए पहले से ही रूपरेखा तैयार करते रहना चाहिए और एक निर्धारित रूपरेखा के अनुसार ही अपने शिष्यों को शिक्षा देकर शिष्यों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना चाहिए जैसा कि गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने शिष्यों को अमृतपान करवाकर पांच प्रकार (केश, कड़ा, कंघा, कृपाण, कच्छा) धारण करवाकर एक अलग पहचान दी और विभिन्न जातियों से आये हुए शिष्यों को 'पंज-पियारा' बनवाकर एक ही बाट्टे से अमृतपान करवाकर जाति-पाति के भेद को मिटा दिया। आज के शिक्षकों को भी इससे प्रेरणा लेनी चाहिए कि वे कक्षा में सभी बालक-बालिकाओं के साथ में बिना किसी जातिगत भेद के समानता का व्यवहार करें। उनमें शिक्षा की ऐसी अलख जगायें कि उनका जीवन आदर्श बन जाये। गुरुजी ने शिष्यों को अमृतपान कराकर स्वयं भी उसी बाट्टे से अमृतपान किया यह भी एक आदर्श है कि हम जो व्यवहार दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं, वही हम स्वयं भी दूसरों से करें। गुरु गोविन्दसिंह जी ने अपने शिष्यों को नैतिक गुणों से लबरेज किया उनमें दया, निडरता, साहस जुटाकर बुराइयों का डटकर मुकाबला करने के लिए प्रेरित किया। आज हमें भी अपने विद्यालय के बालक-बालिकाओं में नैतिक गुणों को संचारित करने की आवश्यकता है जिससे कि वे भविष्य में आने वाली कठिनाइयों का डटकर मुकाबला कर सकें, अपने साथी मित्रों के साथ प्रेमवत् व्यवहार करें, किसी से डरें नहीं। अपने गुरुओं की आज्ञा का पालन करें, गुरु द्वारा बताये गए मार्ग का अनुसरण कर अपने जीवन को सफल बनाएँ। अपने साथ-साथ अपने सहपाठी मित्रों का भी ध्यान रखें, अपनी इच्छाओं को कुंठित नहीं होने दें, बल्कि उन इच्छाओं को पूरा करने के लिए प्रयास भी करें। छात्र-छात्राओं के मनोबल को ऊँचा उठा सकें। जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझ सकें और ईर्ष्या, द्वैष, भय, अहंकार से दूर रहकर अपने साथ-साथ अपने साथी मित्रों को भी सफलता हेतु प्रेरित कर सकें इससे जहाँ एक ओर छात्र-छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो सकेगा वहीं दूसरी ओर जीवन से विमुख होकर हतोत्साहित होकर मौत को गले लगाने वाले छात्र-छात्राओं द्वारा आत्मदाह करने की प्रवृत्ति पर भी रोक लग सकेगी।

गुरु गोविन्द सिंह जी एक कवि, विचारक, साहित्यकार, संत और सिपाही थे। आपने उत्कृष्ट शैली में साहित्य का सृजन किया, उसी साहित्य को ओजपूर्ण शैली में अपने शिष्यों को शिक्षा दी। आज का शिक्षक भी अच्छा साहित्य पढ़कर बच्चों को भी साहित्य पढ़ने हेतु प्रेरित करे। जिससे कि पुस्तकालय का सही रूप में उपयोग संभव हो सके। अध्यापक बालकों के अनुरूप प्रसंगों को स्वयं रचे और उन्हें कथा, कहानी, संस्मरण अथवा उदाहरण के रूप में छात्राओं को बताएं। ऐसा करने से अध्यापकों में स्वाध्याय की रुचि बढ़ेगी, ज्ञानवर्द्धन होगा। ज्ञान तथा संदर्भ पूर्ण होने से अध्यापक विद्यार्थियों के लिए अधिकाधिक आकर्षण और श्रद्धा के पात्र बन जाएंगे, जिससे विद्यार्थियों का अपने गुरुओं के प्रति विश्वास बढ़ेगा और वे उनकी बात भावनापूर्वक मानने लगेंगे। इस प्रकार पुस्तकीय अथवा मौखिक विचार साहित्य पढ़ाने से छात्रों में भी ज्ञान की वृद्धि होगी। जिससे उनके चरित्र निर्माण में बहुत सहायता मिलेगी। हम सभी शिक्षक बन्धु भी गुरुजी से प्रेरणा लें। महान त्याग और स्वयं को न्यौछावर कर देने का जज्बा, अन्याय के खिलाफ जबरदस्त टक्कर लेने का साहस, सम्पूर्ण मानव जाति के साथ बिना किसी भेदभाव के अटूट प्रेम का रिश्ता, ''आपे गुरु और आपे चेला'' होने का कमाल, अकाल पुरुख वाहे गुरु पर अटूट विश्वास और श्रद्धा, गुरुजी के व्यक्तित्व की ऐसी विशेषताएं हैं जो उन्हें संत और सिपाही कहलवाती है। हम देखते हैं कि संसार में अक्सर लड़ाइयों का कारण जर, जोरू और जमीन ही होता है। लेकिन गुरु गोविन्द सिंह जी के द्वारा लड़े गए युद्ध जर, जोरू या जमीन के लिए नहीं बल्कि इंसानियत और आत्मरक्षा के लिए लड़े गए। कोई तन दान करता है, कोई मन दान करता है, कोई धन दान करता है किन्तु गोविन्द सिंह जी ने अपना सर्वस्व ही दान कर दिया। गुरुजी ने अपने पूज्य पिताजी की कुर्बानी दी, चारों जिगर के टुकड़ों को देश-कौम पर कुर्बान कर दिया। पूज्य माताजी, समस्त सम्पत्ति, तमाम साहित्य, प्राणों से प्यारे अपने शिष्य, अपना सर्वस्व भारत माता की आजादी के लिए कुर्बान कर दिया। नम्रतापूर्वक अपने उद्गारों को प्रकट करते हुए कहा-''मेरा मुझ में किछु नहीं, जो किछु है सो तेरा..... तेरा तुझको सौंप के क्या लागे है मेरा।''

ऐसे पूज्य गुरुदेव को उनके प्रकाश-पर्व पर कोटि-कोटि नमन।

अध्यापिका
रा.उ.प्रा.वि. सरजोली, जमवारामगढ़-303109
मो. 9413418004

विवेकानन्द जयंती

निर्भयता

□ रूपा टेलर

संसार में यदि किसी एक धर्म की शिक्षा देनी हो तो वह है–निर्भयता

–स्वामी विवेकानंद

यदि हमें चारों वेदों, 18 पुराणों एवं समस्त उपनिषदों, रामायण, महाभारत, गीता आदि सर्वश्रेष्ठ भारतीय साहित्य और दर्शन सभी का निचोड़ निकालें और उसे एक शब्द में कहना चाहें तो वह शब्द होगा– निर्भयता। निर्भयता मनुष्य की दुर्लभ विभूति है।

निर्भयता नामक सिक्के का दूसरा पहलू है साहस। आदिकाल से आज तक प्रकृति के गोपनीय रहस्यों, खजानों का हमें ज्ञान हो पाया है वह मनुष्यों की इन विभूतियों, साहस और निर्भयता का ही जादू है। सागर की अटल, गहराइयों, आकाश की गगनचुंबी ऊँचाइयों, धरती की गहन अंधेरी–खानों, नक्षत्रों की अनन्त दूरियों को मानव की अदम्य इच्छा शक्ति, निर्भयता और साहस ने ही सहज, सुलभ एवं गम्य बनाया है।

निर्भयता का संस्कार बालकों को बचपन में ही दे देना अभिभावकों, गुरुजनों का दायित्व है; जो मातायें अपनी थोड़ी सी परेशानी से बचने के लिए अपने बच्चों को डराती है वह अपने बच्चों का बहुत बड़ा अहित करती है। बचपन से ही बालकों को भरत, राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम, हनुमान आदि महापुरुषों के कर्तव्य सम्बन्धी कहानियाँ सुनाकर निर्भयता का संस्कार देना चाहिए।

भय का एक बहुत बड़ा कारण है हमारी आदतें, व्यवहार तथा हमारा संस्कार। बचपन में ही बालकों को झूठ बोलने की आदत पड़ जाती है। जो अन्ततः अनेक बुराइयों की जड़ बनकर हमारे हृदय को दुर्बल बना देता है। लालच या स्वार्थ भी हमें झूठ बोलने या अनैतिक कार्य करने के लिए विवश करते हैं। इस व्यक्तिगत और सामाजिक बुराई को नियंत्रित करने के लिए महात्मा गाँधी ने बहुत ही व्यावहारिक और सच्ची बात बताई है। वह कहते हैं कि ''पेट भर कर खाओ, पेटी भर कर मत रखो।'' यानी सादगी, मितव्ययता का जीवन अपनाओ तो बहुत सारे संकटों से स्वतः ही बच जाओगे। भ्रष्टाचार, कालाबाजारी अनेक बुराइयाँ समाज को घुन की तरह खोखला कर रही है।

भारत में निर्भयता इस बात पर निर्भर है कि शरीर चाहे नष्ट हो जाये, आत्मा अमर है, उसका कभी विनाश नहीं होता। इसलिए बड़े से बड़ा त्याग और बलिदान का विचार बड़ा साहस प्रदान करता है।

साहस दो प्रकार का होता है। एक मौत को भी ललकारते हुए आत्म बलिदान दे देना और दूसरा अपने को मैं आत्मा हूँ शरीर नहीं, ऐसा विश्वास करना।

सिकन्दर महान् विश्व विजय निमित्त जब भारत के लिए निकला तो उसके गुरु ने कहा– ''भारत से कोई सत्य ज्ञानी महात्मा को सम्मानपूर्वक यूनान लाना। उससे तुम्हारा और तुम्हारे देश दोनों का कल्याण होगा।'' सिकन्दर भारत विजय न तो कर सका पर एक महात्मा से उसकी भेंट अवश्य हो गई। उसने उस महापुरुष से यूनान पधारने की विनती की किन्तु साधु ने उसे अस्वीकार कर दिया। सिकन्दर बोला ''मैं असीम पृथ्वी का सम्राट हूँ और आपको अनन्त ऐश्वर्य और पद–मर्यादा दूंगा।'' सन्त बोले– सम्पदा, पद–मर्यादा आदि किसी चीज की मुझे इच्छा नहीं है। मैं इस वन में बड़े आनन्द में हूँ। तब सिकन्दर ने भय दिखाते हुए कहा– ''यदि आप मेरे साथ नहीं चलेंगे तो मैं आपको मार डालूँगा।'' इस पर साधु ने अट्टहास कर हँसे और बोले ''राजन्! आज तुमने अपने जीवन में सबसे मूर्खतापूर्ण बात कही है। तुम्हारी क्या हस्ती है जो मुझे मारो। जिसे सूर्य सुखा नहीं सकता, आग जला नहीं सकती, कोई शस्त्र जिसे काट नहीं सकता। मैं वह आत्मा हूँ जन्म रहित और अविनाशी।'' यह निर्भयता, यह आत्म विश्वास– यह साहस किसमें हो सकता है।

साहस और निर्भयता अपने देशवासियों में देखना चाहते थे। वे ऐसे युवाओं से संसार को बदल देने का संकल्प अपने मन में संजोये हुए थे। काश वे दीर्घायु होते.....।

प्रधानाचार्य
रा.बा.उ.मा.वि., देलवाड़ा (राजसमंद)
मो. 9414623619

एक व्यक्ति समुद्र के किनारे लहरों के साथ बहकर आती सीपों, मछलियों को उठा–उठाकर वापस गहरे पानी में फेंक रहा था। उसे ऐसा करते हुए एक व्यक्ति ने देखा तो टोक कर कहा–''तुम्हारे ऐसा करने से क्या फरक पड़ेगा? कल दूसरे हजारों प्राणी यहाँ आकर मर जायेंगे।'' वह व्यक्ति बोला–''और किसी पर फरक न भी पड़े, पर जिस एक प्राणी का जीवन ऐसा करने से बचेगा, उसके जीवन पर तो निश्चित रूप से फरक पड़ेगा। मैं यह कार्य उस छोटे से फरक के लिए कर रहा हूँ।'' सत्य बात है कि छोटे–छोटे शुभकार्य ही बड़े प्रभावों को जन्म देते हैं।

पुण्यतिथि विशेष

बापू का स्वप्न, संकल्प और आज

□ डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल

हे धरा के अमर सुत! तुमको अशेष प्रणाम।
जीवन के अजस्र प्रणाम।
मानव के अनन्त प्रणाम।
पा तुझे यह स्वर्ग की धात्री प्रसन्न प्रकाम।
मानव-वर! असंख्य प्रणाम।

—स्व. महादेवी वर्मा

निःसंदेह बापू युगपुरुष थे, युग सृष्टा थे जिनके इंगित मात्र पर कोटि-कोटि चरण अनुगत हो उठते थे....। युग बोध कराने वाला महाप्रणेता-युगपुरुष वही बना है जो त्याग की एक-एक सीढ़ी पर चढ़ते-चढ़ते उच्चतम शिखर पर पहुँच गया है। जो जगत को कुछ देने की आकांक्षा से बढ़ा वह देश और काल की सीमा को लाँघकर सर्वदेशीय और सर्वकालिक बन गया, युग-युग का चिरंतन सत्य बन गया और ऐसा ही विश्वासलय भावनाओं से ओत-प्रोत व्यक्तित्व था हमारे बापू का।

ऐसे महापुरुष के विषय में किसी एक पक्ष को लेकर चिंतन के आयाम को दिशा इंगित नहीं की जा सकती क्योंकि उनकी राजनीति, धर्मनीति, समाजनीति-सभी का मूल स्रोत आध्यात्मिक है। इसी अध्यात्म की कसौटी पर कसे गए 'सत्य'-बापू की वर्तमान भारत को शाश्वत देन है।

युग प्रणेता बापू एक सच्चे कर्मयोगी थे, व्यावहारिकता उनकी निजी विशेषता थी। उनके निश्चित सिद्धांत थे जिन पर वे आजीवन दृढ़ रहे और जिनके प्रचार के लिए उन्होंने अपने जीवन को उत्सर्ग कर दिया। सत्य और अहिंसा जो हिन्दू-संस्कृति के आदिकाल से ही आधार स्तम्भ रहे हैं। बापू के प्रतिपाद्य विषय हैं। उन्होंने धर्म को भी एक विशेष दृष्टि से देखा है। उनके अनुसार धर्म एक-जीवन पद्धति है।

गीता में स्वयं भगवान ने कहा है-

"सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज"।

हमारी प्राचीन संस्कृति ने धर्म को कर्तव्य की भूमि में देखा और बापू ने भी धर्म को जीवन की समस्त क्रिया-कलापों का केन्द्र माना है। उन्होंने स्वयं कहा है- "धर्म से मेरा तात्पर्य किसी धर्म विशेष या परम्परागत धर्म से नहीं है। मेरा तात्पर्य उस धर्म से है जो सभी धर्मों का आधार है जिसके द्वारा हमें ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। विश्वास कोई ऐसा कोमल फूल नहीं है जो हल्के से तूफान में कुम्हला जाए। विश्वास हिमालय के समान अचल है। कोई भी तूफान हिमालय को उसकी जगह से हटा नहीं सकता। मैं चाहता हूँ कि आप में से प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर और धर्म के प्रति यह विश्वास अपने अन्दर पैदा करें" (महात्मा गाँधी का संदेश)।

बापू को भारतीय सभ्यता और संस्कृति से प्रगाढ़ लगाव था। इसकी चिरन्तनता को बापू ने स्वयं अपने शब्दों में इस प्रकार अभिव्यक्त किया है- "मेरा यह विश्वास है कि हिन्दुस्तान में जो सभ्यता विकसित हुई है, संसार की कोई सभ्यता उससे बाजी नहीं मार सकती। हमारे पूर्वज जो बीज बो गए हैं उनकी बराबरी कोई चीज नहीं कर सकती।.... सभ्यता चाल चलन के उस ढंग को कहते हैं जो मनुष्य को उसका कर्तव्य पथ दिखलाता है। कर्तव्य पालन और सदाचारिता दोनों बातें एक ही हैं। सभ्यता का अर्थ सौजन्य या नेक चाल चलन है।

सभ्यता की व्याख्या यदि ठीक हो तो अनेक ग्रंथकारों ने जैसा कहा है, हिन्दुस्तान को किसी से कुछ सीखना नहीं है.... हमारे पूर्वजों ने हमारे विषय भोग की मर्यादा बांध दी। उन्होंने देखा की सुख एक मानसिक अवस्था है.... संसार के किसी हिस्से में और किसी सभ्यता के रहते मनुष्य कभी पूर्णता को प्राप्त नहीं हुआ।

भारतीय सभ्यता की प्रवृत्ति नीतिमत्ता (सदाचारिता) बढ़ाने की ओर है और पश्चिमी सभ्यता की प्रवृत्ति दुराचार फैलाने की ओर। पश्चिमी सभ्यता ईश्वरहीन है और भारतीय सभ्यता की नींव ही ईश्वर है। यह बात जानकर और उस पर विश्वास रखकर प्रत्येक भारत भक्त का यह कर्तव्य है जैसे नन्हा बालक अपनी माँ की गोद से अलग नहीं होता वैसे ही हम भी अपनी प्राचीन आर्य सभ्यता की गोद से अलग न हों"।

(महात्मा गाँधी के सिद्धांत भारतन कु.9 वि.सं. 1977)

गाँधीजी देश के करोड़ों लोगों की गरीबी और दुर्दशा को देखकर व्यथित थे और उन्होंने अपनी सारी शक्ति उनकी अवस्था सुधारने में लगा दी।

बापू का निश्चित मत था कि भारत शहरों में नहीं सात लाख से भी अधिक गाँवों में बसता है। भारतीय किसानों में उनकी अडिग आस्था थी। वे उन्हें धरती के सपूत और लोकतंत्र के आधार स्तम्भ मानते थे। उन्होंने स्पष्ट देखा कि शहरों में जो धन-वैभव है वह गरीब ग्रामवासियों के शोषण का परिणाम है। बापू के शब्दों में -"मैं खुद भी ग्रामीण हूँ। इसलिए मैं गाँवों की दशा से भलीभाँति परिचित हूँ। मैं ग्राम अर्थशास्त्र को जानता हूँ। आप से सच कहता हूँ। ऊपरवालों का भार नीचे वालों को कुचल रहा है। सबसे जरूरी बात यही है कि उनके कन्धों से अपना यह भार उतार लीजिए।"

बापू के अनुसार लोकतंत्र वह कला और विज्ञान है जिसके जरिए समाज के सभी विभिन्न वर्ग के लोगों के समस्त भौतिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक साधनों को सबकी भलाई के लिए लगाया जाता है। लोकतंत्र के इस युग में यह आवश्यक है कि लक्ष्यों की पूर्ति जनता के सामूहिक प्रयास द्वारा की जाए। जिस काम को लाखों-करोड़ों लोग मिलकर कर सकते हैं उस काम में एक अद्भुत शक्ति आ जाती है। लोकतंत्र में बचपन के लिए कोई स्थान नहीं है। "यदि हम यह सोचने लगें कि अब तो स्वराज्य मिल गया और अब हम निश्चिंत होकर बैठ सकते हैं तो हम देश का सबसे बड़ा नुकसान करेंगे"।

सामूहिक स्वतंत्रता की पहली आवश्यकता है आत्म-अनुशासन। सच्ची स्वतंत्रता के फल का उपभोग करने के लिए हमें आत्मानुशासन के मर्म को समझना चाहिए। आत्मानुशासन सामूहिक स्वतंत्रता की पहली शर्त है। अनुशासन, सहिष्णुता और एक-दूसरे के प्रति सम्मान के भाव के बिना लोकतांत्रिक जीवन पद्धति असम्भव है। "सबसे सच्ची और

पूर्ण स्वतंत्रता वही है जिसमें सबसे अधिक अनुशासन और विनम्रता है। जन्मजात लोकतंत्रवादी जन्मजात अनुशासनवादी भी होता है।''

वर्तमान संदर्भ में राष्ट्र को बापू के इस दर्शन, चिंतन और विचारों की नितान्त आवश्यकता है।

आज देश विषमता के दौर से गुजर रहा है... आज बापू के भारत में चहुँओर भ्रष्टाचार, महंगाई, दुर्व्यवस्था, कालाबाजारी, घूसखोरी और न जाने क्या-क्या.... सभी सर्वनाशी, अमंगलकारी विभीषिकाएं तुमुल नर्तन कर रही हैं... आज आम आदमी मौन ही नहीं किंकर्तव्यविमूढ़ है, स्तब्ध है क्या करे? कैसे करे? परिवार बच्चों की शिक्षा-दीक्षा और भरण-पोषण की स्थिति से कैसे उबरे? आम आदमी का शोषण ऊपर से हो रहा है। यह कैसा जनतंत्र है जो जन पर हावी है- तथाकथित कर्णधार जिन्हें जनता चुनकर भेजती है इतने अर्थलौलुप, अनुशासनहीन, अनैतिक, राष्ट्रधन, समय व स्थितियों का दुरुपयोग इस प्रकार हो रहा है कि लिखने को कोई शब्द नहीं बच रहा....

क्या भगत, आजाद, बोस, बाल-पाल-लाल, अरविंद घोष, गोखले, टैगोर, महामना मालवीय और बापू के सपनों का यही भारत है? क्या इसी संकल्प को लेकर आजादी की लड़ाई लड़ी गई थी?

याद आता है सन् 1947 की 15 अगस्त का वह स्वर्णिम दिन जब हमें कक्षा तीसरी से कक्षा पाँचवी में आजादी के उपलक्ष्य में चढ़ा दिया गया था। बूढ़े दादा-दादी जो 1942 की स्वाधीनता की लड़ाई में कारागार में बंदी रहे- यातना सही... केवल एक स्वप्न था कि हमारा देश स्वाधीन हो, आने वाली पीढ़ी मनसा-वाचा कर्मणा स्वस्थ, स्वतन्त्र और चैतन्य हो तथा पराधीनता की शोषण कारा से निजात मिले।....

स्वाधीन हुए। घी के दीपक जलाए। बापू मसीहा बन आए। उनकी एक मुस्कान इस जिजीविषा को परितृप्त कर देती थी कि स्वावलंबी होंगे हर क्षेत्र में। विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार करेंगे।

पर जब वर्तमान पर दृष्टि जाती है तो एक कुंठा-निराशा, एक हताशा मानस में छा जाती है... क्या हो गया है इस देश को? आजाद भारत 68 वर्ष का हो गया है-आज भी...

''रोटी को टुकुर-टुकुर सा देखता
भारत के भविष्य का कर्णधार है
ये कैसा सुन्दर स्वराज्य का उपहास है।।

नैतिकता की बात करने वाला 'सिर-फिरा' या 'आउट ऑफ डेट' समझा जाता है। भ्रष्टाचार जीवन की हर विधा में घुस अट्टाहास कर रहा है और आम जन महंगाई-भुखमरी के दुःख दारिद्रय की भयंकर पीड़ा से कराह रहा है। क्या यही बापू का स्वराज्य-रामराज्य है?

काश! यदि बापू आज होते....

यह विचार सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों का सन्तुलन विवेचित करना चाहता है-

सर्वप्रथम तो यदि बापू होते तो ऐसा कुछ भी नहीं घटता। बापू की सत्य, अहिंसा और प्रेम की अमोघ-शक्ति जन-जन को आन्दोलित कर सद् की ओर प्रेरित करती। स्वच्छ, सरल और निश्छल धर्मप्राण राजधर्म मानवता का पोषक होता। मनुज-मनुज का सहयोगी होता। एकत्व होता। बिखराव नहीं होता। मर्यादाओं का निर्वाह होता। अनैतिक स्थितियों का तिरोभाव होता।

आज देश के निर्माण की दृष्टि से भी बापू के नव-निर्माण का युद्ध भी अपने ढंग का अनूठा होता। फलस्वरूप देश प्रति चरण आगे बढ़ता और फिर विश्व में एक महान उदाहरण प्रस्तुत करता।

वर्तमान में अभावों का दैत्य जन-जीवन को रौंदे जा रहा है वह कुछ नहीं होता।

दूषित राजनीति जो मात्र-कुर्सी युद्ध का लक्ष्य बन गई है वह नहीं होती। राजनीति त्याग से अभिसिंचित होती। देश का अणु-अणु सेवा, प्रेम और त्याग के संवेदन से मुखरित हो उठता।

शिक्षा का स्वरूप बदला हुआ होता और उसमें चरित्र और स्वावलंबन का समन्वय होता। राष्ट्रीय चरित्र की जो हत्या यत्र-तत्र-सर्वत्र दृष्टिगत होती है। वह बापू कदापि न होने देते।

आइये आप और हम सब मिलकर समग्र विश्व जिस वाणी का लोहा मानते उस अवतारी महामानव की सत्य, प्रेम और अहिंसा की अमोघ शक्ति को आत्मसात करते हुए जन-जन को जगाएं। देश बनाएं।

सेवानिवृत्त सहायक निदेशक
एस.आइ.इ.आर.टी., उदयपुर
मो. 9351549041

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से मिलने उनका एक मित्र पहुँचा। उसने देखा कि राष्ट्रपति लिंकन स्वयं अपने जूतों की पॉलिश कर रहे हैं। इतने बड़े देश के राष्ट्रपति को स्वयं अपने जूतों की पॉलिश करते देख उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। अपने मन में उठती जिज्ञासा को वह रोक न सका और उसने राष्ट्रपति लिंकन से पूछा- ''मित्र! तुम अपने जूते क्या स्वयं पॉलिश करते हो? तुम तो दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के राष्ट्रपति हो-ये काम करने वाले तो तुम्हें सैकड़ों मिल जाएँगे।''

राष्ट्रपति लिंकन ने उत्तर दिया-''मित्र! अपने जूते दूसरों से पॉलिश करवाने के लिए मैं इस देश का राष्ट्रपति नहीं बना हूँ। यदि मैं स्वयं अपने कार्यों को करने के लिए दूसरों पर आश्रित रहूँगा तो समाज को क्या दिशा और देशवासियों को क्या संदेश दे पाऊँगा? परिश्रम और स्वावलंबन से ही देश का उत्कर्ष होता है।'' लिंकन की बातें सुनकर उनके मित्र का हृदय गौरव से भर उठा कि उनके देश का राष्ट्रपति कितनी ऊँची सोच और कितने विशाल हृदय वाला है। सत्य यही है कि मनुष्य दूसरों पर आधिपत्य दिखाने से नहीं, वरन अपने गुणों को श्रेष्ठ बनाने से महान बनता है।

सुभाष जयंती विशेष

सुभाष की भारतीयता केन्द्रित क्रांतिधर्मिता

❑ रमेश कुमार शर्मा

वर्ष 1991 में पन्द्रह माह पुरानी नवीं लोकसभा भंग होने के उपरान्त राष्ट्रपति आर. वैंकटरमण द्वारा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर को कार्यवाहक प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करते रहने हेतु कहा गया। इसी वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की श्रीपेरम्बुदुर में 21 मई को बम विस्फोट में हत्या हुई। उन्हें उनकी मृत्यु के 28 दिन पश्चात 17 जून को मरणोपरान्त 'भारत रत्न' सम्मान प्रदान किया गया। 21जून को पी.वी. नरसिंहराव देश के प्रधानमंत्री बने। अगले वर्ष 1992 में 25 जुलाई को डा.शंकरदयाल शर्मा देश के राष्ट्रपति बने। संभवतः इन्हीं दिनों में देश की आजादी के महानायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को 'भारत रत्न' से सम्मानित करने की घोषणा की गई। परन्तु बाद में सरकार को नेताजी को सम्मानित करने का निर्णय किन्हीं अपुष्ट कारणों से वापस लेना पड़ा।

सम्मान की पृष्ठभूमि : देशभक्त सुभाष में वह विशेषता थी जिसके कारण जनता को ही नहीं, ब्रिटिश शासन को भी लगता था कि वे लोकमान्य तिलक के 'स्वराज्य' का स्वप्न साकार कर सकते हैं। लोकमान्य तिलक ने कभी कहा था कि यदि देश के पचास प्रतिशत व्यक्ति भी तन–मन–धन से देश के स्वराज्य के लिए आगे बढ़ जायें तो वह (स्वयं तिलक) क्रान्ति का ध्वज लेकर सबसे आगे खड़े होने के लिए तैयार हैं। 1857 के स्वातंत्र्य संग्राम में यदि लाल–बाल–पाल जैसा केन्द्रीय नेतृत्व होता तो ब्रिटिश शासन की भारत से तभी विदाई हो जाती, यह तथ्य चतुर अंग्रेजों से छिपा नहीं था। अंग्रेज यह भी भली भाँति जानते थे कि भारतीय जनमानस क्रान्ति की लपटों से सुलग रहा है। श्याम जी कृष्ण वर्मा, मैडम कामा, वीर सावरकर, भाई परमानन्द, सरदार अजीत सिंह, रासबिहारी बोस, लाला हरदयाल, राजा महेन्द्र प्रताप, बारीन्द्र घोष, पृथ्वी सिंह आजाद, पं रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त, सुखदेव, राजगुरु, अशफाक उल्लाह खान, उधम सिंह .... अनगिनत क्रान्तिकारियों के नाम इतिहास के साक्ष्य बन कर भारतवासियों के हृदयों को उद्वेलित कर रहे थे। 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा प्रान्त में जन्मे सुभाष चन्द्र बोस के हृदय में भी क्रान्तिबीज अंकुरित हुआ। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के कालखंड में जर्मनी जाकर वहाँ भारतीय युद्धबंदियों को मुक्त कराया और उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित करते हुए तीस हजार सैनिकों की अनुशासित सेना, आजाद हिन्द फौज की स्थापना की। आजाद हिन्द फौज ने पूर्वोत्तर भारत से ब्रिटिश शासन को समूल उखाड़ते हुए बर्मा में रंगून तक विजय ध्वजा फहराई। आजादी के दीवानों की यह सेना जब रंगून से दिल्ली की ओर कूच कर रही थी, तभी अमेरिका ने छल से जापान के दो विख्यात सामरिक महत्व के औद्योगिक नगरों हिरोशिमा एवं नागासाकी पर अणुबम गिरा दिये। यद्यपि अणुबम का आविष्कार जर्मनी में, वैज्ञानिक ओटो हान द्वारा 1930 के दशक के अंतिम वर्षों में हुआ था तथापि जर्मनी के शासक हिटलर ने अणुबम के उत्तर में अणुबम का प्रयोग नहीं करने का नैतिक साहस दिखाते हुए 1945 में कथित पराजय स्वीकार की। उल्लेखनीय है कि तानाशाह कहे जाने वाले जर्मनी के नाजी हिटलर, इटली के फासिस्ट मुसोलिनी और जापान के तोजो का विश्वयुद्ध में अणुबम का उपयोग नहीं करने का नैतिक सोच भी रूस ब्रिटेन–अमेरिका प्रेरित बुद्धिजीवियों को सहिष्णुतापूर्ण नहीं लगा। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस तो हिटलर और तोजो से इसलिए मिले थे कि विश्वयुद्ध में ब्रिटिश सत्ता द्वारा झोंके गये भारतीय सैनिक नाजी सेना से लोहा लेते हुए मारे जा रहे थे और बहुत से जर्मनी के कारागारों में बन्दी का जीवन व्यतीत कर रहे थे जिन्हें छुड़ाकर देश की आजादी के लिए ब्रिटिश शासन के विरुद्ध युद्ध के मैदान में उतारना परम राष्ट्रहित में था। परन्तु रूस–ब्रिटेन–अमेरिका प्रेरित बुद्धिजीवी सुभाष बाबू को इसलिए असहिष्णु मानते रहे हैं कि उन्होंने हिटलर और तोजो से मेल–मिलाप कर 'आजाद हिन्द फौज' का गठन किया।

भारतीयता केन्द्रित क्रान्तिधर्मिता : रूस–ब्रिटेन–अमेरिका प्रेरित बुद्धिजीवियों द्वारा नेताजी सुभाष को असहिष्णु मानने का एक कारण उनकी भारतीयता केन्द्रित क्रान्तिधर्मिता भी प्रतीत होता है। क्रान्तिकारी जीवन में त्याग की अवधारणा उन्होंने उपनिषद् से उद्धृत की। मैत्रेयी, लोपामुद्रा आदि प्राचीन भारतीय विदुषियों के संदर्भ देते हुए वे बताते थे कि "हमारे देश में स्त्रियाँ शिक्षित हुआ करती थीं; केवल पराधीनता ही स्त्री–अशिक्षा और पर्दाप्रथा का कारण है।" उन्होंने शिक्षा का मूलमंत्र स्वामी विवेकानन्द से ग्रहण करते हुए कहा, "विदेशी दासता से भारत को मुक्त कराने के लिए संकल्पित चरित्रवान युवा शक्ति का निर्माण ही शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य है।" राष्ट्र की अवधारणा रेखांकित करते हुए सुभाष बाबू महर्षि अरविन्द को उद्धृत करते थे, "यह देश किसलिए है? हमारी मातृभूमि क्या है? यह मात्र कलाकृति (मानचित्र) नहीं है, बल्कि (हिन्दुस्थान या भारत या हिन्द उच्चारण, लेखन मात्र) भी नहीं है, मस्तिष्क की कल्पना भी नहीं है। यह देशवासियों की शक्ति की 38 करोड़ इकाइयों से संगठित हुई महाशक्ति है,

महिषासुरमर्दिनी भवानी के समान, जिससे हमारा राष्ट्र बनता है। भारत राष्ट्र दिव्य माता है – भारत माता।" सुभाष बाबू कहते थे कि समस्त देशवासियों की शक्ति से संघटित महाशक्ति ही भारत माता है तो फिर देश में अंग्रेजीयत, छुआछूत का रोग कहाँ से आया; यह विदेशी शासकों की 'फूट डालो, राज करो' षड्यंत्र–नीति का ही दुष्परिणाम है। अमेरिका प्रेरित बुद्धिजीवी क्रान्ति का सूत्रपात दो शताब्दियों पूर्व से और मानते आये है तो रूस प्रेरित बुद्धिजीवी 1917 से। ब्रिटेन प्रेरित बुद्धिजीवी तो मैकालेवादी ही रहे है। ऐसे में सुभाष द्वारा क्रांति संदर्भ में भारतीय शिक्षा (विशेषकर स्त्री शिक्षा), समाज रचना और राष्ट्र–अवधारणा का फिर सनातन चित्र खींचना तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की दृष्टि में असहिष्णुता ही था।

सुभाष ने स्वदेशी आर्थिक–औद्योगिक विकास का स्वदेशी मंत्र फूँका। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने स्वदेशी आधार पर देश में आर्थिक–औद्योगिक विकास का रेखाचित्र खींचा। उल्लेखनीय है कि पराधीनता के कालखंड में भारतीय मुद्रा रुपया बहुत सुदृढ़ था (स्वतंत्रता के समय भी एक रुपये का विनिमय एक ब्रिटिश पौंड अथवा दो अमेरिकी डॉलर से होता था; इससे पूर्ववर्ती कालखंडों में रुपया अधिक और अधिक मूल्यवान हुआ करता था)। ऐसा देश के वन–गोचर क्षेत्र आधारित गृह या कुटीर उद्योगों के कारण था। भारत जड़ी, बूटियों, मसालों, फलों, लकड़ी (चंदन एवं सागवान) सूती वस्त्र, दुग्ध उत्पाद विशेषकर घी आदि गृह–कुटीर औद्योगिक उत्पादों का विश्वविख्यात निर्यातक था। अंग्रेजों द्वारा शासित देश भारत की आर्थिक व्यवस्था संपूर्ण विश्व में कहर ढा रही थी; एक परतंत्र देश की आर्थिक स्वतंत्रता अंग्रेजों को खलती थी। इसलिए ब्रिटिश शासन काल में भूमि अधिग्रहण अधिनियम बनाया गया जिसके अनुसार किसी भी निर्माण कार्य के लिए सरकार भूमि अधिगृहीत कर सकती थी। ऐसा अधिनियम बनाकर ब्रिटिश सरकार ने बड़े पैमाने पर पर्वतीय क्षेत्रों पर वनों का विनाश कर वहाँ आवासीय बस्तियाँ बसाते हुए भारतीय जनमानस को एक तरह से वनवासी या पशुपालक का व्यवसाय त्याग कर पर्वतन व्यवसाय से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। हो सकता है कुछ लोगों को खनिकी और पशुपालन के कार्य में कठिनाई और पर्यटन व्यवसाय से जुड़ने में सुगमता प्रतीत होती हो। किन्तु देशवासियों का एक समुदाय ऐसा भी था जो किसी भी कीमत पर खनिकी–पशुपालन व्यवसाय को त्यागने के लिए तैयार नहीं था। जब वनों के वृक्ष कटते थे तो वनवासियों (आदिवासियों) को लगता था, मानो उनके हाथ काटे जा रहे हैं। इसी प्रकार जब गोचर भूमि उजड़ती थी तो पशुपालकों को लगता था कि उनके प्राणप्रिय पशुओं के पेटों पर लातें मारी जा रही हैं। लाल–बाल–पाल के युग में वननीतियों और पशुपालकों की पीड़ा को प्रचण्ड राजनैतिक अभिव्यक्ति प्राप्त हुई जिसे हिन्दुस्थान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी, जिसके प्रमुख चंद्रशेखर आजाद थे, ने और अधिक मुखर बनाया। ब्रिटिश सरकार ने बलात् भूमि अधिगृहीत करने के लिए और भी अधिनियम बनाये जैसे औद्योगिक विवाद अधिनियम और जनसुरक्षा अधिनियम (उद्योगों के आपसी विवाद और जनता को सुरक्षा प्रदान करने के बहाने भूमि हथियाने के कानून)। इन कानूनों के विरोध में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली में बम बरसाये थे। यहाँ यह भी उल्लेखनीय होगा कि भारत में कभी 50 प्रतिशत से भी अधिक सघन वन–गोचर क्षेत्र हुआ करता था जो स्वतंत्रता (1947) के समय घटकर मात्र 22 प्रतिशत रह गया था। (जबकि चायना में आज भी 60 प्रतिशत क्षेत्र सघन वन–गोचर के अंतर्गत है और यूरोप में औसतन 40 प्रतिशत क्षेत्र पर सघन वन–गोचर है)।

नेताजी सुभाष ने लाल–बाल–पाल और हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के स्वदेशी आधारित औद्योगिक विकास के विचार को बल प्रदान किया। उन्होंने अत्याधुनिक तकनीकी का स्वागत किया और साथ ही यह भी कहा कि भारत के पारम्परिक गृह–कुटीर उद्योगों में नवीन तकनीकी के अनुप्रयोग की अपार संभावनाएँ हैं। विज्ञान एवं तकनीकी के नाम पर वन–गोचर ग्राम क्षेत्र का शहरीकरण करना प्राकृतिक ऋतु (पर्यावरण) नियमों के विरुद्ध है, ऐसा नेताजी सुभाष बोस ने दृढ़ विचार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि देश को उच्च तकनीकी की नितान्त आवश्यकता है ताकि विदेशी आक्रमणों से निपटने के लिए अपने ही देश में आधुनिकतम हथियार बनाये जा सकें और प्रत्येक वस्तु भारत में ही बने ताकि देश को आयात न्यूनतम करना पड़े। परन्तु औद्योगिक विकास के नाम पर भी पारम्परिक गृह–कुटीर उद्योगों को ठेस नहीं पहुँचाई जा सकती अपितु तकनीकी अनुप्रयोग स्वदेशी उद्योगों में श्रम के सरलीकरण की दिशा में स्वास्थ्यप्रद वातावरण बनाने में होना चाहिये। भारत खनिकी–पशुपालन–कृषि प्रधान देश है और इन व्यवसायों में देश की स्त्रियाँ भी पूरा हाथ बँटाती हैं। स्त्रियों की समग्र शिक्षा का समर्थन करते हुए नेताजी सुभाष ने कहा था कि उन्हें शारीरिक स्वास्थ्य के वातावरण में श्रेष्ठ तकनीकी एवं औद्योगिक शिक्षा की आवश्यकता है ताकि ये हमारे पारंपरिक खनिकी–पशुपालन कृषि ग्राम्य एवं अन्य गृह–कुटीर उद्योगों, जिन्हें ये सँभालती आई हैं, उनका और अधिक सुचारु संचालन कर सकें। रूस–अमेरिका–ब्रिटेन प्रेरित बुद्धिजीवियों को भारतीय स्वदेशी विचारधारा में असहिष्णुता की गंध आती है। अतः सुभाष को सम्मानित करते समय उनके समग्र व्यक्तित्व का साक्षात् विराट स्वरूप समीक्षा हेतु अपेक्षित है तभी हमें महसूस भी होगा कि आजादी के पश्चात कुछ नेक कार्य करने में हमने अनावश्यक विलम्ब किया है। नेताजी के गुणों का पुण्य स्मरण करके देश के लिए जीने का संकल्प लें। यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

6/194 मुक्ता प्रसाद नगर
बीकानेर (राजस्थान)
दूरभाष:–09636291556

महान वैज्ञानिक

पद्मभूषण डॉ. सत्येंद्र बोस

❒ बजरंग प्रसाद मजेजी

देश में ब्रिटिश शासन के बदलते परिवेश के बाद में जन सामान्य को परोसे गये साहित्य और इतिहास परिवर्तन के कारण यह धारणा बनने लगी कि भारत में आध्यात्मिक चिन्तन तो हुआ, परन्तु विज्ञान के क्षेत्र में प्रकाश की किरण पश्चिम में ही प्रस्फुटित हुई। देश का विद्वज जन भी विश्व के भौतिक विकास का श्रेय विदेशों को देने लग गया। अंग्रेज शासकों ने योजनाबद्ध तरीके से हमारे समाज के प्रति, पूर्वजों के प्रति, महापुरुषों के प्रति, सभ्यता-संस्कृति के प्रति, भारतीय वैज्ञानिकों के प्रति सोच में विकृति ला दी। भारत के सुप्रसिद्ध भौतिक विशेषज्ञ कणाद, गणितज्ञ एवं ज्योतिषविद् नागार्जुन, आयुर्वेदाचार्य चरक, ज्योतिषी एवं गणितज्ञ वराहमिहिर, खगोलविज्ञानी भास्कराचार्य, भौतिकी एवं वनस्पतिशास्त्र में खोज करने वाले जगदीशचन्द्र बसु एवं श्रीनिवास रामानुजम, चन्द्रशेखर वेंकटरमन, बीरबल साहनी, मेघनाद साहा, डॉ. होमी जहांगीर भाभा, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे अनेकों नामचीन एवं अनवरत अनुसंधानिक वैज्ञानिकों की श्रृंखला में डॉ. सत्येंद्रनाथ बोस का नाम भी सम्मिलित है। कलकत्ता में जन्मे प्रो. सत्येंद्रनाथ बोस ने भौतिक शास्त्र एवं गणित के मेधावी शिक्षक के रूप में देश का नाम रोशन किया है।

जीवन परिचय:- सत्येंद्रनाथ बोस का जन्म 1 जनवरी 1894 को कलकत्ता में हुआ था। इनकी माता का नाम अमोदनी देवी तथा पिता सुरेन्द्रनाथ बोस, रेल्वे में कनिष्ट इंजीनियर थे। इनका विवाह उषावती घोष के साथ हुआ था। ये परिवार में 6 बहिनों में इकलौते भाई थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा कलकत्ता में हुई थी। सन् 1909 में इन्होंने एन्ट्रेस की परीक्षा दी, जिसमें योग्यता सूची में पांचवे स्थान पर रहे। सन् 1915 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से भौतिक शास्त्र में एम.एससी. प्रथम श्रेणी से उत्तींण की विश्वविद्यालय स्तर तक अध्ययन में वे सदैव प्रथम स्थान पर रहते थे। जबकि उनका मुकाबला मेघनाथ साहा, आर.एन. सैन, जे.पी.घोष, जे.एन. मुखर्जी, एन.आर. धर जैसे प्रखर बुद्धि के विद्यार्थियों से रहा। इन्हें कई विश्वविद्यालयों से डी.एस.सी. मानक उपाधि से विभूषित किया गया। सन् 1919-24 तक ये ढाका विश्वविद्यालय में रीडर के पद पर रहे।

सन् 1925-26 तक इन्होंने आइन्स्टीन के साथ कार्य कर सिद्धांत प्रतिपादित किया जो- ''बोस आइन्स्टीन'' सिद्धांत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भारत लौटकर 1956 से 58 तक वे विश्वभारती विश्वविद्यालय कलकत्ता में कुलपति रहे। सन् 1958 में भारत सरकार ने इन्हें रॉयल सोसाइटी लन्दन में प्राध्यापक नियुक्त किया। इसके मध्य में सन् 1944 में इन्हें भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर विभूषित किया तथा 1945 में खैरा वैज्ञानिक के रूप में इन्होंने भौतिक विज्ञान विभाग में कार्बनिक रसायन शास्त्र की प्रयोगशाला स्थापित कर अनुसंधान भी किया। सत्येंद्रनाथ बोस को जर्मन, बंगला, फ्रेंच, संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। सन् 1952-1958 तक वे राज्यसभा के सदस्य भी रहे थे। जब वे राज्यसभा के सदस्य थे तब उन्होंने विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा मातृभाषा में दिये जाने पर जोर दिया। विरोध करने वालों को वे इंगित कर कहते थे कि- ''उन्हें आश्चर्य है कि देश में ऐसे भी लोग हैं जो मातृभाषा का विरोध करते हैं, जिसमें उनकी माँ ने उनको लोरियां सुनाई। शर्म का विषय है कि लोग उस भाषा का समर्थन कर रहे हैं, जिसमें अंग्रेजों ने फटकार लगाई थी।'' सन् 1954 में उनके प्रतिभापूर्ण शोधपत्र गणित तथा सांख्यिकी ने विश्व में सनसनी मचा दी थी। भारत सरकार ने इन्हें पद्मविभूषण से अलंकृत किया था।

डॉ. बोस की साहित्यिक विधा:- डॉ. बोस को रसायनशास्त्र, जीव विज्ञान, खनिज विज्ञान, मृदा विज्ञान, दर्शनशास्त्र, पुरातत्व, इतिहास, संगीत आदि अनेक विधाओं का अच्छा ज्ञान था। उनकी लिखित पुस्तकों में प्रकाशित महत्वपूर्ण पुस्तक है-

1. लाइट क्वांटा स्टैटिस्टिक्स
2. अफीन कनेक्शन कोएफिशेट्स

बोस-आइन्स्टीन सांख्यिकी के आविष्कारक- वैज्ञानिक मेक्सवेल और बोल्ट्जमेन ने 'अणुओं की भीड़' पर एक-एक अणु की गति ज्ञात करने की सांख्यिकी विधियों को मालूम किया था, इस सांख्यिकी के अनुसार पदार्थ को बनाने वाले आधारभूत बहुत से कणों- इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन, न्यूट्रॉन, न्यूट्रिनों, फोटोन, मीजोन, एल्फा कण आदि को सुनियोजित अध्ययन करने की दृष्टि से वैज्ञानिकों ने दो श्रेणियों में वगीकृत किया है। यह कणों के चक्रण के गुण पर आधारित है। सत्येंद्र बोस ने खोज कर बताया कि फोटोन, पाई मीजोन, एल्का कण, ग्रेविटोन आदि कणों की चक्रण क्वांटम संख्या पूर्णाकों में है यानि शून्य अथवा एक अथवा दो अथवा तीन इस प्रकार है। उनके नाम पर इन कणों को बोसान कहा जाता है। बोस ने ऐसी कई प्रकार की खोज आइन्स्टीन से पहले कर ली थी।

राष्ट्र के प्रति सत्येंद्रनाथ बोस के विचार:- बोस वैज्ञानिक प्रतिभा के साथ समाज सेवा के क्षेत्र में भी अग्रणीय थे। मान्यताओं और सिद्धांतों के प्रति दृढ़, कठोर परन्तु जीवन शैली में शान्त, विनम्र, सहज थे। वे देश सेवा का उद्देश्य लेकर ही विज्ञान क्षेत्र में उन्नति करने का ध्येय रखते थे। वे अक्सर कहते थे कि भारत में कुछ विश्वविद्यालय अवश्य खोले जाने चाहिए जिनमें सामाजिक, वैज्ञानिक एवं विज्ञानतात्विक सभी विषयों का उच्चतम स्तर पर पठन-पाठन मातृभाषा में ही हो। उन्होंने अपने देश की मौलिक सृजनशील वैज्ञानिक प्रतिभा के उदय की संभावना को दृष्टिगत रखते हुए कहा कि- ''प्रत्येक वस्तु तथा प्रत्येक व्यक्ति अनन्त सम्भावना का आगार है। आवश्यकता उन्हें परखने भर की है। इसके लिए गाँव-गाँव में स्थापित मंदिरों की तरह विज्ञान गृहों की स्थापना करनी पड़ेगी और तभी हमारा दारिद्र्य, हमारा पिछड़ापन तथा हमारी दुर्व्यवस्था का अन्त होगा।'' वे सदैव विज्ञान के सर्वांगीण विकास से देश का कल्याण होना मानते थे। उनका निधन 4 फरवरी 1974 को हुआ। उनको भारत का आइन्स्टीन कहना उचित होगा।

से.नि.प्र.अ.
सांपला (अजमेर)
मो. 9460894708

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एजुकेशन: एक परिचय

❒ सुनीता चावला

जब मैं अपने बाल्यकाल को याद करती हूँ तो मुझे अपने विद्यालय जीवन की प्राथमिक कक्षाओं का ध्यान आता है। अध्यापक का व्यवहार 'पिता तुल्य' होता था। विद्यालय में सख्त अनुशासन था, पर माँ जैसी ममता नहीं थी, दोस्तों जैसी निकटता, घनिष्ठता नहीं थी। शिक्षक की प्रभुता वाले इस वातावरण में घुटन महसूस होती थी। विद्यालय आना सजा जैसा लगता था। विद्यालय की पहली घंटी काफी तकलीफ देय होती थी। जैसे-जैसे समय बीतता आधी छुट्टी के बाद कुछ अच्छा लगने लगता। आठवाँ कालांश, अन्तिम घंटी, विद्यालय की छुट्टी काफी सुखद प्रतीत होती थी। माँ के स्नेहपूर्ण आंचल को याद कर मन खुश हो जाता था।

विद्यालय में अध्यापक आज्ञा देते थे, हम अनुशासित रहकर आज्ञा पालन किया करते थे। अध्यापक पाठ्यपुस्तक पढ़ाते थे, श्यामपट्ट पर प्रश्न-उत्तर लिखते थे, हम उत्तर पुस्तिका में उतारते थे। हम में से एक विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक पढ़ता था, हम सब सुनते थे। इन परिस्थितियों में शिक्षक का कक्षा पर नियंत्रण अधिक एवं बच्चों की भागीदारी कम होती थी। ऐसे में कक्षा कक्षीय प्रक्रियाओं में रोचकता नहीं होती थी। इस शिक्षक केन्द्रित कक्षा में बच्चे ऊब जाते थे।

पारम्परिक शिक्षण प्रणाली में टेस्ट, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षाओं में बच्चे रट कर अधिक से अधिक अंक प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। कम अंक प्राप्त करने वाले बच्चे निराश हो जाते हैं, इस प्रकार के परीक्षा परिणाम से यह पता नहीं चलता कि बच्चे ने क्या सीखा अथवा उनमें क्या संभावनाएं छिपी हुई थी। इन परिणामों से यह संकेत भी नहीं मिलता कि बच्चों की जरुरत के आधार पर अध्यापन एवं अधिगम प्रक्रिया में किस प्रकार के सुधार की आवश्यकता है। ये प्राप्तांक माता-पिता या समुदाय को सीखने के बारे में किसी प्रकार का पृष्ठ पोषण (फीडबैक) नहीं देते हैं। मूल्यांकन की यह व्यवस्था बच्चों में अनावश्यक तनाव एवं प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती है। यदि सीखने में भय, अनुशासन या तनाव हो तो यह स्थिति बच्चें एवं समाज के लिए हितकारी नहीं है। इन परिस्थितियों में बच्चे का रुझान विद्यालय/अध्ययन की ओर नहीं रहता है, वे या तो विद्यालय आना कम कर देते है या ड्राप आऊट हो जाते हैं। दोनों परिस्थितियां बालक एवं समाज के लिए नुकसान देय है। विद्यालय में बच्चों की अनियमित उपस्थिति से शैक्षिक स्तर में गिरावट आती है। ड्राप आउट होने की स्थिति में शैक्षिक एवं सामाजिक विकास प्रभावित होता है। राजकीय विद्यालयों में सभी वर्ग के बच्चे अध्ययन करते है। अधिकांश बच्चों के अभिभावक अशिक्षित, कम पढ़े लिखे एवं गरीब होते हैं। इस वजह से बच्चों को अपने परिवार से किसी भी प्रकार की आर्थिक एवं शैक्षिक मदद, मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है।

इन्हीं बातों के मद्देनजर माध्यमिक शिक्षा विभाग के समन्वित विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से अप्रैल 2015 में राजस्थान सरकार, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, एसआईईआरटी उदयपुर, यूनिसेफ एवं बोधशिक्षा समिति के मध्य 'एसआईक्यूई परियोजना' (स्टेट इनिशिऐटिव फॉर क्वालिटी एज्यूकेशन) के नाम से एक समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) हुआ है। राज्य सरकार का यह विश्वास है कि सब बच्चे सीख सकते हैं और सभी शिक्षक पढ़ा सकते हैं। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों को बालकेन्द्रित शिक्षण (सीसीपी) तथा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) विधा के माध्यम से बच्चे की रुचि, गति, स्वभाव एवं व्यक्तिगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए अध्ययन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कराना है। इससे बच्चों को सीखने के स्तर में सुधार करते हुए शैक्षिक प्रगति को सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही समन्वित विद्यालयों के केचमेन्ट एरिया में रहने वाले, विद्यालय जाने योग्य समस्त बच्चों का नामांकन एवं प्रत्येक नामांकित बच्चे को विद्यालयी शिक्षा पूर्ण कराने का लक्ष्य भी शामिल है। यह नया विचार नहीं है बल्कि पूर्व प्रचलित धारणा है।

बच्चे व्यक्तिगत एवं समूह में कार्य करते हैं, बातचीत करते हैं, अनुभव बांटते हैं एवं सहयोग करते हैं इससे एक-दूसरे को समझने का मौका मिलता है। उनमें परस्पर समन्वय एवं सामाजिकता के गुणों का विकास होता है।

बालकेन्द्रित शिक्षण क्या है? बच्चें विद्यालय के कक्षा कक्ष में औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ प्रार्थना सभा, खेल-खेल में एवं सह शैक्षिक गतिविधियों, परिवार एवं समाज से अनौपचारिक शिक्षा भी सतत् रूप से लेते रहते हैं वे स्वयं ज्ञान सृजन की प्रक्रिया में संलग्न रहते है। सीखना सामाजिक वातावरण में घटित होने वाली प्रक्रिया है। सीखने के दौरान बच्चे बहुत सी गलतियां भी करते है। ये गलतियां बच्चों को विश्लेषण एवं तुलना करने के अवसर भी उपलब्ध कराती है, इससे अवधारणा की समझ बनती है। सीखने को सरल से कठिन की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर ले जाकर शिक्षण को व्यापकता दी जा सकती है। हमें यह समझना होगा कि विद्यालय में बच्चों का मात्र नामांकन ही शिक्षा नहीं है। बच्चा कोई आंकड़ा भी नहीं है। प्रत्येक बच्चे की पसंद, नापसंद एवं रुचियां होती है। प्रत्येक बच्चे में कोई न कोई कौशल अवश्य होता है, हर बच्चा अपने आप में अलग है। वह किसी भी परिस्थिति में अपने ही ढंग से व्यवहार करता है। जब बच्चा विद्यालय में आता है तो उसके पास कुछ अनुभव, कुछ जानकारियां होती है। इन्हीं अनुभवों एवं जानकारियों के आधार पर सीखनें की योजना बनाई जाती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 (एनसीएफ 2005) में भी बाल केन्द्रित शिक्षण के माध्यम से सीखने सिखाने की आवश्यकता पर जोर दिया जाता है। इसमें शिक्षक सीखने के लिए ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करता है, जहां बच्चों की कार्य में संलग्नता बहुत अधिक हो, बच्चों को प्रश्न पूछना, सीखने पर विचार करना, सीखे हुए

को दैनिक जीवन में उपयोग में लेने के अवसर मिलते हों एवं बच्चा सक्रिय रूप से व्यस्त रहता हों।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में बच्चे की प्रत्येक गतिविधि एवं शैक्षिक प्रगति का सतत् रूप से आकलन करते हुए प्रत्येक बच्चे को ध्यान में रखते हुए समूहों में शिक्षण किया जाता है और आंकलन एवं आवश्यकता के आधार पर शिक्षण कार्य योजना में बदलाव करते हुए आगे के कार्य का निर्धारण किया जाता है।

भिन्न-भिन्न विषयों में समय की निश्चित अवधि में बच्चों की प्रगति, उसमें होने वाले परिवर्तन को जानना, बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पहचानना एवं उनके आधार पर अध्यापन एवं सीखने की योजना बनाने के लिए आकलन किया जाता है। इससे कक्षा कक्ष में चल रही सीखने सिखाने की प्रक्रिया बेहतर होती है एवं बच्चों की प्रगति के प्रमाण भी तय किए जा सकते हैं। आकलन व्यक्तिगत (एक बच्चे को केन्द्र में रखकर), सामूहिक (बच्चों द्वारा सामूहिक कार्य करते हुए), स्व-आकलन (बच्चे द्वारा स्वयं का), सहपाठियों द्वारा (एक बच्चे द्वारा दूसरे बच्चे का) किया जा सकता है।

आकलन दिन-प्रतिदिन के आधार पर बच्चों के साथ सतत रूप से अंतःक्रिया करते हुए कक्षा कक्ष के भीतर एवं बाहर आकलन किया जा सकता है। प्रत्येक दूसरे माह में शिक्षक बच्चों द्वारा किए गए कार्यों की जांच करके, एकत्रित सूचनाओं के आधार पर उन्हें अपनी राय बताते हैं।

एक अवधि विशेष के बाद पढ़ाई गई विषय वस्तु के आधार पर पेपर पेन्सिल टेस्ट करवाया जा सकता है। इसमें पूछे गए प्रश्न अथवा सवालों की प्रकृति ऐसी होनी चाहिए कि पूर्व निर्धारित उत्तर निकल कर नहीं आए, अपितु बच्चे अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त कर सकें। पाठ्य सामग्री को याद कर लिख देने के स्थान पर चिंतन, विश्लेषण एवं सृजनात्मक क्रियाओं को महत्व दें। इसके अलावा बच्चों का अवलोकन करके उनकी बात सुनकर, उनके अभिभावकों, दोस्तों, सहपाठियों एवं दूसरे शिक्षकों के साथ अनौपचारिक तरीके से चर्चा करके उनके द्वारा किए गए लिखित कार्य से भी बहुत कुछ समझा जा सकता है। इससे बच्चे की व्यक्तिगत एवं विशेष जरूरतों को पहचाना जा सकता है। यहाँ बच्चे को सीखने एवं विकास में मदद मिलती है। उनमें सुधार एवं उन्नति की संभावनाओं का पता चलता है।

दिन-प्रतिदिन के अध्ययन अधिगम में प्रत्येक बच्चा शैक्षिक गतिविधियों में संलग्न रहता है। यहां शिक्षक बच्चे को उसके कार्य एवं उपलब्धि पर फीडबैक देते है। बच्चा अपने एवं मित्रों के कार्य को देखता हैं तो स्वयं तुलना करके अपनी कमियों को सुधारता है। यहां शिक्षक को पहचानना होता है कि बच्चों को किस प्रकार की सहायता एवं परामर्श की जरूरत है। शिक्षक को यहां ध्यान रखना होगा कि वह बच्चों में किसी प्रकार की तुलना नहीं करें। प्रत्येक बच्चे की रुचि, भावनाओं एवं विचारों को महत्व दें। उनका सतत् अवलोकन भी करें। उनके कमजोर पक्ष को सुधारें एवं मजबूत पक्ष को उभारने का प्रयास करें।

हम भाग्यशाली है कि प्राथमिक कक्षाओं के छोटे बच्चे हमें बाल-धन के रूप में मिले हैं। विद्यालय में हम इन बच्चों के अभिभावक बनकर रहें। सभी संस्था प्रधानों से आग्रह है कि वे प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को सर्वोच्च प्राथमिकता देवें। कार्यक्रम को गंभीरता से समझना होगा एवं सकारात्मक रुख अपनाते हुए परिस्थितियों को बदलने का प्रयास करें। राज्य सरकार एवं विभाग ने लगातार निर्देश, विडियो कॉन्फ्रेंसिंग, प्रशिक्षण, आमुखीकरण एवं कार्यशालाओं के माध्यम से संस्था प्रधान, हैड टीचर एवं शिक्षकों में कार्यक्रम की समझ बढ़ाने का प्रयास किया है। कार्यक्रम से संबंधित दिशा निर्देश विभागीय वेबसाईट पर उपलब्ध है। प्रिन्सिपल हैन्डबुक एवं स्रोत पुस्तिका के सतत अवलोकन एवं अध्ययन से कार्यक्रम की अवधारणा और मजबूत होगी। प्रत्येक स्तर पर कार्य करने के साथ-साथ उसकी समीक्षा जरूरी है।

अब आपकी बारी है, सही ढंग से काम करेंगे तो समस्याएं स्वतः ही हल होगी, सार्थक प्रयास एवं पुरुषार्थ से कार्यक्रम को उसकी भावना के अनुरूप क्रियान्वयन में जुट जाएँ। समस्त शिक्षकवृन्द सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन् एवं स्वामी विवेकानन्द जैसे विद्वानों के प्रतिनिधि है। आओ संकल्प लें कि हम अपने कर्तव्यनिष्ठ प्रयासों से बच्चों का भविष्य एवं व्यक्तित्व इस प्रकार संवारें, सुधारें कि भविष्य में फिर कभी ऐसे किसी अन्य कार्यक्रम की आवश्यकता न हो।

''केवल नदी में गिरने मात्र से किसी की जान नहीं जाती, बल्कि जान तभी जाती है जब तैरना नहीं आता, उसी प्रकार परिस्थितियां कभी समस्या नहीं बनती, समस्या तभी बनती है जब हमें परिस्थितियों से निपटना नहीं आता।''

सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

एस.आइ.क्यू.इ. : शाला में क्रियान्विति

❐ शमीम परिहार

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और सकारात्मक परिवर्तन विकास की ओर ले जाता है। इसी विकास क्रम में परिवेश, समाज और लोगों के सद्विचारों व उनकी क्रियान्विति अहम स्थान रखती है।

परिवर्तन को स्वीकार करना चुनौतीपूर्ण होता है। हम उसे आसानी से स्वीकार नहीं कर पाते हैं क्योंकि हमारी मानसिकता में कुछ निम्न उद्देश्य वाली परम्परागत रीतियाँ इस तरह जड़ें जमाई रहती हैं कि हम उससे बाहर निकलने का प्रयास या श्रम ही नहीं करना चाहते हैं।

इसी तरह का विकासात्मक परिवर्तन शिक्षा में भी हुआ है। शिक्षा की कमजोर पड़ती नींव को प्रभावी मॉनिटरिंग से पोषित कर मजबूत करने के लिए शैक्षणिक इकाईयों का विलयन या एकीकरण का दूरदर्शितापूर्ण सार्थक कदम उठाया गया। इस परिवर्तन में भी कई मुश्किलें चुनौतियों के रूप में थी।

शैक्षणिक विकास की प्रक्रिया में यह परिवर्तन स्कूली ढांचे में परिवर्तन का ही नहीं बल्कि शिक्षा के गुणात्मक सुधार हेतु पाठ्यक्रम व पढ़ाने, मूल्यांकन करने के तरीकों में बदलाव

का भी रहा। बाल मनोविज्ञान व विद्यार्थियों की स्वयं की क्षमता के अनुसार अधिगम को महत्व देने वाली शैक्षणिक योजना प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर पर लागू की गई।

इस क्रम में CCE की क्रियान्विति हुई। जिसमें शिक्षण के विभिन्न पहलू यथा योजना, शिक्षण के तरीके, लक्ष्य इत्यादि सभी का केन्द्र विद्यार्थी के अधिगम स्तर के उन्नयन का रहा।

उसके पश्चात कक्षा 1 से 10/12 तक संचालित होने वाले विद्यालयों में RAMSA, यूनिसेफ, SIERT उदयपुर, बोध शिक्षा समिति जयपुर, निदेशालय मा. शि. बीकानेर के संयुक्त प्रयासों से CCE (बाल केंद्रित शिक्षण विधा) अर्थात् गतिविधि आधारित शिक्षण को समावेशित कर CCP (State Initiative Quality Education) का प्रारंभ प्राथमिक शिक्षा में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए किया गया।

ज्ञान और अनुभव सहित कही व सिखाई जाने वाली चीजें दीर्घस्मरणीय होती हैं और अवचेतन में अपना स्थान बनाती है। एक चीनी कहावत है, ''मुझे बताएंगे तो मुझे एक घंटे तक याद रहेगा, मुझे दिखाएंगे तो एक दिन तक याद रहेगा, लेकिन अगर आप मुझे वह काम करने देंगे तो मुझे हमेशा याद रहेगा।''

RTE के अनुसार बच्चे को उसकी उम्र के अनुसार ही कक्षा में प्रवेश देना है। बच्चे का अधिगम स्तर कक्षा स्तर का नहीं होने पर बुनियादी शिक्षा (हर कक्षा स्तर हेतु निर्धारित) देकर उस कक्षा के अनुरूप लाना ही SIQE का उद्देश्य है।

लेकिन SIQE द्वारा शिक्षण को कार्यक्षेत्र में क्रियान्विति करना भी किसी चुनौती से कम नहीं रहा। संभवतः समझने में कमी रही या फिर हमने ही परिवर्तन को स्वीकार करने में निष्क्रियता दिखाई है। परम्पराओं से जुड़ा रहना लाजिमी है लेकिन सुधार व विकास के लिए परिवर्तन को अपनाना होगा।

SIQE की प्रक्रिया में बच्चे सक्रिय रहकर शिक्षक के द्वारा दी गई पाठ्यक्रम के अनुसार शैक्षणिक गतिविधियों द्वारा स्वयं ही अपने-अपने अधिगम स्तर के अनुरूप ज्ञानार्जन करते हैं।

इसमें कक्षा का पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को नियमित रूप से करवाई जा रही शैक्षणिक गतिविधियों द्वारा करवाया जाता है तथा नियमित रूप से उनका आकलन कर मूल्यांकन किया जाता है।

चूंकि सभी शिक्षक सिखा सकते हैं और सभी बच्चे सीख सकते हैं बशर्ते इस नई परिपाटी को पूरे मन से स्वीकार कर क्रियान्वित किया जाये।

आधार रेखा मूल्यांकनः- सत्र के प्रारम्भ में कक्षा 1 को छोड़कर कक्षा 2,3,4 व 5 के बच्चों का आधार रेखा मूल्यांकन किया जाता है। पूर्व प्रवेशित बच्चों का पूर्वकक्षा में लिए गये SA_4 आधार रेखा मूल्यांकन हो सकता है। लेकिन आवश्यकतानुसार नव प्रवेशियों के साथ पुनः लिया जा सकता है। आधार रेखा मूल्यांकन से बच्चों के अधिगम स्तर का ज्ञान हो जाता है और उन्हें समूहों में वर्गीकृत करने में आसानी रहती है।

पाठ योजनाः- सम्पूर्ण सत्र कुल चार टर्म में पूर्ण होता है। क्रमशः SA_1 से SA_4 प्रत्येक ढाई माह की अवधि में पूर्ण होता है। प्रत्येक टर्म में चार पाक्षिक योजना पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षक अध्यापक योजना डायरी में बनाता है।

प्रत्येक पाक्षिक योजना कक्षा के समूह-1 व समूह-2 के लिए अलग-अलग बनाई जायेगी। समूह-1 में वे विद्यार्थी होंगे जो उसी कक्षा स्तर के होंगे। और समूह-2 में वे विद्यार्थियों होंगे जो उस कक्षा स्तर से नीचे के स्तर के होंगे।

प्रत्येक समूह के लिए तीन प्रकार की सामूहिक, उपसमूह व व्यक्तिगत कार्य योजना बनाई जाती है जिसमें पाठ के उद्देश्य, गतिविधियों द्वारा पूर्ण करने का प्रयास करते हैं।

(उदाहरणार्थः कक्षा 5 के लिए, जो विद्यार्थी कक्षा 5 के स्तर के होंगे वे समूह-1 में तथा जो कक्षा 4,3,2,1 के स्तर के होंगे वे समूह-2 में शामिल होंगे।)

समूह-1 के लिए कार्ययोजना पाठ्यक्रम एवं टर्मवार अधिगम उद्देश्य में दिये गए आकलन सूचकों को मद्देनजर रखते हुए बनाई जाती है जो उसी कक्षा स्तर की होती है। समूह-2 हेतु बुनियादी सूचकों द्वारा पाठ योजना बनाई जाती है। जो विद्यार्थी कक्षा स्तर का है उस कक्षा स्तर के बुनियादी सूचकों (अध्यापक योजना डायरी में टर्म SA_4 के पश्चात् अंकित है) को पाठ योजना में सम्मिलित करते है; जो कि गतिविधि आधारित होती है। सभी बुनियादी दक्षताओं के सापेक्ष आकलन सूचकों को सुविधानुसार एक टर्म की चार पाक्षिक योजनाओं में वर्गीकृत कर पाठ योजना बनाई जाती है और विद्यार्थी का सतत मूल्यांकन किया जाता है।

यदि विद्यार्थी प्रथम टर्म (SA_1) में अपेक्षित स्तर प्राप्त कर लेता है तो वह द्वितीय टर्म (SA_2) में अपनी अगली कक्षा में नामांकित हो जाएगा। उदाहरणार्थः कक्षा 5 के समूह-2 का विद्यार्थी यदि कक्षा 3 के स्तर का है, और उसने SA_1 में अपेक्षित स्तर प्राप्त कर लिया जाता है तो वह SA_2 हेतु कक्षा 4 के स्तर पर नामांकित हो जाएगा।

शिक्षण योजना पूर्णतः बालकेन्द्रित व गतिविधि आधारित होती है चाहे वह समूह-1 के लिए या समूह-2 के लिए हो। प्रत्येक समूह के लिए सामूहिक कार्ययोजना शिक्षक आधारित होती है। विद्यार्थी द्वारा शैक्षिक गतिविधि पर किस प्रकार कार्य किया जा रहा है शिक्षक उसके सम्प्रेषण, तर्कशक्ति, तत्परता, व्याख्यान प्रवृत्ति इत्यादि का अवलोकन करता है और अपना सहयोगात्मक मार्गदर्शन देता रहता है। इस दौरान प्रत्येक बच्चे की क्रिया प्रतिक्रिया का स्तर अलग-अलग होता है।

तत्पश्चात् उस थीम/पाठ से सम्बन्धित शिक्षण योजना उपसमूह के लिए बनाई जाती है। विद्यार्थियों के छोटे-छोटे समूह में वर्गीकृत कर बिठाया जाता है। प्रत्येक समूह में मिश्रित अधिगम स्तर के विद्यार्थी होते हैं। अर्थात् प्रतिभाशाली, सामान्य व कमजोर विद्यार्थी प्रत्येक समूह में होते हैं।

समूह में मौजूद कमजोर बच्चा होशियार बच्चा से प्रेरित होकर अपने विचार प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, चूंकि ये कार्य, बच्चों में आपस में होता है। अतः शिक्षक के सामने गलत बोलने के डर, झिझक से वह मुक्त रहता है।

उपसमूहों को शिक्षक द्वारा पाठ्यक्रम

गतिविधि दी जाती है। उपसमूह में बच्चे यह कार्य करते हैं और शिक्षक उन्हें सहयोग करता है। साथ ही अवलोकन द्वारा बच्चों को अपने शिक्षण उद्देश्य पूरे करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

तत्पश्चात् व्यक्तिगत कार्ययोजना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए होती है। इस कार्य को विद्यार्थी स्वयं अपने स्तर पर करता है। इस प्रकार की कार्ययोजना समूह–2 जिसमें कक्षास्तर से नीचे के विद्यार्थियों हेतु सामूहिक, उपसामूहिक व व्यक्तिगत बनाई जाती है।

चैकलिस्ट:– अध्यापक योजना डायरी में प्रत्येक टर्म के अन्त में चैकलिस्ट दी होती है। चैकलिस्ट में प्रत्येक आकलन सूचक के सामने दो आवृत्तियां अंकित है अर्थात् प्रत्येक सूचक का दो बार आकलन विषयानुसार साप्ताहिक या मासिक सुविधानुसार कर लिया जाता है। इस चैकलिस्ट में केवल समूह–1 के बच्चों के लिए ग्रेड A, B, C निर्धारित कर अंकन किया जाता है। प्रत्येक सूचक की आवृत्ति में ग्रेड का अंकन विद्यार्थी द्वारा की गई गतिविधि, पोर्टफोलियो के प्रमाण व कार्यपत्रकों, पेपर–पेन/पेन्सिल टेस्ट को देखते हुए शिक्षक निष्पक्ष स्वविवेक से करता है।

जो विद्यार्थी शिक्षक के द्वारा दिये गए कार्य को स्वयं कर लेता है उसे A ग्रेड तथा जो विद्यार्थी शिक्षक की मदद के द्वारा कार्य कर सकता है उसे B ग्रेड और जो शिक्षक की मदद द्वारा भी कार्य नहीं कर सके उन्हें C ग्रेड दिया जाता है।

समूह–2 के लिए चैकलिस्ट बुनियादी क्षमताओं से संबंधित होती है तथा प्रत्येक कक्षा के चतुर्थ टर्म के पीछे दी गई होती है।

पोर्टफोलियो:– कक्षा 1 से 5 तक सभी बच्चों की व्यक्तिगत फाईल विषयाध्यापक द्वारा तैयार की जाती है जिसमें प्रथम पेज पर विद्यार्थी के आवक्ष चित्र के साथ उसके बारे में सामान्य जानकारी होती है। फाईल में विद्यार्थी के शैक्षणिक गतिविधियों के प्रमाण, कार्य व शिक्षक की टिप्पणी सहित तथ्यों का संकलन किया जाता है।

सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख:– चारों टर्म का विवरण इसमें दर्ज किया जाता है। एक अभिलेख पंजिका में 50 विद्यार्थियों की प्रगति का अंकन किया जाता है। इसमें ग्रेड रचनात्मक आकलन, पोर्टफोलियो के कार्य फलक, जाँचपत्रकों के समेकित आकलन के आधार पर शिक्षक के स्वविवेक से निर्धारित कर देते हैं।

द्वितीय व चतुर्थ योगात्मक आकलन (SA_2, SA_4) के बाद शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक की बैठक कर टिप्पणी दर्ज की जाती है।

SIQE के तहत शिक्षण के सफल संचालन हेतु प्रत्येक कक्षा 1 से 5 तक एक ही विषय का अध्यापन करवाता है। (शाला में शिक्षकों की संख्या के आधार पर इस स्थिति में समायोजन करना पड़ सकता है।)

प्रत्येक पाक्षिक योजना के उपरांत संस्था प्रधान व विषयाध्यापक विचार विमर्श कर समुचित संशोधन हेतु समीक्षा करते हैं।

प्रधानाचार्या
रा.उ.मा.विद्यालय, चाम्मसर, बीकानेर
मो. [illegible]

इस माह का गीत

आओ हम सब मिलकर गाएँ...

आओ हम सब मिलकर गाएँ, जग जननी का गान।।ध्रु।।

स्वर्ण-मुकुट मस्तक पर भाता,
चरणों में सागर लहराता,
सत्य धरम जिसका गुण गाता,
सबसे न्यारा, जग का तारा, भारत देश महान।।१।।

यहीं कृष्ण ने जन्म लिया था,
दुष्टों का संहार किया था,
जग को नव सन्देश दिया था,
लहर-लहर यमुना भी गाती, सुन लो इसके गान।।२।।

चन्द्रगुप्त की जन्मभूमि यह,
महाराणा की मातृभूमि यह,
वीर शिवा की कर्मभूमि यह,
कोटि-कोटि वीरों ने इस पर, प्राण किए बलिदान।।3।।

मातृभूमि हम सबकी प्यारी
जगती में इसकी छवि न्यारी
कोटि स्वर्ग इस पर बलिहारी
इसकी रक्षा-हित हम कर दें, अर्पित तन-मन-प्राण।।४।।

।।भारत माता की जय।।

संकलन-सुधा चौहान
अध्यापिका, रा.उ.प्रा.वि. भीमनाणा
पंचायत समिति खाजूवाला, बीकानेर

चिन्तन

सेट योर कम्पस

❒ बिग्रेडियर करण सिंह चौहान

जीवन का प्रत्येक पल आनन्द का स्रोत है। हमारी मनोदशा को हमारे मस्तिष्क में उपलब्ध लगभग 200 रसायन प्रभावित करते हैं। चिन्ता की अवस्था में मस्तिष्क से एनडोरफिन रसायन का प्रवाह होता हैं, जो कि मोरफिन की भांति हैं तथा पीड़ा-हारक के रूप में कार्य कर प्रसन्नचित रहने में हमारी सहायता करता हैं। चिन्ता एक आदत की तरह है, जिसे हमने दूसरों के मापदण्डों से अपनाया हैं। चिन्ता के साथ न तो कोई जन्मा है न कोई जन्मेगा। अपनी धारणाओं में बदलाव लाने से ही चिन्ता से मुक्ति पाई जा सकती हैं।

प्रसन्नता तथा आनन्द किसी भी औषधि के रूप में नहीं आते, जिसका सेवन कर सदैव प्रसन्नता की स्थिति में रहा जा सके। हालांकि वैज्ञानिकों ने एक औषधि 'प्रोजेक' बनाई हैं, जो प्रसन्नता लाने में सहायक होती है। लेकिन सदैव प्रसन्नचित्त और आनन्दित रहने के लिए हमें स्वयं ही कुछ उपायों को अपनाना उचित होगा।

आज के युग में जबकि विज्ञान, मशीनरी, संचार विस्फोट, सामाजिक परिवर्तन, धारणाओं, भौगोलिक-आर्थिक स्थिति एवं दशा, पर्यावरण, जनसंख्या, बेरोजगारी आदि चरम सीमा पर हैं, रोगों के रूप में आने वाले कल की परछाई हमें स्पष्ट दिखाई दे रही है। ऐसी स्थिति में हमें स्वयं ही सही दिशा का चुनाव करते हुए जीवन का ध्येय निर्धारित करना होगा। इसके लिए कुछ उपाय विचारणीय है-

समय परिवर्तनशील है:

बर्नाड शॉ ने कहा था 'जीवन भर तक प्रसन्नता! इसे कोई भी व्यक्ति सहन नहीं कर सकता। यह तो इस पृथ्वी को नरक बना देगी।' सुख-दुःख, चिन्ता-प्रसन्नता, रोग-स्वास्थ्य एक ही गाड़ी के दो पहियों की भांति हैं तथा इन्हें समान दृष्टि से देखने पर दुःख, चिन्ता एवं तनाव कभी नहीं होगा। एक बार एक राजा ने कुछ बुद्धिजीवियों से यह पूछा कि मुझे एक पंक्ति में यह बताओ कि किस युक्ति से मैं अपने जीवन में सुख एवं दुःख के क्षणों को समान रूप से ग्रहण कर आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकूं? बुद्धिजीवियों ने गहन विचार-विमर्श के पश्चात् सुझाया, 'राजन्, आप सदैव हर स्थिति में यह विचार करें कि यह भी बीत जाएगा।'

संत तरेसा ने कहा था, 'कोई भी परिस्थिति तुम्हें विचलित नहीं कर सकती, कोई भी परिस्थिति तुम्हें भयभीत नहीं कर सकती, क्योंकि वह तो क्षणभर की ही होती हैं।'

जीवन एक महाभारत है, जिसमें युद्ध कौशल की उत्कृष्टता अति आवश्यक हैं अर्थात् आने वाले कल की तैयारी एक युद्ध की भांति करनी आवश्यक हैं। 'यह भी बीत जाएगा', की धारणा से आशय आलस्य व आरामदायक जीवन व्यतीत कर क्षणिक आनन्द प्राप्ति से न होकर एक ऐसे योद्धा से हैं, जो कि सकारात्मक सोच, कठिन परिश्रम एवं लगातार संघर्ष से विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाता हुआ सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है।

जीवन को प्रकृति के अनुरूप ढालें एवं सरल बनाएं। किसी भी सरल वस्तु एवं घटना को हम हमारी शिक्षा, वातावरण एवं अर्द्धविवेक से दुविधापूर्ण बनाने का प्रयास करते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रकृति ने हमें कान व आंखें प्रदान की हैं। जब तक हमारी दृष्टि ध्येय पर हैं, हम सदैव प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते जाते हैं, परन्तु जैसे ही ध्येय से हमारा ध्यान हटा, कई प्रकार की काल्पनिक चिन्ताएं हमें तुरन्त घेर लेती हैं। प्रकृति के साथ सहयोग करते हुए जिस सरलता से नदी का जल प्रवाहित होता हैं, पक्षी खुले आकाश में विचरण करते हैं, सूर्य-चन्द्र उदय एव अस्त होते हैं, वनस्पति चारों ओर सुगन्ध फैलाती हैं, उसी प्रकार मनुष्य को भी सरल भाव से आनन्दित होकर अपना जीवन-निर्वाह करना चाहिए। प्रकृति के नियमों के विरुद्ध व्यवहार करने पर निश्चित ही दुष्कर परिणाम प्राप्त होंगे- जैसे मेड काऊ, मेड हेन, बर्ड फ्लू, एड्स आदि। यह सब गम्भीर रोग एक ही दिशा की ओर संकेत करते हैं- 'सफल जीवन की कला-सदैव प्रकृति के अनुकूल रहना है।'

लक्ष्य यानि जीवन की वास्तविकता उत्तर दिशा: गहनता से विचार के पश्चात् हमें यह आभास होने लगता हैं कि हमारे लिए आवश्यक क्या हैं? 'घड़ी' या 'कम्पस' (कुतुबनुमा)। घड़ी समय दर्शाने तथा विभिन्न कार्यकलापों से जुड़ी हैं, लेकिन कम्पस हमारे मूल्यों, लक्ष्यों एवं उद्देश्यों से जुड़ा होता है। कोई भी व्यक्ति अपनी आंखें बन्द करके उत्तर दिशा की ओर संकेत नहीं कर सकता हैं और जब ऐसे व्यक्तियों का समूह, उत्तर दिशा ढूंढ़ने का प्रयत्न करें तो वे अवश्य अलग-अलग दिशा की ओर संकेत करेंगे। वास्तविक उत्तर दिशा के भान के लिए कम्पस जरूरी हैं, जिसकी सुई हमेशा उत्तर दिशा की ओर ही संकेत करती है। इसी प्रकार भविष्य को आनन्दमय बनाने के लिए हमें हमारे लक्ष्य अर्थात् निर्धारित दिशा का ज्ञान होना आवश्यक हैं, क्योंकि जीवन की अधिकांश समस्याएं सुनिश्चित एवं सही दिशा में कार्य न करने से ही उत्पन्न होती हैं। ज्यादातर व्यक्ति सुनिश्चितता इसलिए नहीं अपना सकते, क्योंकि उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं होता हैं कि कब क्या करना चाहिए? वैज्ञानिक रीति से विश्लेषण करने पर वास्तविक उत्तर दिशा जो कि हमारी दृष्टि (विजन) से जुड़ी होती हैं, इसके चार बिन्दु विचारणीय है- 1. आपको क्या परिणाम और कब चाहिए। 2. परिणाम को प्राप्त करने के आधारभूत नियम (ग्राउण्ड रूल) एवं दिशा-निर्देश (गाइड लाइन) क्या है। 3. संसाधन की उपलब्धता। 4. समय-समय पर स्वयं पर क्या-क्या नियंत्रण या समय सीमा होनी चाहिए। इस प्रक्रिया में अपनी कम्पस एवं घड़ी का समन्वय करना आवश्यक है।

एक बार दत्तात्रेय को एक युवती ने घर के बाहर कुछ समय ठहरने के लिए कहा ताकि वह उनके लिए भोजन बना सके। युवती ने बहुत बड़ी संख्या में चूड़ियां धारण की हुई थीं और एक-दूसरे से टकराकर बज रह थीं। युवती ने एक-एक करके चूड़ियों को उतारना प्रारम्भ कर दिया और जब दोनों हाथों में एक-एक चूड़ी ही रह गई तब

अध्याय समाप्त हो गई। दत्तात्रेय ने इससे यह सीखा कि वास्तविक दिशा का ज्ञान मनुष्य को तभी हो सकता है, जब वह शोरगुल, भीड़, वाद-विवाद से परे रहे।

कम्पास के सहारे ही पायलेट वायुयान व उसके अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करते हैं, अथवा समुद्र में समुद्री जहाज का संचालन भी समय पर कायम रहने से ही होता है। इसमें एक बात ध्यान देने योग्य है कि सही दिशा ज्ञान करने के पश्चात् भी हर व्यक्ति का एक डीविएशन होता है, जिसका पता स्वयं के अनुभव व प्रयोगों से करना आवश्यक है। सेना के प्रशिक्षण में यह दिशा प्रदान की जाती है ताकि सैनिक दुश्मन के क्षेत्र में भी अपने डीविएशन को ध्यान में रखते हुए अपने गंतव्य पर पहुँच सके।

सदैव सीखते रहने की क्षमता: यह विश्वास रखिए कि जो भी व्यक्ति हमारे सम्पर्क में आते हैं, हमें कुछ न कुछ सिखाने को आते हैं। यहां तक कि बच्चे भी हमें बहुत कुछ सिखाने की क्षमता रखते हैं। अगर हम खुले हृदय से उनके ज्ञान का अनुसरण करें, तो वे हमारे शिक्षक बन सकते हैं। इन्हीं भावनाओं एवं आन्तरिक ज्ञान से ही एक अंग्रेज कवि ने कहा है- 'चाइल्ड इज दी फादर ऑफ मैन' यह तभी सम्भव है, जब हम एक छात्र की प्रवृति अपनाएं। सीखने में ही उमंग, ज्ञान व आनन्द है। इससे ही जीवन में अवसर ग्रहण किए जा सकते हैं।

सीखने का अर्थ है प्रगति करना और स्वयं को विकसित करना। हेलन केलर ने जीवन-पर्यन्त अपनी शारीरिक असमर्थताओं के होते हुए भी अपने आपको सीखने की प्रवृत्ति में स्मरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने लिखा है 'जब कभी एक द्वार बन्द होता है, तो प्रभु अनगिनत द्वार खोलकर हमें अवसर प्रदान करता है, लेकिन हम उस बन्द द्वार पर ही निराश बैठे प्रतीक्षा करते रहते हैं।'

आदतों के चंगुल से बचाव: बार-बार एक ही तरह के कार्य करने से वह आदत में परिवर्तित हो जाता है। आदतें ही चरित्र का निर्माण करती हैं और चरित्र भाग्य का निर्माता है। इसलिए इस पर गम्भीरता से हर समय ध्यान करना चाहिए कि कोई भी रोजमर्रा का कार्य एक आदत तो नहीं बन रहा है। आदतों को छोड़ना अति कठिन है। एक बार एक वृद्ध एक युवा के साथ जंगल में भ्रमण कर रहा था। उसने युवा को सर्वप्रथम एक उगता हुआ पौधा उखाड़ने को कहा। युवा ने उसे उखाड़ कर फेंक दिया। फिर एक कुछ पनपे पौधे को उखाड़ने के लिए कहा। वह भी उस युवा ने उखाड़ दिया। इसके पश्चात् एक बड़ा पौधा उखाड़ने के लिए कहा, जिसे भी उसने थोड़े प्रयास से उखाड़ दिया मगर चौथा पौधा जो कि पेड़ बन गया था, वह युवा उसे उखाड़ नहीं पाया। यही दशा हमारी आदतों की होती है। आदत को जड़ से उखाड़ने का एक सरल तरीका है- उस आदत के विपरीत आदत डालने का प्रयास करना। अगर आप सदैव चिन्ताग्रस्त रहते हैं, तो प्रसन्नचित रहने का प्रयास करें एवं प्रसन्नचित, सकारात्मक सोच वाले व्यक्तियों की संगत करें।

सेवा के लिए समर्पण: बिना किसी स्वार्थ एवं प्रतिफल की आशा के दूसरों की सच्चे हृदय से सेवा करने से अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती है। यह सेवा निष्काम कार्य की श्रेणी में आती है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था- 'प्रभु उन्हीं की सहायता करता है, जो दूसरों की सहायता करते हैं।' इस सन्दर्भ में जीवन का ध्येय हर वक्त यह रहे- 'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ' तो वह अवश्य सुख का अनुभव होता है। एक संत से किसी ने सदैव प्रसन्न रहने का उपाय पूछा तो उन्होंने कहा कि किसी अन्य व्यक्ति को प्रसन्न करो, आप स्वयं भी प्रसन्नचित

हो जाएंगे। एक सभ्य व ज्ञानी व्यक्ति सदैव सुख देकर प्रसन्न होता है एवं अज्ञानी व्यक्ति दुःख देकर प्रसन्न होता है।

आनन्द प्राप्ति: निम्नलिखित सात बातों के बचाव से अवश्य ही आनन्द की प्राप्ति होती है- 1. सदैव अपने ही बारे में बात करना, 2. सदैव स्वार्थी बने रहना, 3. अपने कर्तव्य का समय पर निर्वाह नहीं करना, 4. हर वाक्य में 'मैं', 'मेरा' का प्रयोग करना, 5. हर समय अपने भौतिक सुख के बारे में सोचना, 6. हर समय यह लालसा रखना कि आपकी प्रशंसा ही की जाए, 7. लालच भरे विचारों से सदैव अपने बारे में अन्य लोगों के विचार सुनने के लिए आतुर रहना।

जिस प्रकार सामाजिक नियम हर काल के लिए बनाए हैं एवं परिवर्तनशील हैं, उसी प्रकार सुख की परिभाषा तो परिवर्तनशील है, मगर आनन्द की परिभाषा सदैव एक ही रहती है, क्योंकि यह तो एक आन्तरिक अनुभूति है। यह शास्त्र, पुस्तकें एवं लेख पढ़ने से नहीं बल्कि सत्यों को आचरण में डालने से मिलती है।

एक कागज पर शहद लिख कर व उस कागज का सेवन करने से शहद की मिठास प्राप्त नहीं हो सकती, न ही गधे को गंगाजल में नहलाने से वह बुद्धिमान हो जाता है। सही दिशा में प्रयास एवं परिश्रम से आनन्द की प्राप्ति अवश्यम्भावी है। चाबी हमारे पास है व ताला भी हमने ही जकड़ रखा है- उसे खोलना भी हमें ही पड़ेगा, क्योंकि हर व्यक्ति आनन्द प्राप्ति का अधिकारी है। अपने आप को असमर्थ, निराश न मानकर अपनी विशाल क्षमता का भान, निष्काम कर्म, अध्ययन, संगत, स्वाध्याय, प्रार्थना, पूजा-अर्चना, ध्यान सेवा से सहज ही किया जा सकता है।

सफलता से बढ़कर कोई निधि नहीं,
सफल आदमी से बढ़कर कोई सिद्ध नहीं।

श्री सेवा, बाली, पाली
राजस्थान-306701
मो. 9460877333

परोपकार करते समय
अभिमान न लाए, इसका ध्यान रखो।

❀ ❀ ❀

जिसमें अधिक गुण हों
वही संसार में बड़ा है।

चिंतन

कुछ मत करो

❐ सत्यनारायण शर्मा

मेरी कॉलोनी के आश्रम में एक युवा संन्यासी संचालक के रूप में आए थे। सुबह शाम भ्रमण पथ पर उनसे मिलना होता था। प्रायः आश्रम में भी मैं उनसे मिलने जाता था। विभिन्न विषयों पर उनसे उपयोगी चर्चा होती रहती थी।

घरेलू व्यस्तता के कारण 8-10 दिन तक उनसे मिलना नहीं हुआ और वे स्वयं मेरे घर पर आ गए। हम दोनों बात कर ही रहे थे कि पास में बैठी किसी एक्जाम (कम्पीटीशन) की तैयारी करने वाली मेरी पौत्री अपने जीजा से फोन पर बात कर रही थी। बातचीत का कुछ अंश इस प्रकार था। और क्या हाल है ज्योति, क्या कर रही हो? नहीं, कुछ नहीं, ऐसे ही, बस, बैठी हूँ।

अरे, ऐसे ही बेकार मत बैठो, पढ़ाई करो, कुछ होम वर्क करो, पेपर की तैयार करो, कुछ न कुछ करते रहो, ऐसे बेकार नहीं बैठना चाहिए। डेढ़-दो मिनट तक ऐसा उपदेशात्मक प्रवचन उनका चलता रहा।

महाराज ने कहा, बेटा ज्योति, तुम बात करके फोन मुझे देना एक बार। मैं भी तुम्हारें जीजा से बात करूंगा।

सादर प्रणाम, नमोनारायण महाराज, क्या आदेश है? उधर से आवाज आई

बेटा राजेश, सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक तुम क्या क्या काम कर लेते हो? संक्षेप में बताओ जरा।

कोई खास नहीं महाराज! फ्रेश होकर चाय पीना, अखबार, टी.वी. स्नान, भोजन, ऑफिस, दोस्तों से बातें करना, फिर भोजन, टी.वी. और सो जाना, बस और क्या।

अच्छा तो अब सोचकर बताओ कि सुबह साढ़े आठ बजे उठने से लेकर रात को साढ़े ग्यारह बजे तक सोने तक ऐसा भी कोई समय होता होगा जब तुम कुछ नहीं कर सकते हो।

नहीं महराज! ऐसा तो कोई समय नहीं है। मैं तो बहुत व्यस्त रहता हूँ। एक मिनट का भी समय नहीं मिलता है। हर समय कुछ न कुछ करता ही रहता हूँ।

अच्छा तो राजेश, मेरे कहने से कल से तुम सुबह-शाम को या फिर कभी भी रात को सोने से पहले, पांच मिनट का टाइम ऐसा निकालो कि उस टाइम में तुम कुछ मत करो। कुछ मत करो- मतलब कि न कोई विचार, न कोई चिंतन न किसी काम को करने की योजना, न कोई पुरानी बात की याद। अर्थात कुछ नहीं का मतलब वास्तव में कुछ नहीं। केवल शांत और मौन होकर बैठ जाना। बस पांच मिनट के लिए कुछ भी न करना। सात दिन बाद मैं पूछूंगा कि तुमने ऐसा किया क्या?

सात दिन तो क्या, पांचवे दिन ही राजेश का फोन आया दादाजी, महाराज ने कहा था पांच मिनट, लेकिन मैं तो अब आधा घण्टा रोज सुबह ''कुछ नहीं'' करता हूँ। बड़ा आनंद आ रहा है। बड़ी शांति और उत्साह महसूस हो रहा है।

अगले दिन ये बात मैंने महाराज को बताई तो उन्होंने और स्पष्ट करते हुए कुछ न करने का महत्व बताया। कहा कि दिन में सुबह-शाम हमें समय निकालकर एकाध घंटे के लिए कुछ नहीं करना ही चाहिए।

इसे कुछ लोग ''ध्यान या मेडिटेशन' भी कहते हैं। लेकिन शब्दों का पूर्वाग्रह न रखकर मौन-शांत बैठना कितना आनंददायक है यह ज्ञात हो जाएगा।

अभी पिछले दिनों एक समाचार था कि मुंबई का एक निजी क्षेत्र का बैंक अपने कर्मचारियों को समय से पहले बुलाता है, और समूह में बैठकर वे कर्मचारी पंद्रह मिनट तक कुछ नहीं करते हैं और तब अपना ऑफिस कार्य शुरू करते हैं। ऐसा करने से उनकी कार्यक्षमता बढ़ी है, वे उत्साहित, ऊर्जावान और तनाव रहित बने हैं।

हम भी एक बार ऐसा प्रयोग करके देख सकते हैं। सुविधानुसार पांच मिनट से लेकर एक घंटा तक जितना संभव हो, समय मिले हम भी कुछ न करें।

गीता में थ्री-डी

आगरा विश्वविद्यालय में पढ़ने वाला मेरा एक रिश्तेदार मिलने आया। उसे वापिस लौटने की जल्दी थी। कारण पूछा तो उसने बताया कि मेरी एम.ए. की परीक्षा नजदीक है। दर्शनशास्त्र विषय में आठवां पेपर केवल भगवद्गीता पर आधारित है। गीता तो पढ़ी हुई है, रोज ही पढ़ते हैं, यह सोचकर तैयारी बिल्कुल नहीं की है। अब घबराहट हो रही है। मैं सोच रहा हूँ, इस बार परीक्षा नहीं दूँ। अगली बार पूरी तैयारी करके ही परीक्षा दूँगा।

इसी संदर्भ में उसे मैं अपने गुरुजी के पास मिलाने ले गया। वहां उसने अपनी समस्या बताई। गुरुजी ने पेपर का सैट-अप और लिखने की कपेसिटी पूछी तो उसने बताया कि ''अटेंप्ट एनी फाइव क्वेश्चन वला फार्मेट है। लिखने की मेरी स्पीड भी ठीक ही है, लेकिन तैयारी बिल्कुल नहीं है।

गुरुजी ने तब गीता का ''थ्री-डी फार्मूला'' उसे बताया। डिटेचमैंट-डिवोशन और डैडीकेशन। और कहा कि तुम तो ये तीन शब्द याद रखना। इन तीन बिंदुओं को केंद्र में रखकर प्रत्येक प्रश्न का विस्तार से उत्तर लिख देना। बस हो जाएगा तुम्हारा काम।

डिटेचमैट, डिवोशन और डैडीकेशन- यह है थ्री डी फार्मूला। ये तीन शब्द याद रखना। पूरी गीता से संबंधित किसी भी प्रश्न का उत्तर इन तीन शब्दों के इर्द गिर्द ही घूमता है।

परीक्षा के बाद आभार प्रकट करने वह वापिस आया तो उसने बताया कि इस पेपर में उसे डिस्टिंक्शन 78% प्रतिशत अंक मिले हैं। गुरुजी ने और स्पष्ट किया कि ये तो हुआ परीक्षा का मामला। लेकिन इस थ्री-डी का दैनिक जीवन में प्रयोग किया जाये तो जीवन में भी हमें डिस्टिंक्शन मिल जाता है।

अब इस थ्री डी का शब्दार्थ तो सरल है, हम सब जानते भी हैं। अनासक्ति, भक्ति और समर्पण। लेकिन इनका भावार्थ समझना, जीवन में इन्हें अपनाना, इतना सरल नहीं है। इसके लिए अनेक मनीषी संतों ने अलग-अलग प्रकार से समझाया है। ईमानदारी और निष्ठा से इनको समझकर, इनका पालन जीवन में किया जाना चाहिए।

C/o मनीषा साड़ी सेंटर एम.डी.वी. कॉलोनी, बीकानेर, मो. 09413278960

सकारात्मकता

नेतृत्व एवं प्रबंधन

❒ रामेश्वर लाल वर्मा

वर्तमान में बदलते परिवेश के साथ संस्था प्रधान को कई तरह की भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ रहा है। विद्यालय में आप अपनी टीम के बॉस है, तो विभाग द्वारा जो लक्ष्य आपको दिये गये है, उनको पूर्ण करने का दायित्व आपका एवं आपकी टीम का ही है। संस्था प्रधान को टीम भावना के साथ कार्य करना होता है। लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सदैव अपनी टीम के सदस्यों के साथ सकारात्मक दृष्टिकोण अपनावें तथा लक्ष्य के प्रति सजग करते रहें। इसके उपरान्त प्रत्येक कार्मिक एवं शिक्षक को पता होना चाहिए कि आप उनसे क्या चाहते है, एवं उनके निर्धारित कार्य के प्रति मानदण्ड क्या है, उसके अनुसार लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। लक्ष्य तय होंगे एवं योजना होगी तो वे पूरी लगन से काम में जुट जाएंगे।

प्रत्येक कार्य को प्लानिंग के अनुसार किया जाना आवश्यक है। कार्य योजना बनाते समय संस्था प्रधान का दायित्व है कि अपनी टीम के प्रत्येक सदस्य को सहयोग करे। इससे टीम भावना विकसित होती है। कार्य भी समय पर पूर्ण हो जाता है। संस्था प्रधान अपने आपको सूचनाओं से अपडेट रखें, किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए नकारात्मकता को जगह नहीं देना चाहिए। हमेशा टीम के सदस्यों को आशावादी दृष्टिकोण अपनाने के लिए कहना ठीक होगा, कई बार वातावरण ऐसा बन जाता है कि बुराई अच्छाई से ज्यादा बलवान है, बुराई से डरते है। यदि हम सत्य के मार्ग पर चल रहे है, तो रास्ते पड़ी हर रस्सी को सांप समझने की भूल से बचना होगा।

आपको अपनी योग्यताओं में सुधार के लिए प्रयास करना होगा। अगर कोई टीम का सदस्य अच्छा काम कर रहा है, किन्तु अनुशासित नहीं है तो विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि विद्यालय के शैक्षिक वातावरण पर प्रभाव पड़ता है। ऐसे शिक्षक को रिवार्ड नहीं मिलना चाहिए। वहीं ऐसे शिक्षक जो अनुशासित तो है परन्तु अच्छा काम नहीं कर रहा है उन्हें भी रिवार्ड देने के लिए बचना चाहिए। हमें प्रेरित करना होगा कि सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए अनुशासन में रहकर अपने कार्यों को पूर्ण करें। कई बार आपको सख्ती भी करनी पड़ती होगी। आपको सख्ती बरतते समय कुछ सावधानी की आवश्यकता है। आपके द्वारा उठाया गया कदम सेवा नियमों के अनुसार मूल्यों को ध्यान में रखते हुए ही होना आवश्यक है, यह भी ध्यान रहें कि मूल्यों को ध्यान रखने में विभागीय एवं सेवा नियमों की उपेक्षा नहीं कर देवें।

प्रत्येक कार्य का सही आकलन करना आवश्यक है। प्रत्येक कार्य के लिए परिवीक्षण को प्राथमिकता देना आवश्यक है परिवीक्षण से टीम के सदस्यों को सजग किया जाता रहा है।

बॉस होने के कारण नोडल अधिकारी की भूमिका में भी कार्य करना होता है। उच्चाधिकारियों से प्राप्त आदेश परिपत्रों को अपने क्षेत्र के अन्तर्गत पहुंचाना उन विद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं को उच्च अधिकारियों तक पहुंचाना तो आम बात है आप अपने कम्प्यूटर को सूचनाओं से अपडेट रखें तो आपको कार्य करने में सहजता होगी। ज्यादा अच्छा होगा हम कम्प्यूटर पर स्वयं कार्य करें।

'तनाव प्रबन्धन' पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। अवसर मिलने पर अपने सहयोगी सदस्यों एवं बालकों की उपलब्धियों व अच्छाइयों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा कीजिए। अपनी क्षमताओं को पहचानिये, अपनी विफलताओं को भूलते जाइये सफलता को याद रखें आप विजयी होंगे। जीवन में सकारात्मक रुख अच्छा होता है। बालकों की निर्मल हँसी आपके लिए है, फिर आनन्द लेने में पीछे क्यों है? फिर देखिए आपका तनाव कैसे भागता है, वह ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलेगा ऐसा मेरा विश्वास है। "गति ही जीवन है और गति मिलती है सक्रियता से।"

जो काम अभी हो सकता है उसे घंटे भर बाद करने की मनोवृत्ति आलस्य की निशानी है।

विद्यालय में अच्छे शैक्षिक वातावरण के लिए आपकी टीम एवं बालकों के लिए योग व्यायाम अत्यंत उपयोगी हो सकता है। एकाग्रता एवं तनावमुक्ति के लिए आवश्यक प्रतीत होता है। न सिर्फ स्वास्थ्य शिक्षण देगा वरन् अनेक भ्रांतियों के निवारण में भी उपयोगी सिद्ध होगा। मानसिक स्वास्थ्य के लिए प्राणायाम का अभ्यास सर्वोपरि है। प्राणायाम से मन, चित्त शांत व स्थिर होता है जो शिक्षण के लिए उपयोगी है।

संस्था प्रधान को अपने विद्यालय में बालकों को योग व्यायाम से मिलने वाले सारे लाभ से अवगत कराना चाहिए। योग आत्म साक्षात्कार अर्थात् ब्रह्मानन्द की प्राप्ति है। सूर्य नमस्कार एक सर्वांग व्यायाम है, व्यायाम होते हुए भी एक आसन है क्योंकि इसमें शारीरिक क्रियाओं के साथ ही श्वांस प्रक्रिया को भी नियंत्रित किया जा सकता है। बालकों में एकाग्रता बढ़ने से अध्ययन में रुचि बढ़ेगी। तन को शक्ति, मन को प्रफुल्लता मिलती है।

संस्था प्रधान को अपने विद्यालय के शैक्षिक एवं भौतिक उन्नयन के साथ-साथ स्थानीय प्रशासन को सहयोग, जनसहयोग, कैरियर, परामर्शक, स्वच्छता अभियान तथा अन्य सरकारी योजनाओं में समन्वय का कार्य भी करना होता है। आज के परिवेश में समाज, सरकार, शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षार्थियों एवं उच्च अधिकारियों से संस्था प्रधान को जो अपेक्षाएं है, उस पर खरा उतरना होता है हम कार्य शैली में समन्वय लाते हुए बहुआयामी व्यक्तित्व को उन्नति के लिए शिखर पर पहुँचा सकते है। नैतिकता शिक्षक को समाज में सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है जिसका निर्वाह हमें पूरी निष्ठा से करना चाहिए।

पुराना किला, सांभरलेक
जयपुर (राज.)-303604

आदेश-परिपत्र : जनवरी, 2016

1. आरटीई एक्ट 2009 की धारा 12(1)(ग) के प्रावधानान्तर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में 25 प्रतिशत निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित बालकों की प्रति बालक प्रतिपूर्ति पुनर्भरण राशि का किश्तवार भुगतान किए जाने पर नियमानुसार किश्तवार ऑडिट कार्य बाबत।
2. अधिकारियों/कर्मचारियों की सरकारी कार्यालयों में समय पर उपस्थिति के संबंध में।
3. राजकीय सेवा में कार्यरत शिक्षकों द्वारा वैयक्तिक अध्यापन (ट्यूशन) एवं कोचिंग संस्थाओं के संचालन/अध्यापन की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाए जाने के संबंध में।
4. राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में SIQE कार्यक्रम का प्रभावी संचालन।
5. रिक्त पदों पर समेकित पारिश्रमिक पर सेवानिवृत्त कार्मिकों का पुनर्नियोजन।
6. राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की बसों में विद्यार्थियों को देय रियायत का प्रचार/प्रसार करने के सम्बन्ध में।
7. Sections e-mail Address of Secondary Education Rajasthan, Bikaner

1. आरटीई एक्ट 2009 की धारा 12(1)(ग) के प्रावधानान्तर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में 25 प्रतिशत निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित बालकों की प्रति बालक प्रतिपूर्ति पुनर्भरण राशि का किश्तवार भुगतान किए जाने पर नियमानुसार किश्तवार ऑडिट कार्य बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः- शिविरा/प्रारं/आरटीई/सी/ऑडिट/18871/14-15/264 दिनांकः- 2-12-2015 ● उप निदेशक, प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा (समस्त) ● विषय : आरटीई एक्ट 2009 की धारा 12(1)(ग)के प्रावधानान्तर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में 25 प्रतिशत निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित बालकों की प्रतिबालक प्रतिपूर्ति पुनर्भरण राशि का किस्तवार भुगतान किये जाने पर नियमानुसार किस्तवार ऑडिट कार्य करने के संबंध में।

● प्रसंग : शिक्षा उप निदेशक (माध्यमिक) जयपुर के पत्रांक शिउनि/मा/जय/लेखा-1/फा-एजी/165/2015 दिनांक 17.11.15 एवं निदेशालय के समसंख्यक पत्रांक 197 दिनांक 27.5.14, पत्रांक 75 दिनांक 03.2.15 एवं पत्रांक 101 दिनांक 19.8.15

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के संबंध में निर्देशित किया जाता है कि आरटीई एक्ट 2009 की धारा 12(1)(ग) के प्रावधानान्तर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में दुर्बल वर्ग एवं असुविधाग्रस्त समूह के बालकों को विद्यालय की एंट्री लेवल कक्षा में कुल प्रवेशित बालकों के 25 प्रतिशत की सीमा तक निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेश उपरांत सत्यापित बालकों के संबंध में गैर सरकारी विद्यालयों को प्रति बालक प्रतिपूर्ति की पुनर्भरण राशि का भुगतान गैर सरकारी विद्यालयों के बैंक खातों में किए जाने का प्रावधान है। राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2011 के नियम 11 एवं राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों की पालना में संबंधित बीईईओ/डीईओ प्राशि/माशि कार्यालयों द्वारा पुनर्भरण की राशि गैर सरकारी विद्यालयों के बैंक खातों में अन्तरित की जाती है। **राज्य सरकार ने दिनांक 29.3.11 को अधिसूचना जारी कर दुर्बल वर्ग एवं असुविधाग्रस्त समूह को परिभाषित किया है।**

निदेशालय के समसंख्यक पत्रांक 197 दिनांक 27.5.14, पत्रांक 75 दिनांक 03.2.15 एवं पत्रांक 101 दिनांक 19.8.15 के द्वारा उप निदेशक प्रारंभिक शिक्षा/माध्यमिक शिक्षा कार्यालय स्तर पर अंकेक्षण दलों का गठन किया जाकर अंकेक्षण (ऑडिट) कार्य सम्पादित करने तथा ऑडिट रिपोर्ट संबंधित निदेशालय प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा को प्रेषित करने हेतु निर्देशित किया गया था परन्तु आदिनांक तक उप निदेशक कार्यालय से ऑडिट रिपोर्ट निदेशालय को अप्राप्त रही है इस संबंध में उप निदेशक माध्यमिक जयपुर ने अपने पत्रांक 165 दिनांक 17.11.15 के द्वारा कुछ बिन्दुओं के संबंध में मार्गदर्शन चाहा है। अतः समस्त उप निदेशक प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा को इस संबंध में पुनः निर्देशित किया जाता है कि-

1. निदेशालय के समसंख्यक पत्रांक 197 दिनांक 27.5.14, पत्रांक 75 दिनांक 03.2.15 एवं पत्रांक 101 दिनांक 19.8.15 का गहनता पूर्वक अध्ययन कर उनकी पालना सुनिश्चित करें।
2. आरटीई एक्ट 2009, राज्य नियम, 2011, राज्य सरकार द्वारा जारी अधिसूचना दिनांक 29.3.11 एवं राज्य सरकार व निदेशालय प्रारंभिक शिक्षा/ रा.प्रा.शि.प. जयपुर द्वारा समय-समय पर जारी आदेश/निर्देश जो आरटीई वेब पोर्टल **rte.raj.nic.in** पर अपलोड किये हुए हैं। संबंधित अधिकारीगण उनको डाउनलोड कर अपनी पत्रावली में आवश्यक रूप से संधारित कर लेवें।
3. सत्र 2012-13 में संबंधित बीईईओ/डीईओ प्रारम्भिक शिक्षा कार्यालयों द्वारा गैर सरकारी प्रा/उप्रा/मा/उमा विद्यालयों को मैन्युअल प्रक्रिया के द्वारा पुनर्भरण राशि का भुगतान किया गया है।
4. सत्र 2013-14 से संबंधित बीईईओ/डीईओ प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा कार्यालयों द्वारा पुनर्भरण राशि का भुगतान ऑनलाइन प्रक्रिया द्वारा संबंधित गैर सरकारी विद्यालयों के बैंक खातों में राशि अन्तरित करवाई जाती रही है। अतः इस संबंध में अंकेक्षण करते समय इस तथ्य की जांच आवश्यक करें कि संबंधित कार्यालय ने पास आर्डर (स्वीकृति आदेश) एवं कोषालय में बिल भेजने व संबंधित विद्यालयों को भुगतान संबंधी कार्य ऑनलाइन प्रक्रिया के माध्यम से ही किया गया है। यदि किसी प्रकार की विसंगति पायी जाती है तो ऑडिट रिपोर्ट में इसका उल्लेख किया जावे।

5. संबंधित कार्यालयों में पुनर्भरण से संबधित अभिलेख यथा- सत्यापन दल द्वारा किए गए सत्यापन कार्य की सत्यापन रिपोर्ट/निरीक्षण प्रतिवेदन, गैर सरकारी विद्यालय द्वारा प्रस्तुत किए गए क्लेम बिल (दावा प्रपत्र), संबंधित कार्यालयों द्वारा जारी किए गए स्वीकृति आदेश (पास आर्डर), कार्यालयों द्वारा बनाए गए ऑनलाइन बिल तथा संबंधित विद्यालयों के बैंक खातों में राशि जमा करवाने संबंधी अभिलेख संधारित किए जाते हैं। अंकेक्षण दल को विशेष रूप से सत्यापन दल द्वारा किए गए सत्यापन कार्य की सत्यापन रिपोर्ट/ निरीक्षण प्रतिवेदन की जांच इस प्रकार से की जानी है कि उसके सभी बिन्दुओं की सही-सही पूर्ति सत्यापन दल द्वारा की है यदि किसी बिन्दु की पूर्ति अस्पष्ट रूप से अथवा काट छाँट अथवा ऐसी स्थिति पायी जाती है जिससे पुनर्भरण राशि अथवा बालक की पात्रता के संबंध में किसी प्रकार की अनियमितता प्रकट होती है तो संबंधित सत्यापन दल का उत्तरदायित्व निर्धारित करते हुए नियमानुसार अनुशासनिक कार्यवाही करने के संबंध में ऑडिट रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जावे।
6. सत्यापन रिपोर्ट/निरीक्षण रिपोर्ट की जाँच के समय यदि किसी विद्यालय में निःशुल्क प्रवेशित बालकों की संख्या अप्रत्याशित रूप से अधिक अथवा विद्यालय द्वारा शेष बालकों से लिया जाने वाला वार्षिक शुल्क की राशि अत्यधिक अथवा अन्य प्रकार की परिस्थिति अंकेक्षण दल के समक्ष प्रकट होती है तो अंकेक्षण दल के द्वारा पुनर्भरण किए गए ऐसे विद्यालयों के अभिलेखों की जाँच करने हेतु आवश्यकतानुसार चयन करेंगे तथा संबंधित कार्यालयों को उन विद्यालयों की सूची देते हुए आदेश जारी करवाकर ऐसे गैर सरकारी विद्यालयों के वांछित अभिलेखों की ऑडिट कर सकेंगे तथा इसका उल्लेख ऑडिट रिपोर्ट में किया जाएगा।
7. संबंधित कार्यालयों में उपलब्ध समस्त सत्यापन रिपोर्ट/निरीक्षण रिपोर्ट की गहन जांच अंकेक्षण दल द्वारा की जावे। सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम, आरटीई एक्ट 2009, राज्य नियम 2011 एवं इस संबंध में राज्य सरकार द्वारा सत्यापन दलों के लिए समय-समय पर जारी दिशा निर्देशों की पालना सत्यापन दल द्वारा की गई अथवा नहीं, इस संबंध में ऑडिट रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाएगा।

अतः समस्त उप निदेशक प्रारंभिक/ माध्यमिक शिक्षा को यह निर्देशित किया जाता है कि उपरोक्त बिन्दुओं के अतिरिक्त नियमानुसार ऑडिट कार्य (अंकेक्षण कार्य) सम्पादित करेंगे। वर्तमान में गैर सरकारी विद्यालयों को करोड़ों रुपये की पुनर्भरण राशि का भुगतान राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है। इसमें किसी भी प्रकार की वित्तीय अनियमितता को रोकने हेतु प्रभावी तरीके से अंकुश लगाया जा सके। अतः इस कार्य को पूर्ण गंभीरता से लेते हुए सम्पादित करें।

● निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. अधिकारियों/कर्मचारियों की सरकारी कार्यालयों में समय पर उपस्थिति के संबंध में।

● राजस्थान सरकार, प्रशासनिक सुधार एवं समन्वय विभाग (अनुभाग-1) ● क्रमांक : प.24(3)प्र.सु./सम/अनु.-1/2015 जयपुर दिनांक : 16-10-2015 ● परिपत्र ● विषय : अधिकारियों/ कर्मचारियों की सरकारी कार्यालयों में समय पर उपस्थिति के संबंध में।

राज्य सरकार ने कार्यालयों में अधिकारी/कर्मचारियों की समय पर उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए समय-समय पर परिपत्र जारी कर कार्यवाही के निर्देश प्रदान किये हैं। जिनके अन्तर्गत जिला/उप खण्डीय स्तर पर निरीक्षण करने हेतु जिला कलक्टर एवं उप खण्ड अधिकारी/तहसीलदार को उनके क्षेत्र के समस्त कार्यालयों का आकस्मिक निरीक्षण करने हेतु अधिकृत किया गया है। इसके अतिरिक्त राज्य स्तर पर भी आकस्मिक निरीक्षण दलों का गठन किया गया है।

कुछ कार्यालयाध्यक्षों/संबंधित अधिकारियों द्वारा अपने अधीनस्थ कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों की उपस्थिति का निरीक्षण तत्परता से नहीं किया जा रहा है।

अतः समस्त राजकीय कार्यालयों एवं स्वायत्तशाषी संस्थाओं/निगमों/बोर्डों आदि के संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि वे अपने अधीनस्थ कार्यालयों का नियमित रूप से निरीक्षण कर अधिकारियों/कर्मचारियों की कार्य स्थलों पर न केवल समय पर उपस्थिति सुनिश्चित करें अपितु यह भी सुनिश्चित किया जावे कि कार्मिक कार्यालय समय के दौरान पूरे समय सीटों पर उपस्थित रहकर राजकार्य सम्पादित करें। निरीक्षण दलों से भी यह अपेक्षित है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों विशेषकर आमजन से जुड़े संस्थानों यथा विद्यालय, चिकित्सालय, पंचायत कार्यालय, सहकारी समिति, पानी-बिजली से जुड़े कार्यालय, तहसील/उपखण्ड कार्यालयों का नियमित रूप से उपस्थिति का निरीक्षण कर विलम्ब से उपस्थित होने वाले कार्मिकों के विरुद्ध नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करें।

● (शक्ति सिंह राठौड़) संयुक्त शासन सचिव ● कार्यालय निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/प्रारं/अभिलेख/ 1610/परिपत्र/2015 दिनांक : 20-11-15

3. राजकीय सेवा में कार्यरत शिक्षकों द्वारा वैयक्तिक अध्यापन (ट्यूशन) एवं कोचिंग संस्थाओं के संचालन/अध्यापन की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाए बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ● विषय : राजकीय सेवा में कार्यरत शिक्षकों द्वारा वैयक्तिक अध्यापन (ट्यूशन) एवं कोचिंग संस्थाओं के संचालन/अध्यापन की प्रवृति पर अंकुश लगाये जाने के संबंध में।

विभाग वैयक्तिक अध्यापन (प्राइवेट ट्यूशन) को शिक्षण व्यवस्था में एक बुराई मानता है। प्रयत्न यह किया जाना चाहिए कि वैयक्तिक अध्यापन की आवश्यकता ही न रहे। प्रायः यह देखा गया है कि वैयक्तिक अध्यापन विद्यार्थियों की संख्या के अधिक होने के कारण या अध्यापकों

द्वारा अपने दायित्व को न समझने के कारण अधिक पनपता है। उक्त कुप्रवृत्ति पर अकुंश लगाने हेतु रचनात्मक तथा अनुशासनात्मक दोनों प्रकार के उपाए किए जाने आवश्यक हैं। इस क्रम में महत्वपूर्ण बिन्दुओं का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है :-

1. संस्था प्रधान को शैक्षिक कार्य का परिवीक्षण वर्ष भर लगातार करते रहना चाहिए ताकि कक्षाओं मे अध्यापन सुचारु रूप से वर्ष भर नियमित चलता रहे तथा पाठ्यक्रम संतोषजनक तरीके से पूरा कर लिया जाए।
2. कमजोर विद्यार्थियों के लिए जहां भी आवश्यकता हो अलग से कक्षाएँ लगाई जानी चाहिए। उनके स्तर सुधार का कार्य सिद्धांतः विद्यालय का नियमित कार्य होना चाहिए।
3. परख व अर्द्धवार्षिक परीक्षा के प्रगति पत्र परीक्षाएँ समाप्त होते ही पंचांग में वर्णित तिथियों के अनुसार छात्रों को वितरित कर दिए जाने चाहिए ताकि अभिभावक को भी उसके बारे में स्थिति का ज्ञान हो सकें।
4. विद्यालय में नियमित रूप से आठों कालांश में अध्यापन किया जाए। छात्रों की उपस्थिति पर विशेष ध्यान दिया जाए। आठों कालांशों में छात्रों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए सभी कालांशों में उपस्थिति दर्ज की जाये तथा संस्था प्रधान कक्षा परिवीक्षण कार्य भी पांचवे से आठवें कालांश में सामान्यतः करें।
5. सामान्यतः उ.मा.वि. कक्षाओं में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित, लेखा शास्त्र, व अंग्रेजी एवं मा.वि. कक्षाओं में अग्रेंजी, विज्ञान व गणित आदि विषयों में अधिक ट्यूशन प्रवृत्ति रहती है। अतः इन विषयों के उचित समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण करना, अध्यापक डायरी संधारण कार्य व छात्रों से संस्था प्रधान सीधा सम्पर्क करें ताकि पलायन प्रवृत्ति को रोका जा सके।
6. सभी विषयों का पाठ्यक्रम समय पर पूर्ण हो इसके लिए संस्था प्रधान सभी अध्यापकों से प्रतिमाह पढ़ाये गए पाठ्यक्रम की प्रगति सूचना लिखित में प्राप्त करें तथा जो अध्यापक ऐसी लिखित में सूचना नहीं देता है उनके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही विभाग के सक्षम अधिकारी को प्रस्तावित करें।
7. प्रतिमाह होने वाले शिक्षक अभिभावक परिषद् की बैठक में छात्र की प्रगति के बारे में बातचीत करें तथा उन्हें प्रेरित करें कि वे छात्र को विद्यालय में पूरे समय में उपस्थित रहने के लिए पाबंद करें।
8. सभी विषयाध्यापकों से ट्यूशन नहीं करने के संबंध में शपथ पत्र सत्रारंभ में ही प्राप्त कर लेवें तथा प्रतिमाह ट्यूशन के बारे में लिखित जानकारी प्राप्त कर अग्रांकित प्रारूप में रजिस्टर संधारित करें।
9. प्रायोगिक कक्षाओं के लिए विषयवार चार्ट बनाकर प्रदर्शित किया जावें तथा उसी अनुसार प्रायोगिक कार्य सम्पन्न हो।
10. अध्यापकों को वैयक्तिक ट्यूशन करने की अनुज्ञा देने का अधिकार संबंधित संस्था प्रधान को होगा। बिना अनुमति कोई अध्यापक ट्यूशन नहीं कर सकेगा। उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं के लिए दो, उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए तीन विद्यार्थियों से अधिक ट्यूशन करने की अनुज्ञा नहीं दी जावेगी। ट्यूशन के कारण अध्यापक के विद्यालय में नियमित कार्य में व्यवधान आने पर ट्यूशन की अनुज्ञा निरस्त की जा सकेगी। वैयक्तिक अध्यापन की स्वीकृति के लिए संस्था प्रधान को प्रस्तुत किये जाने वाले प्रार्थना पत्र का प्रारूप परिपत्र के परिशिष्ट-1 में संलग्न है।
11. इसी प्रकार वर्तमान में राजकीय सेवा में कार्यरत अध्यापकों/कार्मिकों का रुझान अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को अध्यापन करवाए जाने के बजाए गैर-सरकारी तौर पर संचालित कोचिंग केन्द्रों में अध्यापन करवाए जाने की ओर अधिक बढ़ रहा है। ऐसे अध्यापकों/कार्मिकों के द्वारा गैर-सरकारी तौर पर संचालित कोचिंग केन्द्रों में अध्यापन कार्य प्रारंभ करवाए जाने से पूर्व नियमानुसार विभाग के सक्षम अधिकारी से स्वीकृति भी प्राप्त नहीं की जाती है। कुछ अध्यापकों/कार्मिकों द्वारा स्वयं के निजी कोचिंग केन्द्रों का संचालन बिना विभागीय स्वीकृति के किये जाने की शिकायतें निरंतर प्राप्त हो रही है। अतः सभी पहलुओं पर विचार करने के पश्चात् आपको निर्देशित किया जाता है कि ऐसे अध्यापकों को चिह्नित करें जो विभाग के सक्षम अधिकारी से अनुमति प्राप्त किये बिना निजी तौर पर संचालित कोचिंग केन्द्रों में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। इन अध्यापकों के विरुद्ध राजस्थान सिविल सेवा एवं आचरण नियमों के अन्तर्गत अविलम्ब अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रारंभ करें तथा जिन प्रकरणों में नियम विरुद्ध कार्यवाही किए जाने हेतु आप सक्षम नहीं है, उन प्रकरणों में आप अपनी तथ्यात्मक रिपोर्ट मय टिप्पणी के सक्षम अधिकारी को अग्रेषित करें। चिह्नित अध्यापक के विरुद्ध कार्यवाही किये जाने में आपके स्तर पर विलम्ब किए जाने की स्थिति में आपके विरुद्ध भी अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रस्तावित की जा सकती है।
12. विभागीय व्यवस्था के विपरीत ट्यूशन करने वाले अध्यापकों को लिखित चेतावनी देकर तत्पश्चात् सीसीए-17 के तहत दण्डात्मक कार्यवाही प्रस्तावित की जावे।

वैयक्तिक अध्यापन हेतु संधारित किए जाने वाले रजिस्टर का प्रारूप

क्रं. सं.	नाम अध्यापक	पद	वैयक्तिक अध्यापन करने वाले छात्रों का विवरण			कक्षा अध्यापक जिस कक्षा में विषय पढ़ाता है	वैयक्तिक अध्यापन को दिया जाने वाला समय	पारिश्रमिक	प्र.अ. द्वारा दी गई आज्ञा संख्या व दिनांक	अन्य विवरण
			क्रं. सं.	कक्षा	विषय					

जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक (प्रथम/द्वितीय) विद्यालय परिवीक्षण के दौरान छात्र/छात्राओं से व्यक्तिगत सम्पर्क कर वस्तुस्थिति ज्ञात करें। यदि कोई विभागीय नियमों की अवहेलना की स्थिति पाई जाए तो संबंधित के विरुद्ध कार्यवाही की जाए।

पूर्व निर्देशों के क्रम में इसकी पालन सुनिश्चित करें।

संलग्न : उपर्युक्तानुसार परिशिष्ट-1

● (विजय शंकर आचार्य) उप निदेशक (माध्यमिक), माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा-स/22459/13-14 दिनांक : 17.12.2015

परिशिष्ट–1

वैयक्तिक अध्यापन के लिए प्रार्थनापत्र

1. प्रार्थी का नाम (अध्यापक)
2. पद
3. विद्यालय का नाम
4. विद्यार्थी का नाम व कक्षा (विभाग सहित)
5. क्या विद्यार्थी अध्यापक द्वारा पढ़ाए जाने वाली कक्षा (विभाग) में पढ़ता है?
6. वैयक्तिक अध्यापन का विषय
7. इसी सत्र में इस से पूर्व वैयक्तिक अध्यापन का विवरण
8. विद्यार्थी द्वारा अध्यापक को दिया जाने वाला पारिश्रमिक
9. इस वैयक्तिक अध्यापन के लिए खर्च होने वाला समय (घण्टे प्रतिदन) (सप्ताह में कुल घण्टे)
   1. मैं घोषणा करता हूँ कि वैयक्तिक अध्यापन से मेरे विद्यालय के कार्य में कोई बाधा नहीं पहुँचेगी।
   2. मैं वैयक्तिक अध्यापन के विभागीय नियमों का पूर्णरूपेण पालन करूंगा।

तिथि हस्ताक्षर अध्यापक

मैं..... पिता/संरक्षक..... घोषित करता हूँ कि मैं..... को श्री..... सहायक अध्यापक/वरिष्ठ अध्यापक के पास पढ़ाना चाहता हूँ और रु. ..... नियमित मासिक पारिश्रमिक देता रहूँगा।

तिथि हस्ताक्षर अध्यापक

सस्वीकृति अधिकारी द्वारा आज्ञा

हस्ताक्षर सस्वीकृति अधिकारी

4. राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में SIQE कार्यक्रम का प्रभावी संचालन।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः उनि/सशि/SIQE/डीसीजी/2015-16/26 दिनांकः 06.12.2015 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, समस्त प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक समन्वित राउमावि/रामावि ● राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में SIQE कार्यक्रम का प्रभावी संचालन।

राज्य सरकार द्वारा जरिए पत्र क्रमांकः प.4(6) शिक्षा-1/2014 दिनांकः 11.02.2015 द्वारा समन्वित विद्यालयों के संचालन हेतु जारी दिशा-निर्देशों में राज्य के समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक सुधार हेतु बिन्दु संख्या 2.1 से बिन्दु संख्या 2.19 तक विस्तारपूर्वक निर्देश जारी किए गए थे। जारी निर्देशों की संदर्भित प्रति पुनः संलग्न है।

जारी निर्देशों के अनुरूप समन्वित विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं में (कक्षा 1 से 5 तक) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए SIQE (State Initiative for Quaility Education) कार्यक्रम शैक्षिक सत्र 2015-16 से प्रारंभ किया गया है। राज्य सरकार, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, एसआईईआरटी उदयपुर, यूनिसेफ, बोध शिक्षा समिति जयपुर के मध्य अप्रेल में MOU किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य बाल केन्द्रित शिक्षण (CCP) एवं सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विधा (CCE) के माध्यम से बच्चों की रुचि, गति, स्वभाव एवं व्यक्तिगत विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाना है।

प्राथमिक कक्षाएं ही शिक्षा की नींव है। विद्यालय स्तर पर संस्था प्रधान एवं शिक्षक प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि अध्ययनरत बच्चे स्वयं को अकेला महसूस नहीं करें। यदि संस्था प्रधान एवं अध्यापक इन कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रति भावनात्मक लगाव नहीं रखेंगे तो इन बच्चों को विद्यालय में आत्मीयता का अहसास नहीं होगा। अतः यह जरूरी है कि संस्था प्रधान एवं हैड टीचर प्रशासनिक दायित्व के साथ-साथ नैतिक एवं सामाजिक दायित्व का भी वहन करें।

इन तथ्यों को मद्देनजर रखते हुए संस्था प्रधान रुचि रखने वाले अध्यापक को हेड टीचर मनोनीत करने के लिए अधिकृत किया गया है। इसी के साथ कक्षा-कक्ष को लहर (Learning Enhance Activity in Rajasthan) के अनुरूप सुसज्जित करते हुए गतिविधि आधारित शिक्षण कार्य निष्पादन करने की अपेक्षा की गई है। ताकि कक्षा 1 से 5 के विद्यार्थी विद्यालय में निरन्तर माध्यमिक (कक्षा 1 से 10)/ उच्च माध्यमिक (कक्षा 1 से 12) तक जुड़े रहे। निम्नांकित बिन्दुओं के संबंध में संस्था प्रधानों का ध्यान आकर्षित किया जाता है-

- विद्यालय परिसर का सौंदर्यीकरण व स्वच्छता।
- कक्षा-कक्ष, विद्यालय परिसर विशेष रूप से शौचालयों की साफ-सफाई, उनमें जल आपूर्ति एवं स्वच्छ पेयजल व्यवस्था।
- प्रार्थना सभा में उपस्थिति एवं सहभागिता पर विशेष ध्यान।
- प्रार्थना सभा के बाद कक्षाओं में-

(i) अध्यापकों द्वारा बच्चों को बाल प्रार्थना, बालगीत, बाल कविताएं गाकर बताएं सिखाएं एवं अभ्यास करवाएं।

(ii) छोटे-छोटे प्रेरक प्रसंग-कहानियों एवं योग क्रियाओं को भी शामिल करें।

(iii) CCP एवं CCE के माध्यम से पाठ्य-वस्तु की प्रकृति के अनुरूप शाला स्तर पर निर्मित/सहज उपलब्ध सहायक सामग्री का उपयोग।

(iv) कक्षा-कक्ष में बच्चों के लिए साफ दरियां/दरी पट्टियां एवं ड्यूल डेस्क की उपलब्धता।

(v) प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापन कार्य करवाने वाले शिक्षकों को उनकी आवश्यकता अनुरूप सफेद/रंगीन कागज रीम, स्कैच पैन, वैक्स/पैंसिल कलर, ग्लेज्ड पेपर, सैलो टेप, गोंद, उपलब्ध करवाना एवं सदुपयोग सुनिश्चित करना।

(vi) प्रत्येक बच्चे के पोर्ट-फोलियो में उनके द्वारा हल की गई वर्कशीट, उनके बेस-लाइन एवं योगात्मक आकलन प्रपत्र आदि का संधारण।

(vii) कक्षा-कक्ष में बच्चों द्वारा किए गए कार्य को कक्षा-कक्ष की दीवारों पर डिस्पले, पर्याप्त गृह-कार्य देना।

(viii) लहर (Learning Enhance Activity in Rajasthan) के तहत कक्षा स्तर के अनुरूप दीवारों पर अंक, गिनती, पहाड़े, हिन्दी व अंग्रेजी में वर्णमाला तथा शब्द, कविताओं आदि का लेखन एवं चित्रांकन पेंटर से करवाना।

(ix) हैड टीचर टाइम-टेबल में कम से कम एक विषय कालांश का अध्यापन करावें।

(x) प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण कार्य एवं अध्यापक योजना डायरी का नियमित अवलोकन। प्रत्येक कक्षा में सामूहिक/उपसमूह, व्यक्तिगत कार्य, सतत आकलन एवं क्षमतावर्द्धन योजना के अनुरूप शिक्षण कार्य का परिवीक्षण।

(xi) संस्था प्रधान प्राथमिक कक्षाओं में अधिक समय देवें तथा बच्चों के साथ घुल-मिलकर वात्सल्य पूर्ण वातावरण बनायें।

- निर्धारित समयावधि में योगात्मक आकलन की सुनिश्चितता। द्वितीय एवं चतुर्थ योगात्मक आकलन के बाद शिक्षक-अभिभावक बैठक। (इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 12.10.2015 द्वारा पूर्व में दिशा निर्देश जारी)
- योगात्मक आकलन में पर्याप्त व्यापकता होनी चाहिए ताकि एक कक्षा में सभी स्तर के बच्चों को आकलन सूचकों के अनुरूप किया जा सके।
- प्रत्येक योगात्मक आकलन अगले टर्म के लिए आधार रेखा आकलन का कार्य करेगा। तदनुसार कक्षा में समूह निर्माण करना।
- कला शिक्षा, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा तथा कार्य शिक्षा कालांश में तदनुरूप गतिविधियां आयोजित करते हुए उन्हें विषय से इन्टीग्रेट करना।
- विद्यालय में बच्चों के लिए परिसर अनुरूप इण्डोर/आउटडोर खेल की व्यवस्था करना।
- पुस्तकालय के लिए प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए बड़े अक्षरों वाली पत्रिकाएं एवं पुस्तकें, कॉमिक्स यथा-मालगुड़ी डेज, नन्दन, चंपक, बालहंस, पंचतंत्र की कहानियां, सिंहासन बत्तीसी, एन.बी.टी., सी.बी.बी.टी. एवं गिजुभाई की बाल कहानियों की पुस्तकें।

समस्त जिला शिक्षा अधिकारी-माध्यमिक एवं समस्त समन्वित विद्यालयों के संस्था प्रधान उक्त निर्देशों के अनुरूप SIQE (State Initiative for Quaility Education) कार्यक्रम क्रियान्विति सुनिश्चित करवाएं। कार्यक्रम के क्रियान्वयन में लापरवाही पाए जाने पर संबंधित के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

● सुवालाल, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

5. रिक्त पदों पर समेकित पारिश्रमिक पर सेवानिवृत्त कार्मिकों का पुनर्नियोजन।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/संस्था/एफ-1ए/पु. नियुक्ति/2015 दिनांकः 26.12.2015 ● समस्त मण्डल उपनिदेशक, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा ● विषय : रिक्त पदों पर समेकित पारिश्रमिक पर सेवानिवृत्त कार्मिकों का पुनर्नियोजन।

1. वित्त विभाग की अधिसूचना दिनांक 01.12.2015 रिक्त पदों को भरने में लगने वाले समय को ध्यान में रखते हुए लोक हित में सेवानिवृत्त कार्मिकों जिन्होंने 65 वर्ष की आयु पूर्ण नहीं की है, समेकित मानदेय पर पुनर्नियोजन हेतु अनुमति प्रदान की है। वित्त विभाग द्वारा जारी अधिसूचना की प्रति संलग्न है।
2. माध्यमिक शिक्षा विभाग अन्तर्गत प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक/स्कूल व्याख्याता के पदों में प्रति माह अधिक संख्या में कार्मिक सेवानिवृत्त हो रहे हैं। आपके जिले में माह में सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों का विवरण आप शाला दर्पण से भी प्राप्त कर सकते हैं। आगामी माह विद्यार्थियों के अध्ययन एवं विद्यालय प्रबन्धन के लिए अति महत्त्वपूर्ण होने से आप सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों को विद्यालय में पुनःनियुक्ति प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें। पुनः नियुक्ति आवेदन प्रारूप भी संलग्न है।
3. विषयान्तर्गत की सफलता व्यापक प्रचार प्रसार के साथ-साथ आपकी लग्नशीलता आधारित होगी। मैं चाहूंगा कि राज्य सरकार द्वारा जारी इस अधिसूचना का अधिकतम उपयोग विद्यार्थी एवं विद्यालय हित में किया जावे।

संलग्न-उक्तानुसार

● निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर। ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/संस्था/एफ-1/पु.नियुक्ति/2015 दिनांक 26.12.2015

● GOVERNMENT OF RAJASTHAN FINANCE DEPARTMENT (RULES DIVISION) ● No. F.12(6)FD (Rules)/2009 Jaipur, dated : 01.12.2015 ● Notification

In exercise of the powers conferred by the proviso to Article 309 of the Constitution of India, the Governor of Rajasthan hereby makes the following rules further to amend the Rajasthan Civil Services (Pension) Rules, 1996, namely :-

1. Short Title and Commencement. - (1) These rules may be called the Rajasthan Civil Services (Pension) (Third Amendment) Rules, 2015. (2) They shall come into force with immediate effect.

2. Substitution of Rule 164 A. - The existing rule 164 A of the Rajasthan Civil Services (Pension) Rules, 1996 shall be substituted by the following, namely :-

"164A. Reappointment on consolidated remuneration.- Notwithstanding anything contained in rule 149 to 164, in cases where a post is lying vacant in any service and regular recruitment to the post shall take time and the post cannot be retained vacant in public interest, the retired Government servant who has not completed the age of 65 years may be reemployed by the concerned Administrative Department in the first instance for one year, if the post still remains vacant after expiry of one year, then the Administrative Department, after recording reasons for non filling of post, may extend the period of re-employment by

another one year. Beyond two years re-employment shall not be extended without the prior concurrence of Department of Personnel and Finance Department. Such re-employment shall be for the period till regularly selected persons are made available for appointment or till the reemployed person attains the age of 65 years, whichever is earlier. Such reemployed person shall be allowed consolidated remuneration as decided by the Government in Department of Personnel, from time to time. During the period of reemployment only casual leave shall be admissible and any other kind of leave with remuneration shall not be admissible. The Administrative Department before re-employement shall ensure that the post is clearly lying vacant and such reemployment shall not affect adversely the promotion opportunity of any employee and the person to be reemployed has satisfactory service record."

● By order of the Governor, (Siddharth Mahajan) Special Secretary to the Government, Finance (Budget)

पुनर्नियुक्ति सेवाएं लेने के लिए

आवेदन प्रारूप

1. सेवानिवृत्त कार्मिक का नाम .....
2. पिता का नाम.....
3. जन्म तिथि.....
4. अर्हताएं.....
5. मूल विभाग का नाम.....
6. सेवानिवृत्ति के पूर्व धारित पद.....
7. अनुभव.....
8. सेवानिवृत्ति के समय मूल वेतन (रनिंग पे बैण्ड वेतन + ग्रेड पे) (एलपीसी संलग्न है).....
9. मूल पेंशन राशि (पीपीओ संलग्न).....
10. धारित पद का वेतनमान..... (सेवानिवृत्ति के समय)
11. विभागाध्यक्ष/कार्यालय अध्यक्ष का प्रमाण पत्र..... (संलग्नानुसार)

सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी द्वारा हस्ताक्षरित किए जाने के लिए

वचनबंध

अधोहस्ताक्षरी राज्य सरकार के सेवानिवृत्त कार्मिकों को लगाने के लिए राज्य सरकार के नोटिफिकेशन सं. F.12(6)FD(Rules)2009 दिनांक 01-12-2015 में दिए गए सहमत निर्बधनों और शर्तों के अनुसरण में अपनी सेवानिवृत्ति के पश्चात् राज्य सरकार में पुनर्नियुक्ति सेवाओं को स्वीकार करने का इच्छुक है। अधोहस्ताक्षरी वचनबंध के उक्त निर्बधनों और शर्तों को मानने के लिए इसके द्वारा सहमत है और बचन देता है।

स्थान

दिनांक

सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी के हस्ताक्षर

6. राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की बसों में विद्यार्थियों के देय रियायत का प्रचार/प्रसार करने हेतु।

● राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम, जयपुर ● क्रमांक : एफ-4/मु./याता./लेखा ()/2015/ 1386 दिनांकः- 14.10.2015 ● निदेशक, प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षा, राजस्थान सरकार, बीकानेर। ● राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की बसों में विद्यार्थियों को देय रियायत का प्रचार/प्रसार करने के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि राजकीय एवं राजकीय मान्यता प्राप्त विद्यालय, महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को निगम की साधारण/द्रुतगामी बसों में निवास स्थान से शिक्षण संस्थान तक (50 कि.मि की परिधि में) आने-जाने हेतु यात्री के STUDENTS TRAVEL CONCESSIONS REGULATIONS, 1974 में किया हुआ है। इस प्रावधानों के अन्तर्गत विद्यार्थियों को यात्री किराए में छूट/रियायत प्रदान की जा रही है। जिसकी प्रति सुलभ संदर्भ हेतु प्रेषित की जा रही है।

कृपया राज्य सरकार की उक्त जन कल्याणकारी योजना का विद्यार्थियों में प्रचार/प्रसार कराने का श्रम करावें जिससे छात्र/छात्राओं को उक्त सुविधा का अधिकतम लाभ प्राप्त होना सुनिश्चित हो सके।

● राकेश राजोरिया, कार्यकारी निदेशक, (यातायात)

● क्रमांक :शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/विविध/12-13 दिनांक

प्रतिलिपि :

1. श्रीमान कार्यकारी निदेशक (यातायात) राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम, जयपुर को सूचनार्थ।
2. उप निदेशक (प्रारम्भिक शिक्षा) समस्त को भेजकर निवेदन है कि अपने अधीनस्थ जिला शिक्षा अधिकारियों को उपर्युक्त पत्र में प्रदत्त निर्देशानुसार कार्यवाही करने हेतु पाबन्द करावें।
3. जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक शिक्षा) समस्त को भेजकर निर्देशित किया जाता है कि उपर्युक्त पत्र में प्रदत्त निर्देशानुसार कार्यवाही करवाना सुनिश्चित करावें।

● जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

आवश्यक सूचना

व्यक्तिगत रूप से पत्रिका मंगवाने वाले ग्राहक पत्राचार का पूर्ण पता (यथा ग्राहक संख्या/ ग्राहक का नाम/पिता का नाम/ पता/ ग्राम/ पोस्ट/ ग्राम पंचायत/ पंचायत समिति/ तहसील/ वाया/ जिला/ पिनकोड) का उल्लेख करते हुए तथा जिन रामावि/राउमावि, राबामावि/ राबाउमावि. में पिनकोड के अभाव/अपूर्ण पते के कारण पत्रिका नहीं पहुँच पाती है तो तत्काल विद्यालय का पत्राचार का पूर्ण पता (यथा विद्यालय का नाम/ग्राम/पोस्ट/ग्राम पंचायत/पंचायत समिति/तहसील/ वाया/ जिला/ पिनकोड) ग्राहक/संस्था प्रधान स्वयं **'वरिष्ठ संपादक, शिविरा प्रकाशन, निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर'** को पोस्ट कार्ड पर लिखकर भिजवाएं, ताकि पत्रिका की पहुँच को सुनिश्चित किया जा सके।

-वरिष्ठ संपादक

7. Sections e-mail Address of Secondary Education Rajasthan, Bikaner

S.No.	SECTION	E-Mail ID	Particular
1	Director	commsecedu@yahoo.com	
2	GAD	sogad2015@gmail.com	संस्थापन–मंत्रालयिक, च.श्रे.क., पासपोर्ट NOC, भवन संबंधी
3	TT Cell	dir.sec.ttcell@gmail.com	शिक्षक प्रशिक्षण संबंधी, IASE, CTE
4	C Section	dircsecedu@gmail.com, ravi1111jeengar@gmail.com	व्याख्याताओं के संस्थापन संबंधी कार्य
5	Secondary Section	secondarydd@gmail.com	स्कूल मान्यता/क्रमोन्नति, Ph.ed अनुज्ञा, शिक्षक पुरस्कार
6	Sports Section	Sec.sportsbkn@yahoo.com	खेलकूद संबंधी, NCC, स्काउट संबंधी कार्य
7	Monitoring	secedumonit@yahoo.in	स्वीकृत व रिक्त पदों की सूचना संकलन, राज्य सरकार की बैठकों संबंधी कार्य
8	Statistics	ddstatesec@gmail.com	सांख्यिकी संबंधी कार्य
9	AB Sec	absecsecedu@gmail.com	प्रधानाध्यापक, व.उ.जि.शि.अ., प्रधानाचार्य एवं उच्च पदों के संस्थापन कार्य
10	Planning	secyojana@gmail.com	योजना एवं CSS संबंधी कार्य
11	Legal	seclegal@gmail.com	समस्त विधि संबंधी कार्य
12	Scholarship	dse.scholarship@gmail.com	छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन, देवनारायण गुरूकुल योजना संबंधी
13	VidhanSabha	vspbikaner2011@gmail.com	विधानसभा/संसद प्रश्नोत्तरी संबंधी कार्य
14	Shivira	shivirasecedubkn@gmail.com	शिविरा प्रकाशन
15	Viggilance	seceduvigilance@gmail.com	संघों के मांगपत्र/मान्यता, समाचार पत्र कटिंग, RTI, विडियो कान्फ्रेंसिंग आदि कार्य
16	Budget	caosecedu@gmail.com, nutanharshaao@gmail.com	बजट आवंटन संबंधी समस्त कार्य
17	Seniority	sec.seniority@yahoo.in	वरिष्ठता/नियम संबंधी कार्य
18	Grant in Aid	giabkn@gmail.com	बकाया अनुदान/RVRES समायोजन संबंधी कार्य
19	Estt. "F"	dirsecedu.estf.raj@gmail.com	व0अ0/अध्यापक/समकक्ष पदों के संस्थापन संबंधी कार्य
20	Depa. Enq.	departmentjaanch@gmail.com	व्याख्याता, प्र0अ0, प्रधानाचार्य, उच्च पद, निदेशालय के कार्मिकों के CCA–नियम 1958 के तहत विभागीय/संयुक्त जांच संबंधी कार्य
21	Sugam	samparkbikaner@gmail.com	सुगम एवं सम्पर्क पोर्टल संबंधी कार्य
22	Social	socialedu.gov@gmail.com	
23	RTE	secedurte@gmail.com	
24	ACR	desacrsec@gmail.com	गोपनीय प्रतिवेदन से संबंधित कार्य
25	Computer	compsecedu@gmail.com	
26	Adarsh School	rajadarshschool2017@gmail.com	

माह : फरवरी, 2016	**विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम**	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठक्रमांक	पाठ का नाम
1.2.2016	सोमवार	जयपुर	12	व्यवसाय अध्ययन		परीक्षामाला
2.2.2016	मंगलवार	उदयपुर	7	विज्ञान	11	जन्तुओं और पादप में परिवहन
3.2.2016	बुधवार	जयपुर	12	चित्रकला		परीक्षामाला
4.2.2016	गुरुवार	उदयपुर	6	संस्कृत	11	बकस्य प्रतिकारः
5.2.2016	शुक्रवार	जयपुर	7	संस्कृत	12	विद्याधनम्
6.2.2016	शनिवार	उदयपुर	10	हिन्दी	11	बालगोविन भगत
8.2.2016	सोमवार	जयपुर	8	संस्कृत	13	हिमालयः
9.2.2016	मंगलवार	उदयपुर	7	सामाजिक विज्ञान	12	जेण्डर भेदभाव की समझ
10.2.2016	बुधवार	जयपुर	9	विज्ञान	13	हम बीमार क्यों होते हैं
11.2.2016	गुरुवार	उदयपुर	5	हिन्दी	13	बुद्धिमान किसान
12.2.2016	शुक्रवार	जयपुर	6	सामाजिक विज्ञान	15	प्रारंभिक मानव
13.2.2016	शनिवार	उदयपुर	7	सामाजिक विज्ञान	13	हम और हमारे बाजार
15.2.2016	सोमवार	जयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	17	कचरे का निपटारा
16.2.2016	मंगलवार	उदयपुर	6	हिन्दी	14	लोकगीत
17.2.2016	बुधवार	जयपुर	8	हिन्दी	16	पानी की कहानी
18.2.2016	गुरुवार	उदयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	15	घर की सफाई और सजावट
19.2.2016	शुक्रवार	जयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	18	सवारियाँ और गाड़ियाँ
20.2.2016	शनिवार	उदयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	15	वृक्ष बचाओ
22.2.2016	सोमवार	जयपुर	7	विज्ञान	18	अपशिष्ट जल की कहानी
23.2.2016	मंगलवार	उदयपुर	6	हिन्दी	15	नौकर
24.2.2016	बुधवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	19	चित्तौड़गढ़ की सैर
25.2.2016	गुरुवार	उदयपुर	8	विज्ञान	17	तारे और सौर परिवार
26.2.2016	शुक्रवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम पुनरावलोकन सत्र 2015–16
27.2.2016	शनिवार	(1 मार्च से 22 मार्च, 2016 वार्षिक परीक्षा स्थानीय कक्षाएं) वार्षिक परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश।				

● निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

राबिया परम विदुषी महिला संत थीं। एक दिन लोगों ने देखा कि वे अपनी झोंपड़ी के बाहर कुछ ढूँढ़ रही हैं। लोगों के पूछने पर बोलीं-''मैं सुई ढूँढ़ रही हूँ।'' यह सुनकर लोग भी उनके साथ सुई खोजने लगे। बहुत देर तक सुई खोजने पर किसी ने पूछा-''आपकी सुई कहाँ गिरी थी, ताकि हम उसी स्थान पर उसे खोजें? ''राबिया ने कहा-''सुई तो मेरी झोंपड़ी के अंदर खोई थी।'' यह उत्तर सुन सभी लोग हँसने लगे और उनमें से एक व्यक्ति ने कहा-''जब आपकी सुई झोंपड़ी के अंदर खोई थी, तो आप उसे बाहर क्यों ढूँढ़ रही हैं?'' राबिया ने कहा-''अंदर झोंपड़ी में अँधेरा है, लेकिन बाहर रोशनी है, इसलिए मुझे अँधेरे में सुई कैसे मिलती?'' लोग बोले-''अंदर प्रकाश करो और ढूँढ़ो, सुई मिल जाएगी।'' इस पर राबिया मुस्कराते हुए बोलीं-''अपने जीवन में तुम सभी इस ज्ञान का प्रयोग क्यों नहीं करते? तुम बाहर आनंद की खोज करते हो; जबकि वह अंदर खोया है। तुम्हें अंदर प्रकाश की व्यवस्था करके उसे वहाँ ढूँढ़ना चाहिए न कि बाहर।''

नारी विमर्श

संस्कारों की प्रतिरूप नारी

❑ रामचन्द्र स्वामी

मानव जीवन के सर्वतोमुखी विकास के लिए संस्कार विशेष महत्व रखते हैं। संस्कार का आशय संस्करण, परिष्करण, निर्मलीकरण तथा विशुद्धिकरण है।

पाश्चात्य संस्कृति के कुप्रभाव ने मानवीय संस्कारों के साथ-साथ वर्तमान शिक्षा को भी संस्कारविहीन बना दिया है। आज का मानव आधुनिकता के बहाव में पाश्चात्य सभ्यता के रंग में इस कदर रंगा हुआ है कि वह अपनी महान संस्कृति से प्रतिदिन विमुख होता जा रहा है।

वर्तमान में शिक्षा का अति प्रचार-प्रसार होते हुए भी हर इंसान हताशा, निराशा, दुराशा व अत्याचार के घोर अपराधों की परतों से घिरता जा रहा है। बड़े अफसोस की बात है कि विश्व गुरु कहलाने वाले भारत का इंसान आज राष्ट्रीय चरित्र निर्माणार्थ मौलिक संस्कारों की पृष्ठभूमि पर परिवार, समाज, राष्ट्र के प्रति अपने अस्तित्व निर्वहन में पिछड़ता जा रहा है।

वर्तमान में संस्कारविहीन शिक्षा के शिक्षित युवक-युवतियाँ एक दूसरे के आचरण से विचलित हैं। संस्कारों के अभाव में उनमें अनुकूलन एवं सामंजस्य का सम्बल दूर होता जा रहा है। दुष्प्रभावित सामाजिक परिवेश, आर्थिक असंतुलन में अपने आपको संभालने में असमर्थ आज की युवा पीढ़ी धैर्य खोकर कर्तव्य-अकर्तव्य की गहरी खाई में आत्मघात को तत्पर है। आये दिन होने वाले दुराचार कन्या भ्रूण हत्या, दहेज की मांग, नारी अत्याचार इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

ऐसी विषम परिस्थितियों में संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण करना हम सभी के लिए एक गम्भीर चुनौती है। महिला जगत् ही इस चुनौती का सामना कर सकता है।

संस्कार जगाओ, समाज व राष्ट्र बचाओ कार्यक्रम में नारी अपनी अहम भूमिका अदा कर सकती है। आज आवश्यकता है समाज में नारी चेतना जागृत करने की, क्योंकि शिक्षित माँ ही बच्चों का अच्छी तरह पालन-पोषण कर उन्हें संस्कारित शिक्षा देकर, अच्छा नागरिक बना सकती है।

एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज के निर्माण में महिला शिक्षा महत्वपूर्ण आधार होती है। एक बालिका की शिक्षा दो परिवारों को शिक्षित करती है। वर्तमान में बढ़ते अपराधों के ग्राफ को कम करने के लिए नारी जगत् को आगे आना होगा। महिला ही अपने सुसंस्कारों से समाज में फैली अनेक बुराइयों का समाधान कर सकती है। शिक्षित महिला जनसंख्या विस्तार को रोकने के साथ-साथ गरीबी की समस्या, स्वास्थ्य संबंधित समस्या, बाल विवाह, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या जैसी दानवी कुरीतियों को दूर कर सकती है।

वर्तमान में समाज में बढ़ रहे घृणित कृत्यों को रोकने के लिए नारी जगत् को स्वयं आगे आना होगा, जन जागरण से लोगों की बीमार मानसिकता को बदलना होगा, बच्चों को जन्म से ये संस्कार देने होंगे कि नारी आदरणीय है, जननी है, लक्ष्मी है, सरस्वती है, दुर्गा है, नारी ही इस संसार रूपी सृष्टि की रचयिता है। नारी भोग की वस्तु नहीं है।

हमारा देश सुसंस्कारों के बल पर ही जगद्गुरु कहलाया था, आज उन्हीं संस्कारों की युवा पीढ़ी को आवश्यकता है। वर्तमान की शिक्षा में नैतिकता, मौलिकता, व्यावहारिकता जैसे सुसंस्कारों के परिवेश की अति आवश्यकता है।

देश और समाज में फैली कुप्रथाओं का समाधान कानून बनाने से या उसको क्रियान्वित करने से नहीं होगा। सरकार द्वारा नारी सशक्तीकरण व संरक्षण के कानून बनाने से ही नारी अत्याचार कम नहीं होंगे। इसके लिए इन घृणित कृत्यों का स्थाई समाधान नारी जगत को ही करना होगा। स्वयं नारी को आगे आकर समाज में नैतिक जागरूकता फैलानी होगी। लोगों की सोच बदलनी होगी, नारी को शक्ति कहा जाता है उस शक्ति को दिखाना होगा, जन चेतना जगानी होगी।

शिक्षा के पाठ्यक्रम में नारी महत्ता को स्थान देना होगा, बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना होगा, बालिका शिक्षा में नवाचार लाना होगा तभी ही समाज में फैली कुरीतियों को दूर किया जा सकेगा।

नारी जाति के लिए दो लाइनें:-

नारी सृष्टि के शाश्वत सत्यों से ओत प्रोत
निश्छल वात्सल्य की धार हो तुम,
नारी सुसंस्कारों की पालकी,
पुलकित स्नेहवर्षा, हर पल वंदनीय हो तुम।
(पूजनीये आधारभूते नारी शक्ते नमोस्तुते, नमोस्तुते, नमोस्तुते)

अध्यापक
रा.उ.मा.वि., जस्सूसर गेट, बीकानेर
मो. 9414510319

यदि तुम प्रेम के साक्षात दर्शन करना चाहते हो तो माता के भवभव नैनों को देखो।

शोध-आलेख

कालीबंगा से प्राप्त श्री राम एवं देवी सीता का पुरातात्विक साक्ष्य

❑ फ़ज़ल उल्लाह खाँ

एवं

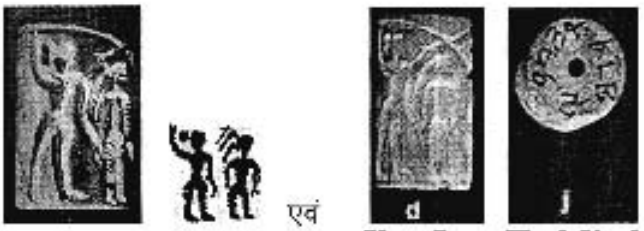

Photo Page - Fig. 9.51 a-j.

बायीं ओर से देवी सीता एवं श्री राम का कालीबंगा
से मिले टैरोकोटा पर 5000 वर्ष प्राचीन पुरातात्विक साक्ष्य

उक्त मृण प्रतिमाओं (टैराकोटा) में एक पुरुष एवं एक महिला का अंकन है। महिला आकृति को पुरुष के बायीं ओर (वामांग) खड़ी मुद्रा में दर्शाया गया है। इस प्रकार मृण प्रतिमा में देवी सीता को श्री राम के बायीं तरफ खड़े हुए बताया गया है। देवी सीता के सिर पर बालों की दो चोटियाँ बंधी हुई हैं, बालों की चोटियाँ सुन्दर रूप से गूँथकर बाँध रखा है। देवी सीता ने अपने दोनों हाथों को सीधी मुद्रा में नीचे कर रखा है। श्रीराम के सिर पर एक जूड़ा बँधा हुआ है। श्री राम ने अपना दायाँ हाथ ऊपर कर रखा है तथा बायाँ हाथ नीचे की ओर है। श्री राम का मुखमण्डल भी बायीं ओर देवी सीता की तरफ देखते हुए दर्शाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों बायीं ओर देख रहे हैं।

मेरा यह मत है कि प्रथम पुरुष आकृति के सिर पर केवल एक जूड़ा बंधा है। ये श्री राम है। वामांग महिला आकृति के सिर पर दो चोटियां बंधी हुई है। ये देवी सीता है। हिन्दू धार्मिक मान्यता के अनुसार परम्परागत रूप एवं प्राचीन काल से एक पुरुष आकृति के साथ बायें हाथ (वामांग) की तरफ खड़ी महिला के अंकन को देवी सीता के रूप में देखा व पहचाना जाता है। ये मृण प्रतिमा कालीबंगा से मिली है। इसका आकार लगभग 8×6 सेन्टीमीटर है एवं उक्त बेलन के आकार के बंध पर मृण प्रतिमाओं का कालीबंगा संग्रहालय की पुरापंजिका में इन्द्राज संख्या 9734 पर दर्ज है। इसका आकार लम्बाई में 20 मिलीमीटर एवं गोलाई 12 मिलीमीटर के लगभग है। *1 इस प्रकार सिलइनाड्रिकल (वर्तुलाकार/बेलन के आकार का) मोहनजोदड़ो एवं वेस्ट एशिया से भी मिले है। कालीबंगा पुरास्थल का 3000 ईसा पूर्व माना जाता है। इस बेलनाकार पर तीन आकृतियां विद्यमान है। बायीं ओर से प्रथम आकृति के सिर पर दो चोटियां बंधी है। द्वितीय आकृति के सिर पर बालों का एक जूड़ा बँधा हुआ है। तृतीय आकृति के ऊर्ध्व भाग में मानवाकृति के सिर पर बालों का एक जूड़ा बँधा हुआ है तथा अधोभाग शेर की पशु आकृति में दर्शाया है। ऐसा प्रतीत कि प्रथम दो आकृति का अधोभाग बलशाली शेर की आकृति में बताया गया है।

उक्त मृण प्रतिमा एवं चिह्नित (आहत) मुद्राओं पर अंकित मानव-आकृतियों के हाथ व अंगुलियों की बनावट, पुरुष आकृति के सिर पर बँधा जूड़ा एवं महिला आकृति के सिर पर बँधी दोनों चोटियों में एकरूपता एवं समानता है। यह एक शोध परक तथ्य है। चिह्नित (आहत) मुद्राओं का प्रचलन काल 600-200 ईसवी माना जाता है।

उक्त मुद्राएं J.N.S.I.LXII-III 2000-01*2 के पृष्ठ संख्या 24 से 28 ''राजस्थान के प्राचीन सिक्के संस्करण वर्ष 2005 तथा पुस्तक "ऐतिहासिक मुद्राएँ" संस्करण वर्ष 2005 सिक्का क्रमांक संख्या (6 व 7) में प्रकाशित हैं।

राजस्थान में रैढ़ नगर (टोंक) विराटनगर (बैराठ), इस्माइलपुर, सांभर, जमवारामगढ़ (जयपुर), नगरी (चित्तौड़), महवा देव जी (बूंदी), आहड़ (उदयपुर), नोह (भरतपुर), गुरारा (सीकर) आदि विभिन्न स्थानों पर पुरातात्विक उत्खनन या संयोगवश घरों, खेतों में खुदाई करते समय भारतीय मुद्रा में इतिहास के प्राचीनतम चिह्नित (आहत) लगभग 7180 सिक्के मिले है। हिन्दू धार्मिक मान्यता के अनुसार परम्परागत रूप से एवं प्राचीन काल से दो पुरुषों के साथ बायें (वामांग) हाथ की तरफ खड़ी महिला के अंकन को देवी सीता, श्रीराम एवं श्री लक्ष्मण के रूप में देखा व पहचाना जाता रहा है। इन विभिन्न दफीनों में इस प्रकार की 195 मुद्रा मिली है। भारत के अन्य क्षेत्रों में दफीनों से भी इस प्रकार की मुद्राएं प्राप्त हुई है। *2 (J.N.S.I.LXII-III 2000-01)

आहत सिक्कों पर जॉन एलन ने इन्हें ''थ्री मैन'' *3 एवं डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त ने इन्हें "तीन मानवाकृतियां" *4 लिखा है। मेरा यह मत है कि यह "थ्री मैन" नहीं हैं, बल्कि दो पुरुष एवं एक महिला आकृति है।

इस प्रकार इन सिक्कों पर ''थ्री मैन'' में बीच की आकृति श्री राम की है, इनके बायें हाथ की तरफ दो चोटियाँ अथवा तीन जूड़ों वाली आकृति देवी सीता की है, जो प्रत्येक सिक्के पर श्री राम के वामांग पर ही दर्शायी गई है। राजस्थान के विभिन्न दफीनों से मिले 7180 चिह्नित (आहत) सिक्कों में से 135 मुद्राओं पर श्री लक्ष्मण, श्रीराम एवं देवी सीता का अंकन मौजूद है। इस प्रकार की मुद्राएं समस्त भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में मिली हैं। दक्षिण भारती क्षेत्र अमरावती हॉर्ड में भी इस प्रकार की मुद्राएं प्राप्त हुई है।

लगभग 300 से अधिक अलग-अलग प्रकार के चिह्नित (आहत) सिक्कों की पहचान हो चुकी है। इन सभी प्रकार के सिक्कों पर सूर्य के चिह्न का अंकन मिलता है। लेकिन श्रीराम (तीन मानव आकृतियों) के अंकन वाले 9 प्रकार के चिह्नित (आहत) सिक्कों पर सूर्य का अंकन नहीं है। इन

सिक्कों पर सूर्य के स्थान पर श्रीराम का अंकन है। क्योंकि भगवान श्री राम स्वयं सूर्यवंशी थे। इसलिए श्री राम के अंकन वाली मुद्राओं पर सूर्य का अंकन 9 प्रकार के निम्नांकित चिह्नित (आहत) मुद्राओं पर नहीं किया गया है।– (फलक–1 व 2)*5

*5	लेखक की	तालिका संख्या– प्रथम सूर्य के अंकन वाली मुद्राएँ	लेखक की		तालिका संख्या–द्वितीय सूर्य के स्थान पर श्री राम के अंकन वाली मुद्राएँ
क्रम संख्या	पुस्तक में सिक्का क्रमांक संख्या	(1) षड्रचक्र, (2) सूर्य (3) तीन पहाड़ियों पर अर्द्ध चन्द्रमा के चिह्न अंकित हैं। शेष चिह्न (4) व (5) दोनों तालिकाओं में एक समान मुद्रित किये गये हैं।	पुस्तक में सिक्का क्रमांक संख्या	राजस्थान से प्राप्त मुद्राओं की संख्या	(1) लक्ष्मण, (2) राम एवं (3) सीता के चिह्नों का अंकन है। शेष चिह्न (4) व (5) दोनों तालिका में एक समान मुद्रित किये गये है।
1.	165		209	6 मुद्राएँ	
2.	12		210	3 मुद्राएँ	
3.	192 / 198		211	4 मुद्राएँ	
4.	189		212	32मुद्राएँ	
5.	190		213	2 मुद्राएँ	
6.	187		214	3 मुद्राएँ	
7.	168		215	20 मुद्राएँ	
8.	184 से 186		216 से 218	64मुद्राएँ	
9.	159		219	1 मुद्रा	

उक्त तालिका संख्या–प्रथम में क्रमां संख्या (1)(2)(3) पर षड्रचक्र, सूर्य एवं तीन पहाड़ियों पर अर्द्ध चन्द्रमा का अंकन किया गया है। शेष दो चिह्न क्रमांक संख्या (4) व (5) प्रत्येक नौ प्रकार के सिक्कों पर अलग–अलग अंकित है। तालिका संख्या–द्वितीय में प्रथम चिह्न क्रमांक संख्या (1)(2)(3) श्री लक्ष्मण, श्री राम एवं देवी सीता के हैं। इस प्रकार दोनों तालिकाओं में इन नौ प्रकार की मुद्राओं पर (1)(2)(3) षड्रचक्र, सूर्य एवं तीन पहाड़ियों पर अर्द्ध चन्द्रमा के स्थान पर श्री लक्ष्मण, श्री राम एवं देवी सीता का अंकन किया गया है। दोनों तालिकाओं में क्रमांक संख्या (4) व (5) के चिह्न एक समान रखे गए हैं। Rajasthan History Congress Proceeding Volume-XXIX के पृष्ठ संख्या 197–205 पर प्रकाशित *5 तथा (इतिहास एवं भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के 15 वें राष्ट्रीय सेमीनार दिनांक 23–24 जनवरी, 2015 के सारांश निरूपिका में प्रकाशित)।*6

उक्त दोनों तालिकाओं से स्पष्ट है कि श्रीराम के अंकन वाली उक्त नौ प्रकार की मुद्राओं पर सूर्य का अंकन नहीं किया गया है। उक्त नौ प्रकार की मुद्राओं को छोड़कर शेष अन्य सभी प्रकार चिह्नित मुद्राओं पर सूर्य का चिह्न आवश्यक रूप से मिलता है। इस प्रकार की सूर्य के अंकन वाली 300 से अधिक चिह्नित (आहत) मुद्राओं की पहचान हो चुकी है।

श्री हनुमान जी को भगवान श्री राम के सम्मुख नमन मुद्रा में दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त सिक्के पर पर्वत व दो टीलों के बीच में जड़ी–बूटी का अंकन है।

"दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्" ||31||*7

अर्थ– जिनकी दायीं ओर लक्ष्मण जी, बायीं ओर जानकी जी (सीताजी), और सामने हनुमान जी विराजमान हैं, उन रघुनाथ जी (श्री राम) की मैं वन्दना करता हूँ। ("ऐतिहासिक मुद्राएँ" सिक्का क्रम संख्या-9 देखें)*8

मुद्राओं पर देवी–देवताओं का अंकन भिन्न स्तर पर अति प्राचीनकाल से ही देखा जा सकता है। प्राचीनकाल के ग्रीक मुद्राओं पर अपोलो, ज्यूस, एथेना आदि देवी–देवताओं का अंकन कर धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति की गयी है।*9

कुषाणकालीन मुद्राओं पर हेलिओस, मीरो, माओ, एरदो, नाना 10* आदि देवी–देवताओं को प्रदर्शित किया गया है। भारतीय इतिहास में गुप्तकाल को मुद्रा इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। समुद्रगुप्त के दण्डधर प्रकार की मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा को अग्निवेदिका 11* में आहुति देते हुए दर्शाया गया है। गुप्तकाल की मुद्राओं के पृष्ठभाग पर देवी

12* (लक्ष्मी), कार्तिकेय 13* देवता आदि का अंकन मिलता है। इण्डो–सैनियन मुद्राओं के पृष्ठभाग पर अग्निवेदिका 14* का अंकन किया गया है। प्रतिहार शासकों ने आदि–वराह के मुद्राओं का प्रचलन करवाया। गांगेयदेव प्रकार के मुद्राओं पर चतुर्भुजी पद्मासन लक्ष्मी का अंकन किया गया। अश्वारोही एवं वृषभ प्रकार के मुद्राओं पर नन्दी को दर्शाया गया है।

इसी प्रकार मुस्लिमकाल के मुद्राओं पर कलमा एवं खलीफाओं के नाम लिखवाकर धार्मिक भावनाओं को अभिव्यक्त किया गया है, अतः भारतीय इतिहास के प्राचीनतम चिह्नित (आहत) मुद्राओं पर देवी सीता, भगवान श्री राम एवं श्री लक्ष्मण के साथ श्री हनुमान जी का अंकन पाया जाना हिन्दू धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति माना जा सकता है। "पुरासम्पदा" वर्ष 2010–11 पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, जयपुर में शोध पत्र प्रकाशित किया गया है।

कालीबंगा क्षेत्र से डॉ. एल.पी. टैसीटोरी द्वारा सन् 1916–17 ई. खोजे गये तथा संग्रहालय में प्रदर्शित प्रागैतिहासिक ताम्र उपकरणों का विवरण कुल 18 जिनमें तीर फलक–2 मछली पकड़ने का कांटा–2, मनका–1, अंगूठी (छल्ला)–3, छैनी/मेखनी/कील–5, एवं मुद्राएं–5 पुरापंजिका में क्रमांक संख्या 2237 पर दर्ज है। इनमें क्रमांक संख्या 14 से 18 चिह्नित (आहत) मुद्राएं है। विभागीय "कुषाणकालीन सिक्कों की प्रदर्शनी" वर्ष 2015 के फोल्डर में पृष्ठ संख्या 8–9 पर इन प्रकाशित किया गया है।*15 यह चिह्नित (आहत) मुद्राएं संग्रहालय की डॉ. एल.पी. टैसीटोरी उत्खनन दीर्घा के टेबिल शोकेस में प्रदर्शित है। इस प्रकार की मुद्राओं पर अंकित चिह्नों को डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त "भारत के पूर्वकालीन सिक्के" पुस्तक में पृष्ठ सं.–31 व 32 पर दक्षिण पंजाब (जांगल) प्रदेश से प्राप्त होना प्रकाशित कर रखा है।

क्र. सं.	संग्रहालय में इन्द्राज़ संख्या	*13 कलापुरासामग्री अग्रभाग	कलापुरासामग्री पृष्ठभाग	ताम्र कला पुरासामग्री का प्रकार, आकार एवं भार
1)	पुरापंजिका–4 पृष्ठ सं. 77–78 क्रमांक सं. 2237 पर क्रम संख्या–(14)			चिन्हित (आहत) मुद्रा। आकार 3.5 X 1.5 से.मी.। भार: 3.41 ग्राम।
2)	पुरापंजिका–4 पृष्ठ सं. 77–78 क्रमांक सं. 2237 पर क्रम संख्या–(15)			चिन्हित (आहत) मुद्रा। आकार 2.4 X 1.3 से.मी.। भार: 2.71 ग्राम।
3)	पुरापंजिका–4 पृष्ठ सं. 77–78 क्रमांक सं. 2237 पर क्रम संख्या–(16)			चिन्हित (आहत) मुद्रा। आकार 2.3 X 1.5 से.मी.। भार: 1.88 ग्राम।
4)	पुरापंजिका–4 पृष्ठ सं. 77–78 क्रमांक सं. 2237 पर क्रम संख्या–(17)			चिन्हित (आहत) मुद्रा। आकार 1.9 X 1.3 से.मी.। भार: 1.89 ग्राम।
5)	पुरापंजिका–4 पृष्ठ सं. 77–78 क्रमांक सं. 2237 पर क्रम संख्या–(18)			चिन्हित (आहत) मुद्रा। आकार 2.7 X 2.8 से.मी.। भार: 10.16 ग्राम।

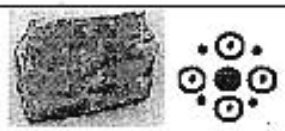

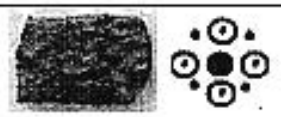

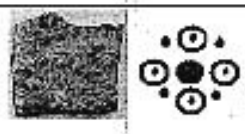

उपर्युक्त पुरातात्विक साक्ष्य एवं उपलब्ध तथ्यों के आधार पर श्रीराम का यह अति प्राचीन पुरातात्विक साक्ष्य हो गया है। कालीबंगा पुरास्थल का काल 3000–2000 ईसा पूर्व निर्धारित है। इस काल में लिपि का विकास नहीं हुआ था। केवल चिह्नों के आधार पर सम्राट केन्द्रीयता, टकसाल एवं धार्मिक अभिव्यक्ति आदि की जानकारी आमजन को दी जाती रही होगी। इसलिए कालीबंगा की मृण प्रतिमा (टेराकोटा) का काल 3000–2000 ईसा पूर्व एवं चिह्नित (आहत) मुद्राओं का काल 600–200 ईसा पूर्व निर्धारित है। इन मानव आकृतियों की समानता के आधार पर श्रीराम का यह अति प्राचीन पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध हो गया है।

कालीबंगा (हनुमानगढ़) से डॉ. एल.पी. टैसीटोरी द्वारा प्राचीन चिह्नित (आहत) मुद्राओं की प्राप्ति महत्वपूर्ण है। इस तथ्य एवं साक्ष्य से स्पष्ट है कि यहाँ मिले अवशेषों के आधार पर कालीबंगा सभ्यता की पूर्व हड़प्पा–काल (प्री–हड़प्पा) 2400–2250 ई.पू. तथा हड़प्पा काल (अर्ली–हड़प्पा) 2200–1700 ई.पू. दो भागों में विभक्त किया गया है। ताम्र सामग्री के साथ प्राचीन चिह्नित (आहत) 'मुद्राओं' का मिलना आहत मुद्राओं की पुनः तिथि निर्धारण में सहयोगी सिद्ध रहेगा। उक्त कलापुरासामग्री से 3000 ईसवी पूर्व विकसित भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति जानकारी प्राप्त होती है। इसके अध्ययन से इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण सहयोग मिलेगा।

चीनी यात्री फाह्यान (390–414 ईसवी), संयुगन (518 ईसवी) एवं हेनसांग (629 ईसवी) द्वारा उल्लेखित पुरासम्पदा के खण्डहरों पर अध्ययन के साथ चिह्नित मुद्राओं का काल निर्धारण किया जाना महत्वपूर्ण शोध का विषय है। अतिप्राचीन किलों एवं गढ़ियों में प्राचीन की दीवारों का ऊपरी भाग सपाट मिलता है तथा गढ़ियों के बीच में एक छोटा कमरानुमा किला रहता है जिससे केवल एक व्यक्ति ही आ जा सकता है। प्राचीन समय में समस्त युद्ध मनुष्य के बल पर लड़े जाते थे। इसलिए इस छोटे कमरेनुमा किले में राजा अथवा सेनापति अन्तिम समय तक लड़ता था। बाद के काल में किलों की प्राचीरों पर कंगूरे बनाये जाने लगे थे।

मौर्यकाल में कौटिल्य द्वारा तत्कालीन प्रशासनिक, न्यायायिक, राजनीतिक एवं सामाजिक कार्य प्रणाली का वर्णन अर्थशास्त्र में किया है। इसमें भी सुरक्षा की दृष्टि से किले बनाने का विवरण किया गया है। छोटी पहाड़ियों पर बने यह किले (गढ़ियां) मौर्य काल के ही है। इन्हीं मुख्य दीवारें सपाट है तथा इनके बीच में एक छोटा कमरानुमा किला मौजूद है। इनकी मुख्य दीवारों में शुत्रों पर आक्रमण करने के लिए चारों ओर सुराख या हॉल बने है। किले की सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए ऊपर चढ़ाने वाले स्थानों पर दिशा के अनुसार अधिक सुराख या हॉल बनाए गए है ताकि शत्रुओं को ऊपर आने से रोका जा सके। राजस्थान के प्रत्येक क्षेत्र में इस प्रकार की छोटी–छोटी गढ़िया मौजूद है।

संसार में सबसे प्राचीन मुद्राएं चिह्नो वाली मुद्राएं कहीं जा सकती है। ये मुद्राएं लिपि के विकास से पूर्व की हैं। प्राचीन काल में धरती पर मनुष्य के दैनिक जीवन से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण चीजें चिह्नित (आहत) मुद्राओं पर टंकित है। इस आधार पर मेरा यह विनम्र निवेदन है कि मुद्राओं पर लिपि के विकास से पूर्व इन चिह्नों का टंकण संकेतिक लिपि के रूप में किया जाता था। पारम्परिक भारतीय सांस्कृतिक मान्यता की दृष्टि से इन चिह्नों का विश्लेषण किया जाना अत्यंत शोध का विषय है। उपर्युक्त विश्लेषणों को दृष्टिगतर रखते हुए, इसी आधार पर इन मुद्राओं के प्रचलन काल का निर्धारण किया जाना उचित रहेगा। मेरा यह विनम्र मत है कि इनमें से पहला चिह्न राज्य का, दूसरा चिह्न राजा का, तीसरा चिह्न क्षेत्र का, चौथा चिह्न मंत्री तथा पाँचवा चिह्न टकसाल एवं धार्मिक अभिव्यक्ति का द्योतक है। यह मत सही प्रतीत होता है। मुद्राओं पर अंकित पाँचों चिह्नों के समूह अलग–अलग होते है। विभिन्न विद्वानों द्वारा इन सांकेतिक चिह्नों के समूहों की संख्या अलग–अलग पहचाना, व्याख्या और विश्लेषण क्रिया है।

उपर्युक्त पुरातात्त्विक साक्ष्य एवं उपलब्ध तथ्यों के आधार पर प्राचनी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के गौरवशाली वैभव एवं परम्पराओं को विश्वस्तर पर प्रकाश में लाने के लिए उपर्युक्त सिक्कों एवं टेराकोटा के आधार पर समय निर्धारण करना एक शोधपरक विषय है। उपरोक्त साक्ष्य एवं तथ्यों के आधार पर चिह्नित (आहत) मुद्राओं का प्रचलन काल 2000–1000 ईसवी पूर्व निर्धारित किया जा सकता है।

1* Shri B.B. Lal- Excavations at Kalibangan The Harappans (1960-1969) Part-I, published by The director General, Archaeological Survey of India, Janpath, New Delhi, New Delhi-photo Page- Fig. 9-51 a-j.

2* भारतीय मुद्रा परिषद के अंक संख्या–LXII-III 2000-01 में पृष्ठ सं.– 24 से 28 (PLS. VII-VIII)

3* जॉन एलन "ए केटलॉग ऑफ दि इण्डियन कॉइन्स इन दी ब्रिटिश म्यूजियम"–पृष्ठ संख्या– I

4* डॉ.परमेश्वरी लाल गुप्त "भारत के पूर्वकालिक सिक्के" में पृष्ठ सं.– 67.

5* इतिहास एवं भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के 15 वें राष्ट्रीय सेमीनार दिनांक 23–24, जनवरी 2015 के सारांश विवरणिका में प्रकाशित।

6* Rajasthan History Congress Proceeding Volume-XXIX के पृष्ठ संख्या 197–205 पर प्रकाशित।

7* "रक्षास्तोत्रम्" गीता प्रेस, गोरखपुर।

8* "राजस्थान के प्राचीन सिक्के" संस्करण वर्ष 2005 में अन्तिम पृष्ठ पर परिशिष्ट 'अ' तथा 'ऐतिहासिक मुद्राएँ' संस्करण वर्ष 2013 में सिक्का क्रम संख्या–9, पृष्ठ संख्या–106–107 देखें।

9* डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त "भारत के पूर्वकालिक सिक्के" में पृष्ठ संख्या–100

10* डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त "भारत के पूर्वकालिक सिक्के" में पृष्ठ संख्या–211

11* डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त "भारत के पूर्वकालिक सिक्के" में पृष्ठ संख्या–258

12* डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त "भारत के पूर्वकालिक सिक्के" में पृष्ठ संख्या–266–69

13* डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त "भारत के पूर्वकालिक सिक्के" में पृष्ठ संख्या–270

14* डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त "भारत के पूर्वकालिक सिक्के" में पृष्ठ संख्या–304

15* विभागीय "कुषाणकालीन सिक्कों की प्रदर्शनी" वर्ष 2015 के ब्रोशर में पृष्ठ संख्या 8–9 पर इन प्रकाशित किया गया है।

फलक–1 व 2

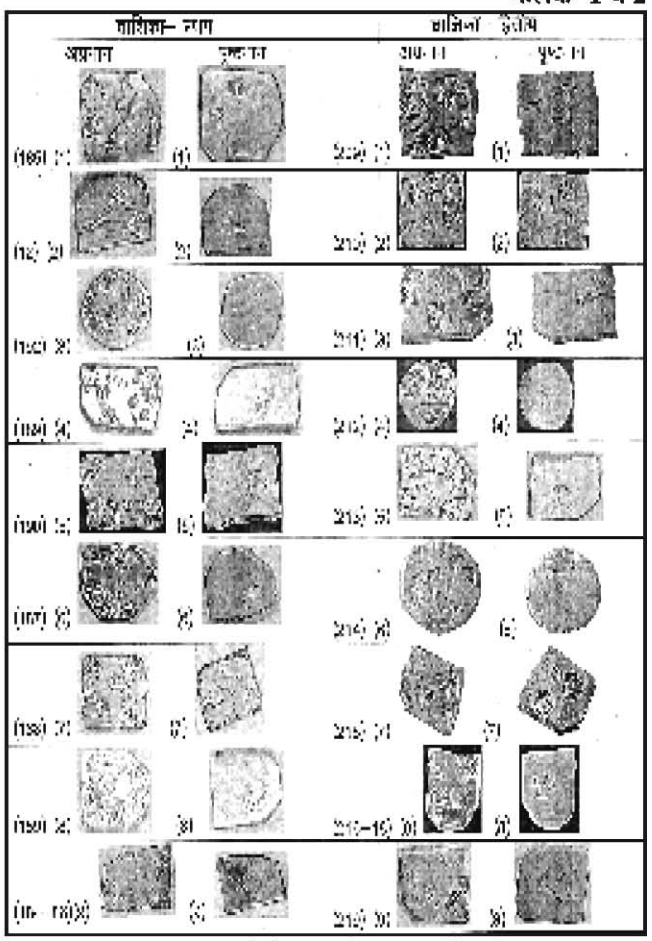

वृत्त अधीक्षक, पुरातत्व एवं संग्राहलय विभाग, बीकानेर, मो. 9829200227

शिक्षण प्रक्रिया

व्याख्यान के अतिरिक्त अन्य शिक्षण-प्रविधियाँ

❒ डॉ. आर.पी. कर्मयोगी

वर्तमान में शिक्षण की वस्तुस्थिति पर गहराई से विचार करें तो वास्तविकता यह है कि अधिकांश विद्यालयों में शिक्षक, पाठ्यक्रम पर आधारित व्याख्यान देकर अपने शिक्षण की इतिश्री समझ लेते हैं। शिक्षण-अधिगम में कोई संबंध जुड़ पाया या नहीं, इसके प्रति गंभीरता का सर्वथा अभाव है। यहाँ व्याख्यान को नकारा नहीं जा रहा, अपितु व्याख्यान कितना और कब? यह विचारणीय है। देखा यह जा रहा है कि शिक्षक का व्याख्यान सभी छात्रों के स्तर अनुकूल नहीं होता, बल्कि बोझिल और अरुचिकर होता है। ऐसी स्थिति में व्याख्यामूलक शिक्षण पद्धति पर कई प्रश्न उठ खड़े होते हैं।

यदि शिक्षण अधिगम की ऐतिहासिकता पर विचार करें तो परंपरागत शिक्षण में शिक्षक का स्थान सर्वोपरि रहा है। आज भी वह शिक्षण-प्रक्रिया के शीर्ष बिन्दु पर विराजमान है। वहीं से ज्ञान का पिटारा लुढ़कता हुआ छात्र के मस्तिष्क पर आ धमकता है। फिर उसमें यह भी ध्यान नहीं रखा जाता कि क्या छात्र इस बोझ को ढो पाएंगे? क्या वे इस सुनी हुई विषय वस्तु को समझ सकेंगे? क्या यह सामग्री छात्रों को रुचिकर और बोधगम्य हो सकेगी? क्या छात्र उसमें रस ले सकेंगे? क्या यह विषयवस्तु छात्रों में आनन्द, उमंग और उत्साह का संचार कर सकेगी?

वस्तुतः परम्परागत शिक्षण में यह जानने की कोशिश नहीं है कि छात्रों को कितना पढ़ना है, कितना पढ़ सकते है और कितना पढ़ सकेंगे? वहाँ तो पढ़ाने पर बल है भले ही छात्रों की स्थिति कुछ भी हो। क्लिष्टता की दृष्टि से यह तो देखें कि क्या प्रस्तुत विषयवस्तु सभी छात्रों के समझने योग्य है? शिक्षक कब और कितना हृदयंगम करा पाएगा, इसकी छात्र आधारित योग्यता पर कोई योजना नहीं बनाई जाती, बल्कि वहाँ तो जैसे-तैसे पाठ्यक्रम पूरा करा देना ही लक्ष्य होता है। कहने का आशय यह है कि परंपरागत शिक्षण इकतरफा ऐसा प्रयास है जिसमें पाठ्यक्रम के सूत्रों को समेटती हुई ज्ञानधारा शिक्षक से छात्र तक यात्रा पूरी कर तो लेती हैं, पर उस ज्ञानधारा से मस्तिष्क का मात्र अभिसिंचन ही हो सकता है, छात्र का मन मस्तिष्क न तो उसमें डूबकी लगा पाता है और न तैरने का आनंद ले पाता है। बस ज्ञान का बोझ ढोना ही छात्र की नियति बन गई है। शिक्षण का अर्थ ज्ञान को थोपना नहीं, अपितु उसे इस प्रकार प्रस्तुत करना है कि छात्र में अन्तर्निहित ज्ञान व शक्तियों का प्रस्फुटन और उद्भासन हो सके। यह कार्य मात्र उबाऊ व्याख्यानों से सम्भव नहीं, इससे छात्रों में न तो वैज्ञानिक दृष्टिकोण पनपता है और न सृजनशीलता, बल्कि उन्हें रट-रटाकर मात्र परीक्षा पास करना ही अभीष्ट होता है। जबकि शिक्षण एक ऐसा कौशल है जो अधिगम को सरल व रुचिकर बनाता है वह छात्रों की मनोभूमि की ऐसी तैयारी कराता है जिसमें ज्ञान बीज सहज ही अंकुरित हो सकें, और शिक्षण खाद-पानी की तरह सिंचन कर सके।

पढ़ाई का संयोजन इस प्रकार हो कि पढ़ते-पढ़ते छात्रों को मजा आए उनमें इतनी उत्सुकता बढ़ जाए कि वे स्वयं पढ़ने के लिए आतुर हो उठें। इस हेतु हमें शिक्षण के वर्तमान तौर-तरीके बदलने होंगे, जहाँ तक व्याख्यान पद्धति का प्रश्न है उसे पूर्णतः तो नहीं हटाया जा सकता, परन्तु इस पर निर्भर भी नहीं रहा जा सकता, क्योंकि इसमें ज्ञान का मौलिक प्रवाह नहीं है, यह रटे हुए ज्ञान को अन्य परिस्थितियों में व्यावहारिक धरातल पर उतारने का कौशल प्रदान नहीं करता। इस स्थिति से निपटने के लिए शिक्षण के इस मुद्दे पर बहुत गहराई से सोचना होगा। शिक्षण का अर्थ है ज्ञान को छात्र की वस्तु बना देना। उसमें ऐसा कौशल उभार देना कि वे पठित सामग्री में समाया सत्य उनके जीवन का अंग बन जाए। अब सोचना यह है कि व्याख्यान के अतिरिक्त शिक्षण अधिगम के लिए क्या उपाय किया जाए?

विषय से संबंधित प्रस्तुतीकरण

1. **किसी विशिष्ट और सारगर्भित तथ्य/प्रश्न का कक्षा में प्रस्तुतीकरण**– यथा-बोध प्रश्न, खोजपूर्ण प्रश्न, विवेचनात्मक प्रश्न, विचारोत्तेजक प्रश्न, पुनरावृत्ति के प्रश्न शिक्षक द्वारा पहले से ही तैयार कर लिए जाएँ। इनमें से अपेक्षित प्रश्न यथा समय कक्षा में श्यामपट्ट पर लिख दिया जाए। छात्रों को भी प्रश्न निर्माण के लिए उकसाया जाए। यदि विषयवार प्रश्न बैंक तैयार कर लिया जाए तो यह दिमागी कसरत ज्ञान को व्यवहार परक बनाने में बहुत सहायक होगी। फिर प्रश्न के उत्तर खोजने का प्रयास किया जाए। छात्रों की ऐसी मनोभूमि तैयार की जाए कि वे, संबंधित विषय वस्तु को भलीभांति पढ़कर कक्षा में आएँ। वे शिक्षण-अधिगम के हिस्सादार बनें। ऐसी स्थिति में शिक्षक द्वारा छात्रों के उत्तर भी श्यामपट्ट पर लिखे जाएँ। इस प्रकार अनेक प्रश्नों के माध्यम से छात्रों की सहभागिता कराई जा सकती है। इस अभ्यास से उनमें स्व अधिगम और स्वमूल्यांकन की योग्यता और क्षमता विकसित हो सकेगी।
2. **कक्षा में शिक्षण-अधिगम के लिए कुछ परिस्थितियों का निर्माण**–कक्षा में शिक्षक द्वारा कुछ ऐसी स्थिति और परिस्थितियाँ पैदा की जाएँ जिनमें प्रस्तुत विषय की एक झलक झाँकी मिलती हो। इन परिस्थितियों में क्या किया जा सकता है इससे अमूर्त चिन्तन की आदत और कल्पना का क्षेत्र विस्तृत होगा साथ ही सृजनात्मकता को भी यथेष्ट अवसर मिल सकेगा।
3. **विषय से संबंधित अकादमिक विवरण**– विषयान्तर्गत कभी प्रयोग परीक्षण हुआ हो किसी अनुक्रम में कोई

नया आविष्कार, कोई अप्रत्याशित आँकड़े, किन्हीं घटनाओं के कोई कारण और परिणाम जो प्रस्तुत विषय पर प्रकाशन डालते हों, इस प्रकार के प्रस्तुतीकरण से छात्रों में नई सोच पैदा होगी और उन्हें तथ्यों को समझने में बहुत कुछ मदद मिलेगी।

4. **शिक्षण बिन्दुओं का चयन–** विषयवस्तु में से उन बिन्दुओं का चयन करके प्रस्तुत करना जिन पर छात्र कुछ सोचने–समझने को उत्सुक हो सकें तथा कुछ अनुमान लगा सकें।
5. विषयवस्तु में से क्लिष्ट और अमूर्त प्रमुख बिन्दुओं का चयन कर कक्षा में विचार विमर्श हेतु प्रस्तुत करना।
6. **छात्रों द्वारा तथ्यों और संप्रत्ययों की विवेचना–** इस में आवश्यकतानुसार सहयोग करना और उनकी अपूर्णताओं को पूर्ण करने में मदद करना।
7. **कक्षा में छात्रों को प्रस्तुत विषय पर 'पेपर रीडिंग सेमीनार' आयोजित करने के लिए–** पहले से विषय निर्धारित किया जाए। उस विषय पर छात्र खोजपूर्ण तथ्य प्रस्तुत करें। शिक्षक इस संगोष्ठी में उपस्थित रहते हुए मूल्यांकन एवं प्रोत्साहन का कार्य करें।
8. **कक्षा में छात्रों को परस्पर परिसंवाद का अवसर–** इस विधि में किसी एक छात्र द्वारा पाठ्यवस्तु का कोई एक मुद्दा उठाया जाए सभी छात्र उसकी व्याख्या और विवेचना करें।
9. छात्रों की सहभागिता से कठिन विषयवस्तु के सम्भावित हल खोजना।
10. छात्रों द्वारा यथा संभव शिक्षण–सामग्री का निर्माण, संकलन एवं संग्रह करना।
11. निर्मित शिक्षण सामग्री की प्रदर्शनी आयोजित करना।
12. वर्णन, विवरण, व्याख्यान, तर्क, तुलना, समीक्षा, संक्षेपीकरण, विस्तारण, विश्लेषण, शोध और सृजन के अवसर छात्रों को उपलब्ध कराना।
13. छात्रों द्वारा शिक्षण बिन्दुओं का चयन करना तथा उनके उद्देश्य निर्धारित करना।
14. उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन खोजना।
15. छात्रों को संदर्भ साहित्य उपलब्ध कराना तथा स्वाध्याय के लिए मार्गदर्शन देना।
16. स्वाध्याय के पश्चात् प्राप्त तथ्यों को सम्यक विवेचन करना।
17. छात्रों द्वारा संगोष्ठियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत करना।
18. शिक्षण प्रौद्योगिकी के प्रयोग से समझ विकसित करना–दृश्य–श्रव्य साधन, टेप रिकॉर्ड्स, फिल्म स्ट्रिप्स, रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर–हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, इंटरनेट, लघुनाटिका, नुक्कड़ नाटक आदि।
19. जीवन मूल्यों की दृष्टि से पाठ्यपुस्तक विश्लेषण।
20. मूल्यों के विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं का निर्धारण करना।
21. यात्रा वृतान्त लिखना।
22. ऐतिहासिक संदर्भ खोजना।
23. चित्र कथाएँ लिखना।
24. सृजनात्मक अध्ययन–अध्यापन करना।

निदेशक, शिक्षाशास्त्र विभाग
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
गायत्रीकुंज–शांतिकुंज, हरिद्वार

अध्ययन-अध्यापन में भाषा की उपयोगिता

❐ दयाराम

भाषा मानव की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा के द्वारा मानव अपने भावों, विचारों का सम्प्रेषण करता है। भाषा के कई रूप होते हैं– राष्ट्रभाषा, राजभाषा, जनभाषा, क्षेत्रीय भाषा, लोकभाषा, बोली, व्यक्तिबोली आदि। स्थान, कार्य, क्षेत्र आदि के आधार पर मानव अपनी भाषा का चयन करता है। डॉक्टर की भाषा, इंजीनियर की भाषा, अध्यापक की भाषा, नेता की भाषा, अभिनेता की भाषा और साहित्यकार की भाषा व बोली में पर्याप्त अन्तर होता है। भाषा विद्वान भाषा का सबसे छोटा रूप बोली को ही मानते हैं जो पेशे के अनुरूप होती है और जैसे–जैसे पेशा परिवर्तित होता है, बोली उसी अनुसार बदलती रहती है। शिशु की प्रथम पाठशाला परिवार और उसके बाद प्राथमिक विद्यालय आता है। परिवार में व्यक्ति बोली से ही शिशु का बौद्धिक विकास होता है, प्राथमिक शिक्षण में भी स्थानीय बोली और मातृभाषा का विशेष महत्व रहता है। शिक्षण के स्तर की वृद्धि के साथ–साथ शिक्षण कार्य में बोली व मातृभाषा प्रयोग के साथ–साथ मानक भाषा का उपयोग होने लगता है। शिक्षण कार्य विद्यार्थी और अध्यापक के परस्पर संवादों से ही सम्पन्न होता है, इसलिए इसमें स्तरीय भाषा का प्रयोग होना आवश्यक है।

विद्यार्थी के व्यक्तित्व को मोटे रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है– शारीरिक और बौद्धिक। शारीरिक पक्ष का विकास, खेल–कूद, व्यायाम, योग, पोष्टिक भोजन आदि से होता है और बौद्धिक पक्ष का विकास अध्ययन–अध्यापन से होता है। अध्ययन–अध्यापन का सीधा संबंध शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य स्थापित संवाद होते हैं। फलतः विद्यार्थी के उच्च चरित्र, उत्तम व्यक्तित्व, स्पष्ट वक्तृत्व, सुदृढ़ विचारशैली आदि के विकास के लिए भाषा महत्वपूर्ण सोपान दृष्टिगत होती है। यथार्थ है कि बालक अनुकरण से सीखता है, उस पर शिक्षक की भाषा का सीधा प्रभाव पड़ता है। अतः अध्यापन कार्य में शिक्षक की भाषा का स्तरीय होना आवश्यक हैं। उक्त संदर्भ में बालक और शिक्षक के मध्य संचालित अध्यापन की क्रिया–प्रतिक्रया में निम्नलिखित सूक्ष्मताओं का होना अत्यंत ही आवश्यक है:

(i) भाषा की मधुरता: शिक्षक और बालक के संबंध भाव और संवेदना के आधार पर स्थापित होते है। विद्यार्थी के विकास हेतु शिक्षक का उससे आत्मीय जुड़ाव आवश्यक है। इस हेतु शिक्षक को विद्यार्थी से मधुर भाषा में वार्तालाप करनी चाहिए। उसकी मधुरता विद्यार्थी के हृदय में सीधी स्थापित होती है जिसके प्रभाव से वह बिना किसी झिझक,

लेपन, हुक्म-ज़िमाल के अपने मन के भाव-विचार शिक्षक के समक्ष प्रकट कर देता है। दूसरी तरफ यदि उससे गुस्से में या तेज ध्वनि से बात की जाए तो वह भय के कारण मौन मार्ग पर चल पड़ता है। उसकी अध्ययन से जुड़ी समस्याओं का समाधान नहीं होता है और अधिगम की प्रक्रिया बाधित हो जाती है। विद्यार्थी धीरे-धीरे कमजोर होता चला जाएगा।

(II) विषयानुरूप भाषा का स्तर- विद्यालय के एक शिक्षक को प्राथमिक, उच्च-प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक कक्षाओं में प्रायः विविध विषयों का अध्यापन करवाना पड़ता है। प्रत्येक विषय की शब्दावली अपने-आप में विशेष होती है। अतः शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में विशेष ध्यान रखे कि प्रत्येक कालांश में विषयानुसार शब्दों का चयन हो जिससे विद्यार्थी विषय स्तर के अनुरूप शिक्षण बिन्दु को अधिगम कर सके। उदाहरण के रूप में गणित के कालांश में गणित के अनुरूप, विज्ञान के कालांश में विज्ञान के अनुरूप और हिन्दी के कालांश में हिन्दी के अनुरूप भाषा का चयन होना चाहिए। यदि उक्त विषयों में शब्दों का चयन विपरीत हो जाये तो अधिगम प्रभावहीन हो जाएगा।

(III) कक्षानुसार भाषा का प्रयोग- विद्यालय में शिक्षक को प्रायः प्राथमिक से उच्च माध्यमिक तक की कक्षाओं का अध्यापन करवाना पड़ता है। प्राथमिक स्तर की कक्षाओं के विद्यार्थियों व उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के मानसिक स्तर व ग्रहण क्षमता में पर्याप्त अन्तर होता है। उच्च माध्यमिक कक्षाओं के शिक्षण की भाषा यदि प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के मध्य प्रयोग करे तो उसका परिणाम शून्य ही मिलेगा। दूसरी तरफ प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षण की भाषा को उच्च माध्यमिक स्तर पर प्रयोग करे तो भाषा की सरलता से बच्चों का पर्याप्त बौद्धिक विकास नहीं होगा। निष्कर्षतः दोनों स्तरों पर परस्पर प्रभाव पड़ता है। अतः शिक्षण कार्य में कक्षानुरूप शिक्षक को सरल व कठिन शब्दों का प्रयोग करते हुए भाषा को उपयोगी बनाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ अध्ययन में रोचकता भी बनी रहे।

(IV) काठिन्य निवारणः अध्यापन कार्य सदैव विद्यार्थियों के स्तरानुरूप होता है और पाठ्यक्रम भी कक्षाओं के स्तरानुसार ही होता है। प्रत्येक कक्षा में बालक नवीन जिज्ञासु विद्यार्थी के रूप में आता है और उस कक्षा का पाठ्यक्रम भी उसके लिए नवीन ही होता है। परन्तु शिक्षक प्रत्येक वर्ष उसी विषय सामग्री का बार-बार अध्यापन करवाता है। इसलिए वह उससे बखूबी परिचित होता है। यहाँ शिक्षक को अध्यापन कार्य में विशेष ध्यान रखना होता है कि बालक के लिए प्रत्येक अध्याय नवीन है और नवीन बालक को ज्ञान बोध उसके स्तर के अनुसार करवाया जाए तभी अधिगम प्रभावी व स्थायी होगा। इन्हीं तथ्यों को मद्देनजर रखते हुए शिक्षक को यह सोचना आवश्यक है कि मैं भी पहली बार उक्त अध्यापन करवा रहा हूँ और अध्यापन के दौरान आने वाले प्रत्येक कठिन शब्द, विशेष शब्द, प्रसंग, अन्तर्कथा आदि का विस्तारपूर्वक अर्थ विद्यार्थी को बताना चाहिए। इससे विद्यार्थी का शब्द भण्डार समृद्ध होगा और अध्ययन में भी रुचि बनी रहेगी।

(V) भाषा की संरचना के विविध अवयवों का प्रसंगानुसार प्रयोग- भाषा की संरचना व मानकीकरण में व्याकरण के विविध अवयवों का योगदान रहता है। शिक्षक को भाषा विषय अध्यापन व अन्य विषयों के अध्यापन में व्याकरण के विविध अवयवों संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, कारक, समास, संधि, प्रत्यय, उपसर्ग, मुहावरे व लोकोक्तियों आदि का ज्ञान विद्यार्थी को करवाना चाहिए। इससे विद्यार्थी का भाषीय ज्ञान बढ़ेगा, शब्द भण्डार विकसित होगा, अभिव्यक्ति क्षमता में वृद्धि होगी और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी उसका ज्ञान बढ़ेगा।

(VI) उच्चारण की शुद्धता- विद्यार्थी के लिए विद्यालय ज्ञान का मंदिर और शिक्षक पूज्य प्रतिमा होती है। वह विद्यालय समय के दौरान उससे पूर्व व पश्चात् शिक्षक के व्यवहार का बखूबी अनुकरण करता है। शिक्षक के हाव-भाव, चाल-चलन, वेश-भूषा, खान-पान आदि को बालक अनुकरण से आत्मसात करता है। अतः शिक्षक को विद्यालय में कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त प्रार्थना सभा, उत्सव, संगोष्ठी, वार्ता आदि में भी शब्दों के उच्चारण की शुद्धता का ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि उसके एक उच्चारण को सैकड़ों विद्यार्थी अनुकरण करने वाले हैं। यदि उसका उच्चारण अशुद्ध है तो सैकड़ों विद्यार्थी शब्दों की अशुद्धता को अपना लेते हैं जो अत्यंत ही सोचनीय बिन्दु बनता है। विद्यार्थी समाज का दर्पण होता है। उसके व्यवहार से हम गाँव, शहर के स्तर को जाँच सकते हैं। इस स्तर के निर्माण में शिक्षक सूत्रधार की भूमिका अदा करता है। अतः शिक्षक को सामान्य वार्तालाप में भी भाषा के उच्चारण की शुद्धता का ध्यान रखना चाहिए।

उपसंहारतः कहा जा सकता है कि अध्यापन में भाषा का विशेष महत्व है। विद्यार्थी के चरित्र निर्माण, नैतिक उत्थान, मूल्य, संस्कारों के विकास में भाषा उपयोगी है। इसके साथ ही विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के लिए भाषा का ज्ञान, शब्दों का भण्डार आवश्यक है। कक्षा प्रथम से लेकर उच्च माध्यमिक तक विद्यार्थी विद्यालय में अध्ययन करता है। उक्त अवस्था में उसका सर्वांगीण विकास होता है। उसके सर्वांगीण विकास में शिक्षक पथ प्रदर्शक की भूमिका अदा करता है। इसीलिए शिक्षक की भाषा व विषय की भाषा ही विद्यार्थी का निर्माण करती है।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि., गोडूवाला, हनुमानगढ़
मो. 9964934796

आदित्यो ह वै प्राणः।
अर्थात- यह सूर्य ही सृष्टि का प्राण है।

खेल एवं स्वास्थ्य

ओलम्पिक खेलों का सफर

❒ राजेन्द्र सिंह

खेलों का महाकुंभ कहे जाने वाले ओलम्पिक खेल यूनान की देन हैं। ओलम्पिक खेलों का जन्म 776 ई.पू. यूनान के एक छोटे से गांव ओलम्पिया में हुआ था। यूनानियों के जीवन में खेलों का धार्मिक उत्सव की भांति महत्व था, यूनानी देवता ज्यूस के सम्मान में खेलों का आयोजन होता था। जिस माह में ये खेल होते थे उसे पवित्र माह माना जाता था। राज्य में जहाँ कहीं भी किसी प्रकार का युद्ध या विवाद होता था उसे तुरन्त रोक दिया जाता था। सभी प्रतिभागी, दर्शक, बिना किसी भय के खेलों में भाग लेते थे। ओलम्पिक उत्सव प्राचीन यूनानियों के बीच शांति और भाईचारे को बनाये रखने का उत्सव होता था। उस समय ये खेल केवल यूनान के नागरिकों तक ही सीमित थे। उनमें न तो यूनान के दास भाग ले सकते हैं। महिलाओं का प्रवेश भी उनमें पूर्णतः निषिद्ध था। इन अनेक कमियों के बावजूद ये खेल उन दिनों अत्यंत लोकप्रिय और प्रतिष्ठा के प्रतीक थे। इन खेलों से यूनान के लोगों को परस्पर भाईचारा और स्नेह संबंध जोड़ने में पर्याप्त सफलता मिली थी। ओलम्पिक खेल सदियों से चले आ रहे थे। जब यूनान रोमनों के अधीन हो गया तब रोमन सम्राट थियोडोसिएस-प्रथम ने वर्ष 394ई. में ओलम्पिक खेलों पर रोक लगा दी। साथ ही बाढ़ व भूकम्प ने भी ओलम्पिया गांव को नष्ट कर दिया। इस प्रकार ओलम्पिक खेलों का आयोजन बन्द हो गया।

आधुनिक युग में जब खेलों का महत्व बढ़ने लगा और उन्हें आपसी प्रेम तथा सद्भावना का प्रेरक सूत्र समझा जाने लगा तब अनायास ही लोगों का ध्यान यूनान के पुराने ओलम्पिक खेलों की तरफ गया और उनके बारे में अधिक से अधिक जानने की उत्कंठा पैदा होने लगी। प्राचीन ओलम्पिया गांव की बाकायदा खुदाई शुरू हो गई। परिणाम बड़े उत्साहवर्द्धक आये और प्राचीन ओलम्पिक खेलों का ऐश्वर्य सामने आने लगा इस खुदाई में खेल संबंधी अन्य अनेक वस्तुओं के साथ पुराने ओलम्पिक विजेताओं की कांस्य प्रतिमाएं भी मिली। ओलम्पिक खेलों के आयोजन बन्द हो जाने तथा उनके अवशेषों के दब जाने के बावजूद उनकी गौरव गाथाऐं जन साधारण के बीच निरन्तर चलती रही। उन्हीं गौरव गाथाओं से प्रभावित होकर अनेक पुरातत्ववेता ओलम्पिक खेलों की जानकारी जुटाने में लग गये। इनमें विशेष उल्लेखनीय है **पियरे द कुर्बतिन।** जिन्हें आधुनिक ओलम्पिक खेलों का जनक कहा जाता है। आधुनिक ओलम्पिक खेलों के जन्मदाता होते हुए भी पियरे द कुर्बतिन स्वयं खिलाड़ी नहीं थे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहता था। फ्रांस के निवासी कुर्बतिन का कद भी काफी छोटा था। इन सब तथ्यों के बावजूद वे अन्तर्राष्ट्रीयतावादी तथा विश्वबंधुत्व के भावना से ओतप्रोत थे। उनका यह विश्वास था कि खेलकूद केवल आपसी भाईचारा के लिए नहीं, अपितु युवकों के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्हें घूमने-फिरने का भी बेहद शौक था। शारीरिक प्रशिक्षण में लगे शिक्षकों के साथ उनकी अच्छी पटती थी। इससे उन्हें यह अहसास होने लगा कि युवा वर्ग को स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए खेलकूद अत्यंत आवश्यक है। 1892 में खिलाड़ियों की बैठक बुलाई गई जिसमें कुर्बतिन ने अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक शीघ्र ही शुरू करने की घोषणा की। इसके बाद 1894 में उन्होंने पेरिस में एक और बैठक बुलाई। जिसका नाम उन्होंने ओलम्पिक पुनर्निर्माण कांग्रेस रखा। इस बैठक में 12 देशों ने भाग लिया तथा एक ही मंच से अपने विचार प्रस्तुत किए। कुर्बतिन ने अपने प्रभावशाली भाषण और ठोस तर्कों के बल पर अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक खेलों की आवश्यकता का अहसास सबको करवा दिया। इसी बैठक में यह तय किया गया कि ओलम्पिक खेलों का आयोजन प्रति चार वर्ष बाद अलग-अलग देशों में हो और उसका प्रथम आयोजन 1896 में ओलम्पिक खेलों की जन्म भूमि यूनान में हो। इसी बैठक में अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति का भी गठन किया गया। जिसके महासचिव के पद पर कुर्बतिन को चुना गया। बाद में वे इस समिति के अध्यक्ष भी बने। और 1937 में अपनी मृत्यु तक वे इस समिति के मानद अध्यक्ष बने रहे।

मूलतः विचार यह था कि प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेलों का श्रीगणेश ओलम्पिया गांव में ही किया जाए, लेकिन कुछ व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण ओलम्पिया के स्थान पर यूनान के ऐतिहासिक नगर एथेंस में प्रथम आयोजन हुआ। इस आयोजन में 13 देशों ने अपने 311 प्रतियोगी भेजे। खेलों का उद्घाटन यूनान के सम्राट जार्ज प्रथम के द्वारा सम्पन्न हुआ था। इस आयोजन से सर्वाधिक प्रसन्नता यूनानियों को हुई। जिन्होंने उद्घाटन से पूर्व की सम्पूर्ण रात्रि सड़कों पर नाच गाकर बिताई।

1896 से प्रति चार वर्ष बाद इन खेलों का आयोजन होने लगा। लेकिन प्रथम विश्वयुद्ध के कारण 1916 में व द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण 1940 व 1944 में इन खेलों का आयोजन नहीं हो पाया। जर्मनी में आयोजित 1936 के ओलम्पिक को हिटलर ने अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया और इसलिए भारी मात्रा में व्यय किया गया। सम्पूर्ण ओलम्पिक खेलों पर नाजीवाद का प्रभाव मंडराता रहा। 1972 के म्यूनिख ओलम्पिक में भयानक दुर्घटना घटी। फिलीस्तीनी छापामारों ने ग्यारह इजरायली खिलाड़ियों की हत्या कर दी। कुछ समय के लिए लगा जैसे ओलम्पिक खेलों का अस्तित्व ही अब समाप्त हो जाएगा। किन्तु सौभाग्य से ऐसा नहीं हुआ। हल्के से विराम के बाद ओलम्पिक खेलों का कारवां फिर आगे बढ़ चला। इस प्रकार आधुनिक ओलम्पिक खेलों में कई उतार चढ़ाव के बावजूद खेलों के महत्व व खेल प्रेम के कारण भव्यता से आयोजित होते रहे हैं।

ओलम्पिक खेलों का एक चार्टर है जिसमें खेलों के लिए आवश्यक शारीरिक एवं नैतिक गुणों का विकास करना, विश्व शांति को

और सशक्त बनाने के लिए युवाओं में आपसी सद्भाव और मित्रता बढ़ना, सम्पूर्ण विश्व के सभी खिलाड़ियों के प्रति चार वर्ष पश्चात एक स्थान पर एकत्र करना है। ओलम्पिक खेलों में मुख्य बात है इसमें शामिल होना और स्पर्द्धा में जमकर मुकाबला करना, न कि विजय होना, और इसी विशेषता के कारण जहां प्रथम ओलम्पिक खेलों में केवल 13 देशों के 311 खिलाड़ियों ने 42 खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया, वहीं 30 वें ओलम्पिक खेल 2012 लंदन में 204 देशों के 10568 एथलीटों (5892 पुरुष व 4676 महिला एथलीट) ने 302 खेल प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया।

ओलम्पिक ध्वज 1914 में पियर दी कुर्बतिन द्वारा बनाया गया। इसे 1920 में ऐंटवर्द (बेल्जियम) ओलम्पिक खेल में प्रथम बार फहराया गया था। झण्डा सफेद रेशम का बना होता है। जिसके एक दूसरे से जुड़े विभिन्न रंगों के पांच छल्ले होते हैं। नीला, पीला, काला, हरा और लाल जो कि क्रमशः अमेरिका, एशिया, अफ्रीका, यूरोप एवं आस्ट्रेलिया इन पांच महाद्वीपों के प्रतीक है। छल्लों के नीचे ओलम्पिक मोटो सीटियस, आलटीयस, फोरर्टियस, जिसका अभिप्राय अधिक तेज, अधिक ऊँचा, और अधिक शक्तिशाली होता है। ओलम्पिक झण्डा केवल ओलम्पिक खेलों के दौरान ही फहराया जा सकता है।

आधुनिक ओलम्पिक के इतिहास में भारत ही एक ऐसा देश है जिसने 1928, 1932, 1936, 1948, 1952, 1956, 1964, 1980 में आठ स्वर्ण पदक 1960 में रजत पदक तथा 1968 व 1972 में दो कांस्य पदक जीते। 1980 के बाद भारत के राष्ट्रीय खेल हॉकी में कोई पदक प्राप्त नहीं हुआ। इसके लिए पुनः वर्चस्व प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है तथा अन्य खेलों जैसे एथलेटिक्स, कुश्ती, बॉक्सिंग, निशानेबाजी आदि में भी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रयासरत है। ओलम्पिक खेल 2016 में रियो डी जनेरियों में आयोजित होंगे। जिसमें भारत द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन की आशा है साथ ही खेलों के द्वारा सुन्दर संसार बनाने व विश्व विकास की मंगल कामना है।

वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक
रा.उ.मा.वि. चेराई, जोधपुर
मो. 9649922131

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की उपादेयता

❐ **मसउदुल हक**

स्वास्थ्य में आदतों का महत्वपूर्ण स्थान है। अच्छी आदतें अभ्यास से बनती हैं। बालक को बचपन से ही यह प्रयास करना चाहिए कि उसमें अच्छी आदतें विकसित हों, प्रातःकाल जल्दी उठना, शौच जाना, दांतों की उचित सफाई करने की आदत प्रत्येक बालक में विकसित की जानी चाहिए। अपने कार्य स्थान तथा वस्त्र आदि को स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। बीड़ी, सिगरेट तथा अन्य नशे की आदतें बालक में नहीं पड़नी चाहिए। माता-पिता तथा शिक्षकों का यह दायित्व है कि बालकों में अच्छी आदतों का विकास करें, और बुरी आदतों से उनको बचाएँ। शरीर और मन का चोली दामन का साथ है। एक के बिना दूसरा अधूरा है। शरीर रथ है तो मन रथ का सारथी है, रथ कितना भी मजबूत क्यों न हो सारथी ही उसे गन्तव्य तक पहुंचाता है। बालकों को खेलों में भाग लेने के लिए अधिक से अधिक अवसर देने चाहिए। उसे नियमपूर्वक कार्य में व्यस्त रखना चाहिए। एक कहावत है कि 'खाली दिमाग शैतान का घर होता है।' चुनौतियाँ देना और चुनौतियाँ स्वीकार करना मानव की विशेषता है। चुनौती व्यक्ति को व्यक्ति से मिलाती है, प्रकृति भी उसके लिए चुनौतियाँ प्रस्तुत करती रहती है। पहाड़ों की ऊँची चोटियाँ, दुर्गम और पथरीले रास्ते, बर्फीले और फिसलन भरे मार्ग, नदी का तेज उफनता हुआ बहाव, आकाश की अनंत ऊँचाइयाँ व्यक्ति के लिए निरन्तर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती रहती है।

निद्रा के लिए रात्रि का समय सर्वोत्तम है। निद्रा से पूरा विश्राम मिलता है। सोते समय शरीर तनाव रहित रहता है तो मस्तिष्क भारमुक्त हो जाता है। निद्रा शरीर को आराम दिलाने का प्राकृतिक साधन है। सोने तथा उठने का समय निश्चित होना चाहिए। जल्दी सोना तथा जल्दी उठना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। इससे मनुष्य स्वस्थ व बुद्धिमान बनता है। सोने से दो घण्टे पूर्व भोजन कर लेना चाहिए। सोते समय व्यक्ति को ढीले-ढाले कपड़े पहनने चाहिए।

साहसिक खेलों में भाग लेते समय सरल से कठिन की ओर का सूत्र हमेशा ध्यान रखना चाहिए। इससे खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ता है। खिलाड़ियों में अनुशासन बना रहता है तथा आपस में भाईचारे की भावना यथा एकता से रहने की आदत का विकास होता है। इस कार्यक्रम से विद्यार्थियों की बुद्धि का विकास होता है। तुरंत निर्णय लेने की शक्ति और कार्य करने की क्षमता में वृद्धि होती है क्योंकि इससे खिलाड़ियों का भय निकल जाता है और वे निडर बन जाते है। किसी भी प्रकार की मुश्किलों से सामना करने की शक्ति उनमें आ जाती है।

व्यायाम के तुरंत पश्चात स्नान नहीं करना चाहिए। इससे स्वास्थ्य पर विपरित प्रभाव पड़ने का भय रहता है। सर्वप्रथम सरल व्यायाम करने चाहिए उसके बाद ही कठिन व्यायाम करने चाहिए। अत्यधिक व्यायाम से शरीर की थकान बढ़ जाती है। इसके लिए पर्याप्त विश्राम करना चाहिए। पर्याप्त मात्रा में नींद लेनी चाहिए।

खेल प्रवृत्तियां न केवल मनोरंजनकारी हैं, बल्कि इनसे आत्मबल, सहयोग, सहकारिता, त्याग, सहिष्णुता, नियमितता, समय का सदुपयोग, समय की पाबंदी एवं कर्तव्यनिष्ठा जैसे गुणों का विकास होता है और उदयीमान अवस्था में अतिरिक्त ऊर्जा का सही उपयोग होता है, जो किसी भी देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक होता है। अब तो पर्यटन विभाग भी खेलों को प्रोत्साहन दे रहा है।

व्यक्ति की प्रकृति से स्पर्द्धा ने ही साहसिक खेलों को जन्म दिया है, साहसिक खेलों में भाग लेने के लिए शारीरिक ताकत के साथ-साथ उच्च मानसिक क्षमता, प्रबल इच्छा शक्ति, असीम सहनशक्ति, उत्कृष्ट कौशल तथा कठोर अनुशासन की आवश्यकता होती है, क्योंकि अन्य खेलों में जहां प्रायः केवल हार-जीत तक ही संभावनाएं सीमित रहती हैं। साहसिक खेलों में छोटी सी गलती, जरा सा अतिरेक, अतिउत्साह, दुस्साहस और अनुशासनहीनता से जीवन को गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। वास्तव में साहसिक खेल हैं ही अनुशासित लोगों के लिए। अनुशासनहीन लोग इन खेलों में भाग लेकर स्वयं के लिए व अन्यों के लिए परेशानी का कारण बनते हैं।

अतः विद्यार्थियों को अपने विद्यार्थी जीवन से ही स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा को अपने जीवन का एक अंग बना लेना चाहिए।

शारीरिक शिक्षक
रा.उ.प्रा.वि. नं.8 चूरू
मो. 9875254277

रपट

राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2015

राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2015 का आयोजन 16 दिसम्बर 2015 को बीकानेर के वेटेनरी ऑडिटोरियम में हुआ।

यह तिथि शिक्षा विभाग राजस्थान के निदेशालय की स्थापना तिथि भी है, सम्मान समारोह के निदेशालय के स्थापना दिवस पर आयोजित होने से कर्मचारियों में इसकी ऐतिहासिकता से जुड़ने की दोहरी खुशी हुई।

मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों के राज्य स्तरीय सम्मान समारोह में इस बार चयनित बीस कर्मचारियों का सम्मान किया गया।

सम्मान समारोह का मुख्य आतिथ्य स्वीकारा माननीय डॉ. गोपाल जोशी, विधायक बीकानेर (पश्चिम) ने और अध्यक्षता की श्रीमती प्रियंका गोस्वामी, अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ने। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रारंभिक शिक्षा के अतिरिक्त निदेशक श्री अजीत सिंह ने पधारकर कर्मचारियों का उत्साह बढ़ाया।

गरिमामय मंच पर श्री विजयशंकर आचार्य, संयुक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा राज., श्री जगदीश प्रसाद स्वामी वित्तीय सलाहकार माध्यमिक शिक्षा, श्री द्वारिका प्रसाद शर्मा प्रधानाचार्य आई ए एस ई बीकानेर और श्री राधेश्याम पुरोहित, प्रशासनिक अधिकारी विराजमान रहे।

समारोह का आरंभ मां सरस्वती की छवि के समक्ष दीप प्रज्वलन, माल्यार्पण और पूजन से हुआ। सरस्वती वंदना, महारानी स्कूल बीकानेर की छात्राओं ने प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, अध्यक्ष के साथ मंच पर उपस्थित सभी सम्माननीय अतिथियों का तिलकार्चन, माल्यार्पण, पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। साफा पहनाकर, बैज लगाकर सम्मान किया गया; और स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनंदन किया गया।

राज्य के श्रेष्ठ कर्मचारियों और उपस्थित अतिथिगण के सम्मान में स्वागत गान "गूँज उठी शहनाई प्रांगण आप पधारे..." महारानी स्कूल बीकानेर की छात्राओं ने प्रस्तुत किया। श्री बाबूलाल जोशी संयुक्त निदेशक (प्रशासन) मा. शिक्षा राज. ने श्री सुवालाल निदेशक महोदय के संदेश का वाचन किया।

कर्मचारी नेता श्री राकेश व्यास ने सम्मान समारोह के निदेशालय स्थापना दिवस 16 दिसम्बर पर आयोजित होने पर सभी को बधाई दी साथ ही शासन से बीकानेर को शिक्षा की राजधानी बनाए जाने के आरंभिक वायदे को प्रभावी ढंग से निभाने की अपील की। कर्मचारियों के सम्मान में शिक्षकों को मिलने वाली राशि की तरह सम्मानित कर्मचारी को 11,000 रुपये, राजस्थान रोडवेज बस की यात्रा के किराए में 50% छूट, स्थानान्तरण में इच्छित स्थान की प्राथमिकता के लिए भी अपनी मांग रखी।

राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से आए चयनित बीस सम्मानित कर्मचारियों के सम्मान में प्रकाशित प्रशस्ति पुस्तिका का लोकार्पण गरिमामय मंच पर किया गया।

शिक्षा मंत्री माननीय प्रो. वासुदेव देवनानी के संदेश का वाचन श्याम सुन्दर शर्मा, वि.शि.अ. मा.शि. राज. बीकानेर ने किया।

फिर आया वो क्षण जिसकी सभी को उत्सुकता से प्रतीक्षा थी। चयनित बीस कर्मचारियों के सम्मान का सभागार में उपस्थित प्रत्येक अधिकारी, कर्मचारी, सम्मानित कर्मचारियों के परिजन, मित्रगण प्रफुल्लित थे अपने साथियों का स्वागत अभिनंदन करने के लिए। मंच से कर्मचारी का नाम उच्चारित होते ही सभागार करतल ध्वनि से गुंजायमान हो उठता। स्वागत के क्षण भावभरे थे और सम्मानित हो रहे कर्मचारी अभिभूत।

मंच से प्रशस्तियों का प्रभावी वाचन श्री सुभाष महलावत उपनिदेशक प्रशासन द्वारा विशेष शेरो शायरी के साथ किया गया। उनका साथ बखूबी श्री श्याम सुन्दर शर्मा वि.शि.अ. मा.शि.राज. बीकानेर द्वारा निभाया गया।

सम्मानित हो रहे कर्मचारियों का तिलकार्चन प्रशासनिक अधिकारी श्री राधेश्याम पुरोहित कर रहे थे तो माल्यार्पण संयुक्त निदेशक मा.शि. श्री विजय शंकर आचार्य ने किया। श्रीफल भेंट कर रहे थे विशिष्ट अतिथि श्री अजीत सिंह अतिरिक्त निदेशक प्रा.शि., साफा, प्रशस्ति, शाल मुख्य अतिथि माननीय डॉ. गोपाल जोशी विधायक बीकानेर (पश्चिम) और कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं अतिरिक्त निदेशक मा. शिक्षा राज. बीकानेर श्रीमती

प्रियंका गोस्वामी ने प्रदान किए।

वित्तीय सलाहकार मा. शिक्षा श्री जे.पी. स्वामी और श्री द्वारिका प्रसाद शर्मा, प्रधानाचार्य आई ए एस ई बीकानेर ने स्मृति चिह्न और शिविरा का विशेषांक भेंट किया।

समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री अजीतसिंह अतिरिक्त निदेशक प्रा. शिक्षा ने सम्मानित कर्मचारियों को बधाई दी और अपेक्षा की, कि विभाग के अन्य साथी भी प्रेरणा प्राप्त करेंगे। उन्होंने कहा-'अच्छा कार्य करने वाले अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं हम शिक्षा विभाग में कार्य कर रहे हैं इसे अपना सौभाग्य मानना चाहिए।'

समारोह की अध्यक्षता कर रहीं अतिरिक्त निदेशक मा. शिक्षा श्रीमती प्रियंका गोस्वामी ने कहा- राष्ट्र निर्माता के महत्वपूर्ण कार्य से हम जुड़े हैं इसका हमें गर्व हैं। हमारे विभाग के कार्मिक संख्या में सबसे ज्यादा है, बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। आने वाले समय में अपनी कार्यशैली को नई तकनीक अपना कर और परिष्कृत करेंगे। मुझे आशा है निदेशालय One of the best Directorate होगा।

समारोह के मुख्य अतिथि माननीय डॉ. गोपाल जोशी विधायक बीकानेर (पश्चिम) ने अपने उद्‌बोधन में सभी सम्मानित कर्मचारियों को एवं आयोजकों को भी बधाई एवं शुभकामना दी। उन्होंने कहा-'निदेशालय दिन-प्रतिदिन मजबूत हो इस दिशा में अधिकाधिक प्रयास होना चाहिए। कर्मचारियों की स्थिति पर विचार करना भविष्य की योजनाओं को बनाना और वर्गीकृत करना आवश्यक है। कार्यालय में बाबू (लिपिक) रीढ़ की हड्डी होता है। वह बहुत बलवान होता है। अच्छाई के लिए बलवान बने रहें। अच्छे कार्य करने वाले का सम्मान होना चाहिए, पुरस्कार भी मिलना चाहिए। इससे अच्छा कार्य करने की प्रकृति को प्रोत्साहन मिलता है।'

श्री विजयशंकर आचार्य, संयुक्त निदेशक मा. शिक्षा. राज. ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कर्मचारियों की प्रशंसा करते हुए उन्हें विभाग की Back Bone बताया। 18 से 20 घण्टे तक लगातार कार्य करने वाले श्रेष्ठ कार्मिकों की तारीफ करते हुए उन्हें नींव की ईंट बताया। 5000 उ.मा. विद्यालय, 60,000 से अधिक डी.पी.सी. पदस्थापन और शाला दर्पण जैसे विशिष्ट कार्यों की सफलता में इन्हीं कार्मिकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

निदेशालय जो कि 67 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इसका स्थापना दिवस 16 दिसंबर राज्य का शिक्षा दिवस घोषित हो इस दिशा में प्रयास किए जाएंगे। समवेत स्वरों में राष्ट्र गान से समारोह का समापन हुआ।

-मुकेश व्यास
सह सम्पादक, शिविरा, **मो. 9460618809**

सम्मानित कर्मचारियों की सूची

1. **श्री हँसराज शर्मा,** लिपिक ग्रेड-I
   राजकीय आदर्श माध्यमिक विद्यालय, हाऊसिंग बोर्ड, पाली
2. **श्री नवीन कुमार जागेटिया,** लिपिक ग्रेड-II
   कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक शिक्षा)-प्रथम भीलवाड़ा
3. **श्री लज्जाशंकर नागदा,** सहायक कार्यालय अधीक्षक
   कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), उदयपुर
4. **श्री हरगोपाल चूरा,** सहायक कार्यालय अधीक्षक
   माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर
5. **श्री गजपत सिंह,** लिपिक ग्रेड-I
   कार्यालय उप निदेशक माध्यमिक शिक्षा, भरतपुर
6. **श्री हेमन्त दाधीच,** लिपिक ग्रेड-II
   कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक-प्रथम, उदयपुर
7. **श्री राजीव अरोड़ा,** लिपिक ग्रेड-I
   कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक-II, जयपुर
8. **श्री रामनिवास शर्मा,** लिपिक ग्रेड-I
   कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, कोटा
9. **श्री राणू सिंह,** लिपिक ग्रेड-I
   माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर
10. **श्री किशन कुमार किराडू,** सहायक कार्यालय अधीक्षक
    माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर
11. **श्री गिरीश गुप्ता,** सहायक कार्यालय अधीक्षक
    कार्यालय उप निदेशक माध्यमिक शिक्षा, अजमेर
12. **श्री ज्ञानरूप राय,** कार्यालय अधीक्षक
    कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, जोधपुर
13. **श्री राजेंद्र कुमार आचार्य,** लिपिक ग्रेड-II
    राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर
14. **श्री शिव गोपाल पुरोहित,** सहायक कार्यालय अधीक्षक
    कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर
15. **श्री शंकर लाल जागा,** सहायक कर्मचारी
    राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्रीपुरा, कोटा
16. **श्रीमती अनूप कँवर,** सहायक कर्मचारी
    प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर
17. **श्री राजकुमार अनेजा,** लिपिक ग्रेड-I
    प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर
18. **श्री अमलेन्दु व्यास,** लिपिक ग्रेड-I
    कार्यालय ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी, मसूदा, अजमेर
19. **श्री रामस्वरूप सैन,** लिपिक ग्रेड-II
    कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा), अजमेर
20. **श्री भँवर लाल कुमावत,** लिपिक ग्रेड-II
    राजकीय दरबार उच्च माध्यमिक विद्यालय, सांभरलेक, जयपुर

लेखा स्तम्भ

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

❒ मनोज तंवर

राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम 1996 के प्रावधानानुसार कोई राज्य कर्मचारी/ अधिकारी जिसकी नियुक्ति दिनांक 1.1.2004 से पूर्व की है वह कर्मचारी अपनी पेंशन योग्य सेवा अवधि 15 वर्ष पूर्ण होने के पश्चात् नियुक्ति अधिकारी को तीन माह का लिखित नोटिस देकर राजकीय सेवा से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ग्रहण कर सकता है। स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के संबंध में राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम 1996 में निम्न नियम व प्रक्रिया निर्धारित है:-

1. नियम 50 के अनुसार वह कर्मचारी स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के पात्र माना जाएगा जिस कर्मचारी ने पेंशन गणना योग्य सेवा अवधि 15 वर्ष पूर्ण कर ली हो।
2. नियम 50 (1) के अनुसार 15 वर्ष की पेंशन योग्य सेवापूर्ण होने पर कर्मचारी स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति हेतु लिखित नोट्स नियुक्ति अधिकारी को प्रस्तुत करके सेवानिवृत्ति ग्रहण कर सकता है। नोटिस की अवधि 90 दिवस निर्धारित है।
3. नियम 50(2) के अनुसार स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के संबंध में नोटिस अवधि में नियुक्ति अधिकारी से सक्षम स्वीकृति जारी करना आवश्यक है। निर्धारित नोटिस अवधि 90 दिवस में सक्षम नियुक्ति अधिकारी कर्मचारी द्वारा प्रस्तुत स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के नोटिस पर इंकार (Refuse) नहीं करता है तो स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति निर्धारित नोटिस अवधि 90 दिवस की समाप्ति पर स्वतः प्रभावी मानी जाएगी।
4. नियम 50(1) में प्रस्तुत स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के नोटिस के संबंध में नियुक्ति अधिकारी सामान्य प्रकरणों में निर्धारित अवधि 90 दिवस में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति को स्वीकृत करेगा। निम्न प्रकरणों में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति राज्य सरकार की सक्षम स्वीकृति प्राप्त करने के पश्चात ही स्वीकृत करने में सक्षम होगा।

(i) कर्मचारी निलम्बनाधीन हो।

(ii) कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही लम्बित/प्रक्रियाधीन हो।

(ii) कर्मचारी के विरुद्ध समक्ष न्यायालय में न्यायिक प्रक्रिया लम्बित/प्रक्रियाधीन/ विचाराधीन हो।

5. नियम 50 (3)(a) के अनुसार स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के इच्छुक कर्मचारी नियम 50(1) में अंकित नोटिस अवधि 90 दिवस को कम करने/बताने के संबंध में नियुक्ति अधिकारी को उचित कारणों के आधार पर आवेदन कर सकता है।
6. नियम 50(3) (b) के अनुसार कर्मचारी द्वारा प्रस्तुत आवेदन पत्र (नोटिस अवधि क्रय करने) के संबंध में कर्मचारी द्वारा प्रस्तुत कारणों के आधार पर निर्णय लेने हेतु पूर्ण स्वतंत्र होंगे।
7. नियम 50(1) के आधार पर कर्मचारी द्वारा संसद, विधानसभा, नगर निगम, पालिका व पंचायत चुनाव लड़ने के आधार पर प्रस्तुत स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के नोटिस को नियुक्ति अधिकारी बिना किसी दुराग्रह के 15 वर्ष की पेंशन योग्य सेवा को प्रमाणित करवाकर सेवानिवृत्ति की स्वीकृति तत्काल जारी करेगा। चुनाव लड़ने के आधार पर प्रस्तुत स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के नोटिस के संबंध में 90 दिवस की निर्धारित सीमा अवधि छूट योग्य/लागू नहीं होगी।
8. नियम 50 (4) के अनुसार कर्मचारी स्वैच्छिक सेवानिवृति हेतु एक बार प्रस्तुत नोटिस को वापस नहीं ले सकता है। राज्य सरकार ने पूर्व में विद्यमान नियम नोटिस अवधि 90 दिवस में प्रस्तुत नोटिस को सहमति के आधार पर कर्मचारी वापस लेने संबंधी प्रावधान को माह दिसम्बर 2015 से समाप्त कर दिया है।
9. नियम 50(5) के अनुसार स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ग्रहण करने वाले कर्मचारी को सेवानिवृत्ति संबंधी समस्त परिलाभों (पेंशन, उपादान, अवकाश, नकदीकरण) का भुगतान स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति दिनांक से पूर्व प्राप्त वेतन के अनुसार देय होंगे।
10. स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति नियम 50 (1) के अनुसार स्वीकृति होने पर कर्मचारी को अधिकतम 5 वर्ष (कुल पेंशन गणना योग्य सेवा 28 वर्ष से अधिक नहीं होने की शर्त पर) काल्पनिक आधार पर केवल पेंशन गणना योग्य सेवा में वृद्धि का लाभ देय होगा। समर्पित नकदीकरण भुगतान, पेंशन राशि, उपादान राशि की गणना में उक्त काल्पनिक अवधि का लाभ देय नहीं होगा।
11. नियम 50 (6) के अनुसार स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के उक्त नियम उन कर्मचारियों पर लागू नहीं होंगे जो प्रतिनियुक्ति पद पर स्थाई रूप से समायोजन के पश्चात किसी स्वशासी बोर्ड/निगम/पब्लिक सेक्टर में पद स्थापित हो तथा उस सेवा में रहते हुए स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का नोटिस प्रस्तुत कर रहे हैं।
12. नियम 50(7) के अनुसार स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का आवेदन/नोटिस कोई भी कर्मचारी अदेय अवकाश पर होने व बिना अवकाश से लौटने पर प्रस्तुत करता है तो संबंधित कर्मचारी का स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति आवेदन/नोटिस अदेय अवकाश प्रारम्भ होने की दिनांक से प्रभावी माना जाएगा। संबंधित कर्मचारी को स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति सक्षम अधिकारी द्वारा स्वीकृत करने की स्थिति में अदेय अवकाश अवधि के दौरान भुगतान की गई वेतन की राशि संबंधित कर्मचारी से वसूल की जाएगी।
13. नियम 50(8) के अनुसार स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के इच्छुक कर्मचारी को नियम 50 (1) के अन्तर्गत प्रस्तुत नोटिस से पूर्व यह संतुष्ट होना आवश्यक है कि उसने 15 वर्ष की पेंशन योग्य सेवा पूर्ण कर ली है तथा नोटिस नियुक्ति अधिकारी को ही प्रस्तुत करना होगा। उक्त नियमों के अनुसार नियुक्ति अधिकारी का तात्पर्य यह है कि वह अधिकारी जो किसी सेवा के पद पर नियुक्ति देने हेतु सक्षम है।

लेखा अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414429951

पुस्तक समीक्षा

राजस्थान के लोक देवता

डॉ. राधाकिशन सोनी प्रकाशक : कल्पना (इण्डिया) पब्लिशर्स, बीकानेर प्रथम संस्करण : 2013 ई. पृष्ठ संख्या : 144 मूल्य : ₹ 250.00

राजस्थान अपने शौर्य,पराक्रम के साथ भक्तिभाव और दानशीलता के लिए प्रसिद्ध है। यहां धरती, धर्म, नारी, गाय और यहां तक कि वृक्षों की रक्षा के लिए वीरों ने अपने प्राण दिए हैं। यहां के वीरों की परंपरा रही है कि वे मरने को भी मांगलिक कार्य मानते हैं। तभी कहा गया है-

सूर न पूछै टीपणी
सुकन न देखै सूर।।
मरणै नै मंगल गिणै
समर चढै मुख नूर।।

यहां के वीर जनकल्याणकारी कार्यों के कारण पूजे गए हैं। जिन लोगों ने निःस्वार्थ भाव के साथ आत्मोत्सर्ग किया तथा अपने जीवन में संचित सिद्धियों के द्वारा मरणान्तक कष्ट से पीड़ितजन को चमत्कारिक राहत दी उन सिद्ध पुरुषों को 'लोक देवता' कहा जाने लगा।

डॉ. राधाकिशन सोनी की पुस्तक 'राजस्थान के लोक देवता' में ऐसे ही व्यक्तित्वों का परिचय दिया गया है। पुस्तक अपने नाम को सार्थक कर रही है। अनेक वीरोचित आदर्श नायक जिन्होंने समाज हित में अपना बलिदान दिया,परहितकारी आदर्श को अपनाकर अपनी धरती, धर्म, संस्कृति की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर किये। इस पुस्तक में उन्हें पढ़कर पाठक निश्चित ही गौरवान्वित होंगे। राजस्थान में पांच लोकदेवता प्रसिद्ध है-

पाबू हड़बू, राम दे मांगलिया मेहा।
पांचू पीर पधारज्यो गोगाजी जेहा।।

लेखक ने इन लोकदेवताओं के बारे में सम्पूर्ण परिचय इस पुस्तक में करवाया है। पाबूजी राठौड़, बाबा रामदेव, गोगाजी चौहान, तेजाजी, हड़बूजी, मांगलिया जी की लोकसंबंधक जानकारी तो लेखक ने दे दी है साथ ही ऐसे व्यक्तित्व जिन्होंने नारी, गाय और वृक्षों की रक्षा के लिए भी प्राणोत्सर्ग किया, उन महान आदर्श नायकों की जानकारी पाठकों तक पहुंचाने का सुंदर प्रयास किया है।

पुस्तक का कवर पृष्ठ भी सुंदर है जिसमें सोलह लोक नायकों के चित्र दिए गए हैं। इस पुस्तक में राजस्थान के ऐसे जननायकों का परिचय भी है जो सम्पूर्ण राजस्थान में नहीं बल्कि एक क्षेत्र विशेष तक जाने जाते हैं। इनमें झिमाजी, हरिराम जी, देवनारायणजी, मल्लीनाथ जी, भूरिया बाबा जैसे सिद्ध पुरुष भी आते हैं। इसके अलावा राजस्थान के संत संप्रदाय के प्रवर्तक जसनाथ जी और जाम्भोजी के आदर्श, उनके नियम तथा उनके किए सत्कर्मों का विवरण भी इस पुस्तक में मिलता है। 'प्रेम के देवता इलोजी' में लेखक ने विस्तृत रूप से होलिका और इलोजी के प्रेम संबंध तथा प्रह्लाद की कथा को देकर पाठकों को महत्त्वपूर्ण जानकारी दी है।

चार हाथों वाले देवता के नाम से प्रसिद्ध स्वामी भक्त कल्लाजी का वीरोचित कार्य देखकर अकबर भी नतमस्तक हो गया, उनकी शौर्य गाथा को लेखक ने ओजता के साथ लिखा है।

लेखक डॉ. राधाकिशन सोनी ने ऐतिहासिक जानकारियां इकट्ठी करके इस पुस्तक को साकार रूप दिया है। लेखक ने इन लोक देवताओं के 'परचों' को भी बताया है जो जन-जन में व्याप्त है। हालांकि इनके जन्म तथा चमत्कारों के बारे में लेखक ने स्पष्ट किया है कि इसमें किसी अंश को अधिकृत न मानें क्योंकि यह सब जनश्रुति पर आधारित हैं। परन्तु फिर भी कह सकते हैं कि डॉ.सोनी ने इस विषय पर गहन शोध किया है तथा इन जानकारियों से पाठकों को निश्चय ही लाभ होगा। लोक मानस में व्याप्त जानकारियों से परिपूर्ण यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

-डॉ. नमामीशंकर आचार्य
कोलोट के मंड, जोशीवाड़ा, बीकानेर
मो. 9829321692

हरी-हरी सुरमई और काली गौरैया

मोनिका गौड़ प्रकाशक: पुस्तक मंदिर, प्रथम रास्ता, श्री दुगरी नागरी भंडार, बीकानेर-334001 संस्करण: 2013 पृष्ठ संख्या : 96 मूल्य: ₹ 150.00

मानवीय भावानुभूतियों में 'अवांछनीय की अनिवार्यता' का प्रत्याख्यान करने वाली कवयित्री मोनिका गौड़ की अप्रतिम काव्यकृति 'हरी-हरी सुरमई और काली गौरैया' में कुल पचहत्तर कविताएं है। लगता है जैसे काली गौरैया का प्रतीक कवयित्री का कवि-मन हरी-हरी सुरमई की तलाश में जल-थल-नभ में अनवरत उड़ान भर रहा है। कवि-मन में एक पीर है प्रेम की, एक पिपासा है प्यार-दुलार पाने की और अरमानों को भावों से भरने की। तभी तो 'अपनी तलाश में' कवयित्री लिखती हैं मैं/ अपने आप से अपरिचित/भटक रही हूं/ कस्तूरी मृगी-सी/ तृष्णाओं के पीछे/स्वयं को पहचानूं तो कैसे? स्वत्व की पहचान किसी परिधि में सिमट कर नहीं रहती, तभी तो 'अनुप्रास' कविता में कहा गया है- 'पंछी/पवन/पानी/प्यास/प्रवाह/प्रकाश/परछाइयां/पागलपन/प्यार/प्रेम/कोई भी रोके नहीं रुकते। कमबख्त किसी/परिधि को नहीं समझते। (पृ. 30)

यहां 'रेत का दुःख' के ब्याज से मरुभूमि में जीवनयापन करने वालों की नियति उजागर हुई है, वहीं 'साजिश' में राजनीतिक वाद और वादों में पिसती प्रजा के सामयिक यथार्थ को बेनकाब किया गया है। समाज में लड़कियों के जन्म पर टिप्पणी करते हुए कवयित्री लिखती हैं- ''लड़कियां सूरज की किरणें/ जो घुस आती हैं/ घर आंगन में/अनचाहे/छेदों से/दरारों से.....' वस्तुतः धरती-तल को आलोकित करने वाली नारी-शक्ति प्रणम्य है। कवयित्री कहती है- ''लुटाती है/ अपना प्यार, स्नेह, सर्वस्व/ अपने-परायों के बीच/लड़कियां/ कैसे करती है ये सब?'' (पृ. 59)

कामायनी में 'प्रसाद' लिखते हैं- 'पंचभूत का भैरव मिश्र/शंपाओं के शकल निपात/उल्का लेकर अमरशक्तियां/खोज रही ज्यों खोया प्रातः।' इस काव्यकृति में भी कुछ ऐसा ही एहसास पाठक को आह्लादित करने लगता है, जहां जीवन के विविध घटकों को वह व्यष्टिपरक चेतना से समष्टिगत चेतना में समाहित होते अनुभूत करता है। यहां पंचभूतों पर भी कवयित्री ने उद्गार व्यक्त किए हैं। प्राणवायु की पावनता का स्मरण करते हुए कवयित्री लिखती है- "हवा हूं/सुरभित-शांत/जीवनदायिनी/यह तुम पर है/कि क्या मिलाते हो /मुझमें....।" (पृ. 53)

जीवन को ऊर्जस्वित करने वाली ऊर्जा के सदुपयोग-दुरुपयोग में मानवीय विवेक को रूपायनी उठाते हुए कवयित्री लिखती है- "अग्नि हूं/पावन/जीवनदायी/प्रकाशवान/ऊर्जावान/यह तुम पर है/कि क्या सीखते हो।/मुझसे जलाना...। (पृ. 54)

'आकाश', 'जल' और 'धरती' के बारे में भी कवयित्री मानवीय विवेक और संयम की कामना करती है। प्रदूषित मानवीयवृत्ति के निषेध की शिवकामना इन कविताओं में अंतर्निहित है। विषय-वैविध्य के होते हुए भी इन कविताओं में एक आंतरिक समानुभूतता, आह्लादकारी रसात्मकता एवं भाव प्रगल्भता सहज बोधगम्य है। यहां कवि-मन प्रेम के पारावार में अवगाहनकारी हो उठता है। 'सरगम' कविता में कवयित्री के अंतस्तल में उमड़ते भावोद्वेगों में कविता के 'रस' का एहसास किया जा सकता है। कवयित्री लिखती है-'एक नदी बहती है /मेरे भीतर/अंगड़ाइयां लेती हैं भावनाएं....।' (पृ. 88) इन्हीं भावनाओं के विविध आयामों को नए-नए रूपाकार देती ये कविताएं भाषा-शैली, भाव-बिंबों एवं प्राकृतिक-नैसर्गिक सौंदर्यपरक उपमानों के सूक्ष्म प्रयोग से प्राणमयी हो उठी हैं। पुस्तक का आवरण नयनाभिराम एवं अंतर्वस्तु का उपस्थापक है। लगता है कि काली गौरिया हर कहीं हरियाली की सौंधी-सौंधी महक सहेजने में प्रयत्नरत है, उसकी ऊंची उड़ान और दूरदृष्टि कल्याणकारी है, मंगलमयी है और आश्वस्त करने वाली है। कवयित्री को बधाई।

-डॉ. मदन सैनी, शोध-निदेशक, हिंदी
अजायबघर के पीछे, विवेक नगर, बीकानेर
मो. 7597655150

दो फलाँग आगे

डॉ. मूलचंद बोहरा प्रकाशक : सुभद्रा पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली-94 प्रथम संस्करण: 2015 पृष्ठ संख्या : 184 मूल्य : ₹ 300.00

'दो फलाँग आगे' अठारह भागों में विभक्त, मूलचन्द बोहरा द्वारा किया गया ऐसा विमर्श है, जो कथाकार मृदुला गर्ग के साहित्य को नये सिरे से जानने-समझने की भूख जगाता है। पुस्तक का शीर्षक 'दो फलाँग आगे' काफी सार्थक और सटीक है। मृदुला ने आज से चार दशक पहले आज के प्रासंगिक साहित्य का सर्जन कर अभूतपूर्व दूरदर्शिता का परिचय दिया है। संभवतः लेखिका की इसी दूरदर्शिता को शब्दबद्ध करने के लिए आलोचक ने 'दो फलाँग आगे'- समय से भी और परंपरा से भी-शीर्षक दिया है। पुस्तक में लेखक ने न केवल मृदुला के कथा साहित्य की समीक्षा की है बल्कि उनके संदर्भ से मंजुल भगत, जैनेन्द्र, राजेन्द्र यादव, मनोहरश्याम जोशी, अनामिका के कथा साहित्य पर भी अपनी टीप प्रस्तुत की है।

पुस्तक का पहला अध्याय 'अनुभूति का रचाव: तर्क, पीड़ा और संवाद' है। इसमें आलोचक ने बताया है कि रचनाकार अपने समय और समाज से जुड़ता है, तो उसका सामना कुछ सवालों से होता है। बस इन्हीं सवालों के जवाब तलाशने की जब वह जिद करता है, तो साहित्य का जन्म होता है। लेखक के शब्दों में- 'हर युग उनकी अपनी परिभाषाएं देता है और हर बार हमें लगता है कि जिस अनोखे और निहायत निजी ढंग से हम इन्हें देखते हैं, इन से जूझते हैं या इनका जो रूप हमारे सामने खड़ा होता है, वह सब पहले नहीं हुआ। .... कुछ मूलभूत सवालों के स्वरूप कभी नहीं...... बदलते जाते हैं।" (पृष्ठ संख्या-27) इस अध्याय में आलोचक ने लेखिका की रचना प्रक्रिया का खुलासा करते हुए लिखा है कि सर्जन में तर्क, पीड़ा और संवाद की बराबर भागीदारी जरूरी है। अगर यह संतुलन गड़बड़ाता है, तो निश्चित रूप से रचनाकर्म भी प्रभावित होता है।

इसी क्रम में विवाह मृदुला की स्त्रीमन की कहानियों का जिक्र करती है। यह जिक्र इस पुस्तक का सर्वाधिक मार्मिक हिस्सा कहा जा सकता है। स्त्री विमर्श पर अपनी बात करते हुए पुस्तक अंजु दुआ जैमिनी की रचना 'मोर्चे पर स्त्री' का हृदयस्पर्शी उदाहरण प्रस्तुत करती है। गार्गी और याज्ञवल्क्य के शास्त्रार्थ के दौरान गार्गी को विजित होते देखकर याज्ञवल्क्य का कथन- 'अरी, ओ गार्गी, अपनी खोजबीन को ज्यादा दूर तक मत ले जाओ, अन्यथा तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।' (पृष्ठ संख्या-40) किसी भी सहृदय पाठक को विचलित करने के लिए काफी है और यह विचलन उस समय और अधिक बढ़ जाता है, जब वह आगे पढ़ता है- 'गार्गी चुप हो गई। यह चुप्पी वर्षों से बनी हुई है।' इस चुप्पी को तोड़ने का सामर्थ्य सिर्फ और सिर्फ आलोचक को मृदुला की कहानियों टुकड़, दुनिया का कायदा, उपन्यास कठगुलाब आदि में दिखाई देता है। इन रचनाओं में मृदुला ने नारी को शोषण, पीड़ा और अत्याचार से मुक्ति पाने का रास्ता सुझाया है। इन्हीं कहानियों में प्रेम कथ्य या अकथ्य का विमर्श व्यंजित हुआ है। हालांकि पहली नज़र में पाठकों को लगता है कि आलोच्य लेखिका विवाह से अधिक महत्व 'विवाहेत्तर संबंधों' को देती है और आलोचक उनकी इस बात के हिमायती हैं, पर पूरा आलेख पढ़ने के बाद लगता है कि यहां तो लेखिका विवाह के नाम पर हो रहे अन्याय के विरुद्ध नारी की आवाज को बुलंद कर रही है और आलोचक लेखिका के इस प्रयास के कायल हैं। अभी तक अधिकतर सर्जकों ने स्त्री को या तो अलौकिक माना है या फिर शोषण वर्ग का, परंतु आलोचक के शब्दों में मृदुला गर्ग के साहित्य में- 'स्त्री यहां न पुरुष से श्रेष्ठ है और कमतर, बल्कि पुरुष की तरह खूबियों-खराबियों समेत एक व्यक्ति है।' (पृष्ठ संख्या 80)

आलोचक का मानना है कि कितना भी नारी सशक्तीकरण का ढोल पीटें, लैंगिक समानता का राग आलापें, लेकिन जब तक पुरुष अंतरतम से नारी को अपने जैसा कमियों-अच्छाइयों से भरा प्राणी नहीं मान लेता, सब फिजूल है, पुस्तक को और अधिक प्रभावी और पठनीय बनाता है। अलबत्ता कब टिपाइंट जैसे

नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक लड़कियों की उपस्थिति को लैब कार्य में बाधा बताते हैं और सिंगल सैक्स लैब का पक्ष लेते हैं, उस समय आलोचक का यह प्रयास एक स्त्री की फिक्र ही सही एक सार्थक प्रयास तो है। इसी समीक्ष्य पुस्तक के पृष्ठ 62 पर उपन्यास 'मैं और मैं' का वर्णन है, जिसमें एक कहानी 'अंधकूप का चिराग' का जिक्र है। दीपक विशाल कुएं में रोशनी फैलाने की ताब नहीं रखता, फिर भी उसका समर्पण, उसकी निष्ठा देखने वाले को अंधकार की अपेक्षा उजाला देखने को तो मजबूर करती ही है।

मृदुला स्त्री-पुरुष के संबंधों पर बात करने के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों पर भी बात करती है। बाजार का मोहजाल, पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति, अमरीकी फैशन-परस्ती, पर्यावरणरोधी वातावरण के खिलाफ उनकी कलम धारदार होकर चलती है। आलोचक ने लेखिका के इसी लेखन को 'हवा, पानी और सूरज', 'बाजार की नैतिकता और मृदुला का लेखन' आदि में समेटा है। पुस्तक में 'दो फर्लांग आगे' नाम से भी आलेख है, जो पुस्तक के शीर्षक की सार्थकता को प्रकट करने वाला है। मृदुला गर्ग कुछ अतिरिक्त रूप से वैयक्तिकता स्वतंत्रता की पक्षधर अपने लेखन के प्रारंभिक काल से रही है। उनका मानना है कि 'प्रेम भी...... त्याज्य है।' (पृष्ठ संख्या-116) लेखिका जिस आजादी की हिमायती उस समय रही थी, आज उसका प्रत्यक्षीकरण हम आधुनिक लड़कियों में देख सकते हैं। सच में! चार दशक पूर्व वे जिस दिव्य दृष्टि से देख सकीं थे, वे सब। अद्भुत, अतुलनीय, असाधारण, असामान्य। समीक्ष्य पुस्तक में बोहरा जी ने लेखिका की इसी अद्भुत- अतुलनीयता को अपनी पैनी नजर से परखकर प्रस्तुत किया है।

इसी क्रम में आलोचक 'कविता के बहाने गद्यपाठ' में लिखते हैं कि कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें गद्य में स्पष्ट नहीं किया जा सकता, अतः लेखिका अपने लेखन को मुकम्मलता प्रदान करने के लिए कदा-कदा पद्य अपनाती हैं। आलोचक ने भी इसी तरह अपनी बात कहने के लिए पद्य का सहारा लिया है। जिस तरह मां लाडली/लाडले को नहला-धुलाकर तैयार करने के बाद एक सरसरी दृष्टि डालती है, कहीं कुछ कमी तो नहीं- उसी तरह का है आलोचक का आलेख 'सर्जन की राह : जाने-अनजाने मोड़'। इसमें आलोचक ने बहुभाषी, बहुज्ञानी, माला का बादूगर जैसे खिताबों से नवाजा है और स्वयं भी सहज ही उन समस्त खिताबों के दावेदार बन गए हैं। अंतिम पृष्ठों पर लेखिका के समस्त कथा साहित्य का मय प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष ब्यौरा प्रस्तुत किया है, जो सुधी पाठकों को यहां वहां की भटकन से बचाने में मददगार है। पुस्तक का आवरण आलोचक के किशोर बेटे ओजस बोहरा ने तैयार किया है, बहुत सुंदर और आकर्षक बना है। यह पुस्तक कथा आलोचना के क्षेत्र में 'दो फर्लांग आगे' की ओर बढ़ता हुआ एक कारगर प्रयास है।

–अमिता मिश्रा

बीकानेर

मो. 9460187643

ब्रह्मसूत्र (वेदांत दर्शन)

व्याख्याकार डॉ. के.डी. शर्मा, रामकिशन शर्मा
प्रकाशक : सुशीला कैवल्य सेवा संस्थान, बीकानेर
संस्करण : 2015 पृष्ठसंख्या : 306 मूल्य : ₹200

महर्षि वेदव्यास रचित ब्रह्मसूत्र (वेदांत-दर्शन) की संस्कृत भाषा में अनेक भाष्य तथा टीकाएं उपलब्ध हैं, परन्तु हिन्दी में कोई सरल तथा सर्वसाधारण के समझने योग्य टीका नहीं है। अतः साधारणजन के समझने हेतु डॉ. के.डी. शर्मा तथा रामकिशन शर्मा ने इस ग्रन्थ की सरल हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत कर प्रशंसनीय कार्य किया है।

लेखक-द्वय ने पुस्तक के प्रारम्भ में 'संक्षिप्त सार' में ब्रह्मसूत्र के प्रथम चार सूत्रों का संक्षिप्त विवेचन किया है। ये चारों सूत्र इतने महत्वपूर्ण हैं कि इनकी संज्ञा 'चतुःसूत्री ब्रह्मसूत्र' के नाम से प्रसिद्ध है तथा सम्पूर्ण ब्रह्मसूत्र का सार इन चार सूत्रों में समाहित है।

लेखक द्वय ने प्राक्कथन में बताया है कि ब्रह्मसूत्र का प्रयोजन उपनिषद् वाक्यार्थ निर्णय पूर्वक ब्रह्म और जीव के ऐक्यरूप आत्मतत्व का बोध कराना है।

पुस्तक के प्रारम्भ में ही ब्रह्मसूत्र के समस्त अध्यायों का सारांश भी दिया गया है, जो कि बहुत उपयोगी बन पड़ा है।

ब्रह्मसूत्र के प्रथम अध्याय में अनेक प्रकार से विभिन्न उपनिषदों में सभी वेदान्त वाक्यों का एकमात्र परब्रह्म के प्रतिपादन में ही अन्वय है। अतः इस अध्याय का नाम समन्वयाध्याय है। द्वितीय अध्याय में उपनिषदों में प्रतीत होने वाले सब प्रकार के विरोधाभासों का निराकरण किया गया है, अतः इस अध्याय का नाम अविरोधाध्याय है। तृतीय अध्याय का नाम साधनाध्याय तथा चतुर्थ अध्याय का नाम 'फलाध्याय' है। इस प्रकार इस ग्रन्थ में कुल चार अध्याय तथा 555 सूत्र हैं।

इस पुस्तक के गहन अध्ययन से पाठक को सम्यक् आराधना (भक्ति, ध्यान और प्राणीधान आदि) काल में परब्रह्म परमात्मा का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। इस ग्रन्थ के अनुसार परब्रह्म परमात्मा ही इस जगत की उत्पत्ति, स्थिति (पालन) तथा प्रलय के कारण हैं।

–जगन्नाथ प्रसाद श्रीवास्तव

चन्दन सागर कुएं के पास

बी.सेठिया गली, महात्मा गांधी रोड, बीकानेर

मो. 9571282491

भामाशाह

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मायापुर को श्री भंवरलाल बियानी से सत्र 2014-15 में 22 सेट टेबल स्टूल लागत 25,000 व सत्र 2015-16 में 26 सेट लागत 40,000 रु. प्राप्त हुए। श्री सिद्धकरण जी सियाग से एक ऑफिस टेबल लागत- 2400 रुपये, श्री हरिराम जी सियाग से एक पंखा रुपये 1200, श्री पप्पूनारायण सिंह राठौड़ से एक पंखा लागत रु. 1200 प्राप्त हुए।

प्रधानाचार्य

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मायापुर (नागौर)

शाला प्रांगण से

1. शाला ने मनाया शताब्दी समारोह–श्री गुमान राजकीय विद्यालय इन्द्रोका, जोधपुर की स्थापना (4 नवम्बर, 1915) दिवस के 100 वर्ष (शताब्दी) पूर्ण होने के सुअवसर पर शाला परिवार द्वारा शाला प्रांगण में दिनांक 29 नवम्बर 2015 को बड़े हर्षोल्लास के साथ शताब्दी समारोह मनाया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री वासुदेव देवनानी, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा एवं भाषा विभाग राजस्थान सरकार,जयपुर थे। समारोह के अध्यक्ष सांसद श्री गजेन्द्रसिंह शेखावत एवं विशिष्ट अतिथि श्री नारायण पंचारिया, सांसद राज्यसभा, श्री जोगाराम पटेल विधायक लूणी, श्री बाबूसिंह राठौड़, विधायक शेरगढ़, श्री करणसिंह उचियाड़ा अध्यक्ष चौपासनी स्कूल रहे। समारोह में बड़ी संख्या में ग्रामीणों/अभिभावकों ने सिरकत की। विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर भाव विभोर किया। छात्रों ने मलखम की शानदार प्रस्तुति दी। जोधपुर जिले में त्रिवटी तहसील के गांव इन्द्रोका स्थित श्री गुमान राजकीय विद्यालय के इस शताब्दी समारोह पर माननीय शिक्षामंत्री श्री वासुदेव देवनानी व उपस्थित मंचासीन ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का विधिवत् शुभारंभ किया। कार्यक्रम पूर्णतः सादगीपूर्ण एवं शान्तिपूर्ण रहा। इस कार्यक्रम में मंचासीन अतिथियों के अलावा उप प्रधान प्रेमसिंह खींची, कर्नल श्री भंवर सिंह खींची, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) प्रथम श्री ब्रह्मपाल सिंह चौहान जोधपुर की उपनिदेशक (माध्यमिक शिक्षा) श्रीमती नूतन बाला कपिला ने समारोह को सम्बोधित किया। शिक्षा मंत्री ने समस्त अतिथियों की उपस्थिति में छात्राओं को निःशुल्क साइकिलों का वितरण किया। समारोह में छात्राओं ने देशभक्ति व लोक गीतों पर नृत्य प्रस्तुत कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अतः विद्यालय की संस्था प्रधान श्रीमती हेम कंवर राठौड़ ने मंचासीन अतिथियों, आगुन्तक अधिकारियों, ग्रामीण अभिभावकों एवं व्यवस्था में सहयोग करने वाले साथी अध्यापकों तथा कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले छात्र–छात्राओं का आभार व्यक्त किया।

2. गोलूवाला हनुमानगढ़–राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, गोलूवाला (हनुमानगढ़) में दिनांक 8 नव. 15 को 'राष्ट्रीय सेवा योजना' ईकाई एवं अ.भा. साहित्य परिषद् राजस्थान की पीलीबंगा इकाई द्वारा संयुक्त रूप से 'काव्यगोष्ठी' का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी के मुख्य अतिथि हनुमानगढ़ के वरिष्ठ कवि नरेश मेहन तथा विशिष्ट अतिथि श्री लालचंद छत्रवाल व मनोज स्वामी थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुखदेव सिंह गोदारा (प्राध्यापक) ने की। सरस्वती पूजन के पश्चात् कवियों ने हास्य व्यंग्य कविताएं, दोहे व गजल आदि प्रस्तुत कर समा बांधा। वरिष्ठ कवि नरेश मेहन ने संयुक्त परिवार का चित्रण करते हुए 'घर चाहे कैसा हो, उसके एक कोने में खुलकर हँसने की जगह रखना' शाह रसूल राठ ने भाईचारे पर हमें लड़ाने वाला सदा ही हारा है/ देश की बुनियाद में भाईचारा है, गजल सुनवाई। कवि दयाराम ने ''लड़की आंगन की तुलसी/ खिलना, महकना, बढ़ना जानती है।/ किन्तु वह नहीं जानती.... को सराहा गया। मनोज देपावत ने ''मैं हिंदुस्तान हूँ/मेरा हर दिन त्योहार होता है कविता पढ़ी तो हास्य कवि हरीश ने राजस्थानी में ''म्हारी माँ म्हारी वकील है/जकी लड़ सके/ म्हारै खातर/ सारै जहान सूं/सारा इन्सान स्यूं'' इनके अलावा नरेश वर्मा, कवि सुरेंद्र करीर, राजेन्द्र साह् एवं जगतार सिंह मठाडू ने कविताएं गजल आदि सुनाकर खूब दाद बटोरी। अन्त में अध्यक्ष ने स्वयंसेवकों को सद् साहित्य का अध्ययन कर उत्तम चरित्र निर्माण करने की प्रेरणा दी एवं कवियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संयोजन NSS प्रभारी दयाराम (व्याख्याता हिन्दी एवं संचालन श्री जगतार सिंह (प्राध्यापक)) ने किया। कार्यक्रम शानदार व शांतिपूर्ण तथा उत्साह वर्धक रहा।

रा.आदर्श उ. मा. वि. में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) द्वारा एकता दिवस मनाया गया। कार्यक्रम प्रभारी दयाराम के निर्देशन में 'रन फॉर युनिटी', सलोगन लेखन एवं मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 'एकता के लिए दौड़' (Run For Unity) को शाला प्रभारी गोपालराम ने हरी झण्डी दिखाकर शाला से रवाना किया जो पांच किमी क्षेत्र में एकता का संदेश देते हुए वापिस शाला में आकर विसर्जित हुई। इसके पश्चात् मेहन्दी व सलोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मेहन्दी में सुमन व पूजा प्रथम, सविता द्वितीय तथा मानवी तृतीय स्थान रही। स्लोगन में पूनम ने प्रथम, पूजा–द्वितीय, राहुल छींपा–तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अन्त में हुए उद्बोधन में श्री सुखदेव सिंह गोदारा, श्री शाह रसूल राठ एवं शाला प्रभारी गोपालराम ने सरदार वल्लभ भाई पटेल (लौहपुरुष) के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला तथा एकता दिवस के महत्व बताया। सभी प्रकार के भेदभावों को मिटाकर एकता स्थापित करने पर बल दिया। प्रतियोगिता में विजेताओं को बधाई दी। संचालन दयाराम प्राध्यापक ने किया।

3. पाली– श्री आईजी बालिका विद्यापीठ उ.मा.वि. जवाली (पाली) में मानवाधिकार दिवस समारोह आयोजित किया गया। प्रधानाचार्य जगदीश चन्द्र जोशी के निर्देशन में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में छात्रा सुमित चौधरी व शान्ति चौधरी प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहें। जिन्हें सम्मानित किया गया। इस अवसर पर व्याख्याता अरविन्द कुमार व श्रीमती कमला चौधरी ने उद्बोधन किया। कार्यक्रम का संचालन सुश्री सारिका गहलोत ने किया।

4. टापरा, बालोतरा– राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय टापरा में 26 नवम्बर–15 को संविधान दिवस मनाया गया। संविधान दिवस के महत्व पर पुरस्कृत शिक्षक फोरम के जिलाध्यक्ष सालगराम परिहार ने प्रकाश डाला। संवैधानिक व्यवस्था को समझने की अपील विद्यार्थियों से की। इस अवसर पर न्यायिक दौड़ का आयोजन करवाया गया जिसमें प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बालक–बालिकाओं को पुरस्कृत किया गया।

3 दिसम्बर 2015 को विशेष योग्य (निःशक्तजन) दिवस के अवसर पर विद्यालय में

नियमित अध्ययनरत कक्षा 10 के छात्र मदनराम राईका तथा कक्षा 9 में अध्ययनरत श्रीराम पटेल (निःशक्तजन) को पुरस्कृत शिक्षक फोरम जिला शाखा के अध्यक्ष सालगराम परिहार ने शॉल ओढ़ाकर तथा माला पहनाकर सम्मान किया गया। कार्यवाहक प्रधानाचार्य सुन्दरलाल बोस ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

5. लाडखानी सीकर– राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय सबलपुरा में प्रतिभा सम्मान एवं प्रधानाचार्य कुरड़ाराम मील का अभिनन्दन समारोह श्रीमाधोपुर विधायक झाबर सिंह खर्रा के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुआ। अपने उद्बोधन में खर्रा ने शिक्षकों से आह्वान किया कि विद्यार्थियों को संस्कारवान एवं चरित्र निर्माण की शिक्षा देनी चाहिए। अध्यक्षता करते हुए पूर्व विधायक गोवर्धन वर्मा ने कहा कि आज वही व्यक्ति सफल है, जो शिक्षित है। विशिष्ट अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक, प्रथम, रैवाराम खीचड़, कोचिंग के निदेशक–रामदेव सिंह गढ़वाल, विरेन्द्र पचार व दीनदयाल पचार, शिक्षाविद्–शिशुपाल सिंह, नूर मोहम्मद पठान, पचार ग्रुप के बलदेवा राम व जवाहर सिंह, कुलदीप रिणवा, धर्मपाल चौधरी और चंद्रप्रकाश शर्मा, दिलीपसिंह शेखावत थे।

पचार ग्रुप व भामाशाहों एवं विद्यार्थियों द्वारा प्रधानाचार्य कुरड़ाराम मील को एक्टिवा स्कूटी देकर सम्मानित किया। मील का बोर्ड परीक्षाओं का शतप्रतिशत परीक्षा परिणाम देने एवं ऐतिहासिक नामांकन वृद्धि करने पर नागरिक अभिनन्दन किया गया तथा बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले नितेश ढाका, सुरेश सैनी व जावेद को सुदीप शर्मा द्वारा प्रति छात्र को 5100/- रुपये नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया तथा राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में चयनित सुनिता कुमावत, शोभा शर्मा, सुनिता कंवर, पूजा शर्मा, सन्तरा अनिता काकड़िया, पूजा, रवीना को प्रति छात्रा को 1600/- रु. का नकद पुरस्कार कुरड़ाराम मील व सुभाष मील द्वारा दिया गया। इन विद्यार्थियों को प्रतीक चिह्न व 28000/- रु. का नकद पुरस्कार देने पर ग्रामवासियों व प्रधानाचार्य सुमन शेखावत ने आभार व्यक्त किया। ग्रामवासियों द्वारा सुमन शेखावत को शॉल ओढ़ाकर व प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। भामाशाहों को विद्यालय में बास्केटबाल एवं हैण्डबॉल खेल मैदान तैयार करने के लिए प्रेरित करने वाले राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता शारीरिक शिक्षक भंवर सिंह को साफा व मैडल पहनाकर, प्रतीक चिह्न देकर विधायकों ने सम्मानित किया। इस अवसर पर सैकड़ों गणमान्य नागरिक व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

6. छोटीसादड़ी– गोमाना पंचायत मुख्यालय स्थित आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में कौमी एकता सप्ताह व छात्र संसद शपथ ग्रहण समारोह आशा पाटीदार की अध्यक्षता में हुआ। मुख्य अतिथि सरोज वैष्णव थी। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने मां सरस्वती की पूजा अर्चना व माल्यार्पण से किया। बाद में विद्यार्थियों ने कौमी एकता व सौहार्द्र गीत, संगीत, कविता आदि प्रस्तुत किए। साथ ही गुरुनानक जयंती पर्व मनाया गया। जिसमें छात्र–छात्राओं ने गुरु नानक देवजी के जीवन व आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। प्रधानाचार्य शोभराज साहू ने नवगठित छात्र संसद के मंत्रियों को पद के कर्तव्यों व जिम्मेदारियों के निर्वहन की शपथ दिलाई।

छात्र संसद में प्रधानमंत्री पप्पू प्रजापत, उप प्रधानमंत्री, भैयालाल गायरी, प्रार्थनासभा मंत्री आशा पाटीदार, साहित्य मंत्री प्रियंका पाटीदार, संस्कृति मंत्री सोनू सेन, खेल मंत्री भरत कुमावत, अनुशासन मंत्री कमलेश कुमावत, शिक्षा मंत्री ज्योति पाटीदार, उप शिक्षा मंत्री सरोज वैष्णव, स्वच्छता मंत्री राजु सुथार, स्वास्थ्य मंत्री लता कुमावत, पोषाहार मंत्री दीपक नगारची, बाल कल्याण मंत्री उदयलाल मेघवाल, पर्यावरण मंत्री आशीष कुमावत, जन भ्रमण मंत्री पवन पाटीदार, सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री दिव्या मीणा, कम्प्यूटर शिक्षा मंत्री पूजा मीणा, विज्ञान व तकनीकी मंत्री किरण प्रजापत को मनोनीत किया गया। शपथ ग्रहण के बाद संसद की बैठक हुई।

7. सोमलसर (नोखा) बीकानेर– प्यासी धरती करे पुकार, जल जाये न बेकार।"

रा.आ.उ.मा. विद्यालय सोमलसर (नोखा) बीकानेर के शाला प्रांगण में मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के आह्वान पर निदेशालय, जल ग्रहण विकास एवं भू संरक्षण, पंचायती राज विभाग राजस्थान सरकार द्वारा जनहित में शाला एवं जवाहर लाल नेहरू शिक्षण संस्थान के तत्वावधान में विकास अधिकारी नोखा के सहयोग से रैली को शाला प्रधानाचार्य श्री मोहम्मद फारूक ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली का नेतृत्व श्री प्रहलाद दान ने किया जिसमें शिवलाल छींपा व सुरेन्द्र सिंह ने सहयोग किया। रैली सोमलसर के प्रमुख मार्गों से होते हुए अटल सेवा केन्द्र, सोमलसर पहुँची, जहां पर लेखराज गोदारा ने संबोधित करते हुए कहा कि "जल ही जीवन है, यदि भविष्य में जल का दोहन नहीं रोका गया तो देश की जनता में त्राहि–त्राहि मच जायेगी। जिसका खामियाजा हमें व आने वाली पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगा। पं.स. के तकनीकी प्रभारी श्री राकेश कुमार पूनिया ने कहा कि हमें बूंद-बूंद जल का सदुपयोग करने का संकल्प लेना होगा। प्रधानाध्यापक श्री हनुमान चौधरी एवं इनके अलावा ग्राम सेवक कस्तूरी देवी ने रैली को संबोधित किया। रैली शांतिपूर्ण व जागृति जगाने वाली उद्देश्यपरक रही।

संकलन–नारायण दास जीनगर

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

3-डी प्रिंटर से हृदय धमनियां विकसित

वाशिंगटन– कार्नेगी मेलन यूनिवर्सिटी में सहायक प्रोफेसर एडम फीनबर्ग ने कहा– 'हमने एम आर आई की मदद से हृदय की धमनियों के चित्र लिये थे और फिर 3-डी प्रिंटर की मदद से धमनियां बनाई। धमनियां बनाने के लिए शरीर के विभिन्न मुलायम अवयवों का इस्तेमाल किया गया। इसके तहत शरीर के विभिन्न जोड़ों के बीच में पाए जाने वाले खास प्रोटीन 'कालेगन', एसिड 'एलिगनेट्स' और खून का थक्का जमने के दौरान पाए जाने वाले 'फिबरिन' जैसे मुलायम पदार्थों से धमनियां विकसित की गई। परम्परागत 3-डी प्लास्टिक या अन्य पदार्थ से कठोर मॉडल बनते है और इसमें ठोस पदार्थों की एक के ऊपर एक परत बनाई जाती है। प्रोफेसर फीनबर्ग के अनुसार मुलायम पदार्थों से हृदय का 3-डी प्रिंटर बनाना चुनौतीपूर्ण कार्य था। कोर्नेजी मेलंस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के डीन 'जिम गैरेट' ने कहा– ''हमें उम्मीद करनी चाहिए कि 3-डी बायोप्रिंटिंग का बड़ी संख्या में चिकित्सा प्रयोग किया जाए।

आँखों को देखकर शराबी चालक की पहचान

वॉशिंगटन– भारतीय मूल के अमेरिकी छात्र ने एक ऐसा उपकरण बनाया है जो चालक की आंखों को देखकर बता देगा कि चालक ने नशा किया है या नहीं। टेक्सास निवासी 13 साल के कृष्णा रेड्डी ने यह उपकरण एक डिजिटल कैमरा, एक तेज फ्लैशलाइट और एक टॉयलेट पेपर रोल की सहायता से बनाया। यह उपकरण आँखों के सिकुड़ने और फैलने के आधार पर बताएगा कि चालक ने शराब का नशा किया है या नहीं। रेड्डी ने बताया कि उपकरण में लगी फ्लेशलाइट आँखों पर पड़ेगी और टॉयलेट पेपर रोल इसे सीधे पुतलियों में भेजेगा वहीं डिजिटल कैमरा पुतलियों के सिकुड़ने का वीडीयो बनाएगा। चूंकि नशीले पेय पदार्थ पीने से पुतलियां सिकुड़ जाती है, जबकि एलएसडी, कोकीन, जैसे नशे में फैल जाती है। कहाकि मेरा उपकरण पुतलियों की गतिविधियां पकड़ लेगा। रेड्डी अमेरिका के टॉप यंग साइंटिस्ट प्रतियोगिता डिस्कवरी एजूकेशन 3 एम यंग साइंटिस्ट चैलेंज के शीर्ष दस प्रतियोगिताओं में पहुंच चुके।

केले से होगा एड्स और फ्लू का इलाज

अमेरिका–की मिशिगन यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक शोध के अनुसार केले से सामान्य फ्लू और एड्स जैसी बीमारियों के इलाज की बात कही उनके अनुसार केले के सभी तत्वों को मिलाकर केले में पाया जाने वाला 'बनाना लेक्टिक' या 'बैनलेक प्रोटीन' एच आई वी की रोकथाम के लिए प्रभावी साबित हो रहा है जिससे एड्स जैसी घातक बीमारी का इलाज भी संभव हो सकता है। उन्होंने कहा एड्स के अलावा सर्दी लगने और सामान्य फ्लू के इलाज में भी यह प्रोटीन मदद कर सकता है। पांच वर्ष पूर्व इस प्रोटीन की खोज की थी लेकिन उस समय इसके कुछ हानिकारक प्रभाव भी सामने आए जिसे अब काफी हद तक कम कर दिया है। वैज्ञानिकों ने उक्त दवा का चूहों पर प्रयोग किया जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आए। प्रयोग के दौरान यह सामने आया कि बैनलेक एच आई वी वायरस के शर्करा कणों पर चिपक जाता है और फिर अपना प्रभाव छोड़ते हुए वायरस को तेजी से प्रतिरक्षी तंत्र से बाहर कर देता है।

मिल गया धरती जैसा ग्रह

न्यूयॉर्क– मैरीलैंड विश्वविद्यालय के अंतरिक्ष विज्ञानी डैरेक डेमिंग ने कहा कि इस ग्रह की खोज अब तक की सबसे महत्वपूर्ण खोज है। वैज्ञानिकों ने हब्बल दूरबीन में एक ऐसा तारा कैद किया है जो हुबहु पृथ्वी जैसा ही है। वैज्ञानिक इसे पृथ्वी-2 बोल रहे है और उस पर जीवन तलाश कर रहे है। उनका मानना है कि इस ग्रह पर एलियनों के रूप में जीवन हो सकता है। वैज्ञानिकों ने इस ग्रह को 'जीजे1132बी' नाम दिया है, जो सूर्य जैसे तारे का चक्कर लगाता है। यह ग्रह धरती से 39 प्रकाश वर्ष यानी 22,92,66, 39,61,08,688 मील दूर है। यह एक लाल ग्रह है जो सूर्य से 5 गुणा व पृथ्वी से 16 गुना बड़ा है। इसकी सतह 260 डिग्री सेल्सियस तक गरम है। वैज्ञानिक मानते हैं कि इस ग्रह पर ऑक्सीजन व पर्यावरण दोनों मौजूद हो सकते हैं तथा वे चीजें भी मौजूद हो सकती है जो हमारी पृथ्वी पर मौजूद हैं।

हवाई अड्डे पर अब रास्ता दिखाएंगे रोबोट

लंदन– एम्सटर्ड के शिफोल हवाई अड्डे पर 30 नवम्बर से रोबोट यात्रियों को रास्ता दिखाएंगे। यूरोपियन आयोग की ओर से वित्तपोषित एक परियोजना 'स्पेन्सर' के तहत पांच अलग-अलग देशों के शोधकर्ताओं और उद्योग जगत की कंपनियों के बीच सहयोग से इसकी शुरूआत की गई है। रोबोट द्वारा मानव व्यवहार को समझना और उनके अनुसार कार्य करने की क्षमता का आकलन करना इस परियोजना के उद्देश्यों में शामिल है। हवाई अड्डे पर चारों तरफ सामानों की बड़ी-बड़ी ट्रालियों, अस्थाई गतिरोध और लोगों की कतारें होती है। उन्होंने बताया, एक हफ्ते तक चलने वाले इस कार्यक्रम में हम शिफोल हवाई अड्डे की भीड़भाड़ के बीच रोबोट का परीक्षण करेंगे। यह रोबोट परियोजना शोधकर्ताओं द्वारा संचालित की जा रही है। इसकी पहल डच एयरलाइन 'के एल एम' ने की थी।

लैब में तैयार कोशिकाओं से लीवर का इलाज होगा

न्यूयॉर्क– लीवर की बीमारियों से जूझ रहे मरीजों के लिए शोधकर्ताओं ने एक ऐसी प्रक्रिया विकसित की है, जिससे प्रयोगशाला में मानव लीवर कोशिकाओं की संख्या तेजी से बढ़ाई जा सकती है। यह कोशिकाएं सामान्य कोशिकाओं की तरह ही काम करेगी। इजराइल के येरूशलम स्थित हिब्रु यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने यह अध्ययन किया। अध्ययन के प्रमुख लेखक याकोव नाहमियास के मुताबिक यह अध्ययन लीवर पर हो रहे अनुसंधानों में मील का पत्थर साबित होगा। यह अध्ययन 'नेचर बायोटेक्नोलोजी' पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। शोधकर्ताओं के अनुसार प्रयोगशाला में मानव हैपेटोसाइट्स कोशिकाएं बिना अपने गुण को खोए बढ़ाई जा सकती है। ये कोशिकाएं मनुष्य के लीवर के ऊतक में पाई जाती है। इन्हीं से 70 से 85 फीसदी लीवर का निर्माण होता है। इस शोध से जैव-कृत्रिम लीवर के निर्माण में मदद मिलेगी ये आम कोशिकाओं की तरह काम करेगी।

संकलन-नारायण दास जीनगर

पाली

रा.मा.वि.हिंगावास तह. सोजत को श्री पारसराम देवासी से बायोमेट्रिक मशीन लागत-19,000 रुपये मात्र, श्री चेतन कुमार देवासी से छात्र दैनिक डायरी लागत 2,100 रुपये।

बीकानेर

रा.उ.मा.वि. पलाना को श्री रामनारायण सियाग द्वारा विद्यालय को सीलिंग फैन 06, शाला भवन के शेष कमरों में विद्युत फीटिंग, पानी की टंकी (सिंथेटिक) एक, शौचालय में पानी की फीटिंग करवायी। **रा.उ.मा.वि. हाडलां भाटियान कोलायत** को सरपंच श्री सांग सिंह भाटी से स्टील की थाली लागत-2,121 रुपये। **रा.मा.वि. नं. 5 अस्ताबारी के बाहर** को श्रीलाल मारू द्वारा वाटर कूलर भेंट लागत-27,850 रुपये। **रा.प्रा.वि. नायकों का मौहल्ला राजीव नगर** को श्री जवानाराम नायक से विद्यालय ड्रेस लागत-25,000 रुपये, श्री दुर्गाशंकर मेहता से बच्चों को स्टेशनरी हेतु 1,000 रुपये।

बूंदी

आदर्श रा.उ.मा.वि. माखीदा को जनसहयोग से 03 बड़ी अलमारियां, 2 बड़े लोहे के बक्से, लोहे के 15 फीट की सीढ़ी, एक टेबल, एक छत पंखा लागत- 30,601 रुपये। **रा.उ.मा.वि. लाखेरी** को सर्व श्री बाबूलाल पारीक से एक पंखा (दीवार), श्री सच्चिदानन्द शर्मा से एक दीवार पंखा मय फिटिंग, श्री सत्यम शर्मा व सच्चिदानन्द शर्मा से एक-एक दीवार पंखा तथा 400mm Wall 47 Crystal white kg 15

भरतपुर

रा.मा.वि. बोसौली में पूर्व सरपंच श्री मानसिंह गुर्जर द्वारा $11^1/_3$ बिस्वा (लगभग 1,100 वर्ग गज) भूमि दान जिसकी अनुमानित लागत 5,51,000 रुपये साथ ही एक पंखा लागत 1,500 रुपये, श्री राजवीर सिंह चेंची से 1,500 रुपए नकद। **रा.मा.वि., बरिघ (रूपवास)** को श्री बिहारी जी से 10 पंखे (ओरियंट) लागत 15,000 रुपये।

भीलवाड़ा

रा.उ.मा.वि. रायला को श्री कैलाशचन्द लढ़ा से एक आहूजा माइक सेट (एम्पलीफायर) लागत 8,000 रुपये, श्री रविकांत त्रिपाठी से माइक सेट की अन्य एसेसरीज लागत 3,500 रुपये, कक्षा 12 के छात्र-छात्रा द्वारा आहूजा

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रूपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग भी इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें।

-वरिष्ठ संपादक

स्पीकर 02 लागत 6,000 रुपये, श्री रतनलाल सोमानी से 05 टेबल स्टूल सेट लागत 5,500 रुपये, श्री प्रेमलाल सामरिया व श्रीज्ञानचन्द रांका से 02-02 टेबल स्टूल सेट प्रत्येक की लागत 2,200 रुपये, श्री भंवरलाल छीपा व श्री रामनिवास बुनकर से 01-01 टेबल स्टूल सेट प्रत्येक की लागत 1,100 रुपये, सर्वश्री कैलाश सोडानी, श्याम सुन्दर कोगटा, मै. संगम इण्डिया लिमिटेड सरेरी से प्रत्येक से 10-10 ट्री गार्ड तथा प्रत्येक की लागत 12,000 रुपये, श्री

हमारे भामाशाह

बालूराम बुनकर से बड़ी फर्श दरी 02 लागत 5,000 रुपये, श्री मांगेराम सिंघल से एक छत पंखा लागत 1,600 रुपये, श्रीमती तुलसीदेवी पालीवाल व श्री दुर्गाशंकर सोनी से 02 छत पंखे तथा प्रत्येक की लागत 3,200 रुपये, श्री प्रेमलाल सामरिया से 55 स्वेटर वितरण लागत 18,250 रुपये।

राजसमंद

रा.उ.मा.वि. पसून्द को रमजान खाँ पठान से 50-50 स्टूल व टेबिल लागत 70,000 रुपये, श्री प्रवीण पटवारी द्वारा विद्यालय कक्षा-कक्षों व बरामदें में विद्युत फिटिंग लागत 60,000 रुपये, श्री किशनलाल गुर्जर द्वारा सरस्वती माँ का मन्दिर निर्माण एवं मूर्ति स्थापना लागत 10,000 रुपये, श्री प्रमोद गोयल द्वारा विद्युत फीटिंग लागत 10,000 रुपये, सर्व श्री पारस बोथरा, भगवती प्रसाद बियाणी, ओमजी मंत्री, निर्मल बड़ाला, संजय सामसुखा, सुधीर व्यास, सुरेश जोशी से प्रत्येक से 05-05 पंखे तथा प्रत्येक की लागत 6,000 रुपये।

सिरोही

रा.मा.वि. तरूँगी में श्री दलपत सिंह द्वारा माँ सरस्वती मंदिर का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत-30,000 रुपये तथा मूर्ति की लागत 10,000 रुपये।

नागौर

रा.प्रा.वि. इन्दौखा (कुचामन सिटी) में श्री गोपाल लाल शर्मा से दो कुर्सी लागत 1,100 रुपये, श्री उम्मेदसिंह उदावत से दो कुर्सी लागत 950 रुपये, श्री बजरंग उदावत से दो कुर्सी लागत 950 रुपये, सर्वश्री भवानी सिंह उदावत, खांगाराम मूण्ड, सुवाराम गुर्जर से प्रत्येक से एक-एक कुर्सी तथा प्रत्येक की लागत 475 रुपये, श्री हिम्मतराम गुर्जर से 5 कुर्सी लागत 2,000 रुपये, श्री बाबूलाल कालिय से एक टेबल टॉप लागत 1,100 रुपये, श्री रामस्वरूप मूण्ड से प्लास्टिक पाइप लागत 600 रुपये, श्री गणेशाराम मूण्ड व गोपाल लाल स्वामी से दो-दो पंखा तथा प्रत्येक की लागत 6,300 रुपये, सर्वश्री चन्द्राराम प्रजापत, राधेश्याम प्रजापत, सेवाराम प्रजापत से प्रत्येक से एक-एक पंखा प्रत्येक की लागत 1350 रुपये, सर्वश्री हरिराम मूण्ड, रूपाराम गुर्जर, पन्नाराम मूण्ड से प्रत्येक से एक-एक पंखा तथा प्रत्येक की लागत 1,650 रुपये, श्री मदनसिंह मेड़तिया से 50 विद्यार्थियों को एक-एक स्लेट लागत 1,000 रुपये, सर्वश्री सूजाराम किरडोलिया, मंगलाराम मूण्ड से 50 विद्यार्थियों को एक-एक स्लेट तथा प्रत्येक की लागत 1,250 रुपये, श्रीमती बिरदीदेवी मूण्ड से रंग-रोगन हेतु नकद 11,000 रुपये प्राप्त हुए। श्री दीपाराम गुर्जर से 7,100 रुपये नकद, सर्व श्री हिम्मतराम गुर्जर, श्रीमती सोहनी देवी यादव प्रत्युक से 5,100 रुपये नकद, श्री भंवरलाल मूण्ड से 2,500 रुपये नकद, श्री रामस्वरूप मूण्ड से 2,100 रुपये नकद, सर्व श्री मदन सिंह मेड़तिया, गोपाल लाल स्वामी, चन्द्राराम प्रजापत, रतनाराम प्रजापत, कैलाश पंवार, जगदीश मेघवाल, गोपाल लाल प्रजापत, नरेन्द्र सिंह उदावत, ओमप्रकाश मेघवाल, रामेश्वर लाल मेघवाल, सरोज देवी जैन, श्योजीराम किरोकोलिया, सीताराम प्रजापत, प्रभुराम केरोडोलिया, गणपतराम गुर्जर, शिवजीराम सऊ, पन्नालाल मूण्ड, श्रवणलाल मीणा, माँगीलाल, रामूराम मूण्ड, गोपाल मूण्ड से प्रत्येक से 1,100 रुपये रंग रोगन हेतु नकद।

शिविरा पत्रिका (मासिक) : जनवरी 2016 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह–2015

18 दिसम्बर, 2016

स्थान : बेसेनरी ऑडिटोरियम, बीकानेर

(बाएं) समारोह के मुख्य अतिथि माननीय डॉ. गोपाल जोशी, विधायक बीकानेर (पश्चिम) एवं अध्यक्ष श्रीमती प्रियंका गोस्वामी, अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा दीप प्रज्ज्वलन। (दाएं) गरिमामय मंच द्वारा प्रकाशित पुस्तिका का लोकार्पण।

उद्बोधन देते हुए समारोह के मुख्य अतिथि माननीय डॉ. गोपाल जोशी, विधायक बीकानेर (पश्चिम) एवं अध्यक्ष श्रीमती प्रियंका गोस्वामी, अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

श्री शिवशंकर आचार्य, संयुक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राज. धन्यवाद ज्ञापित करते हुए।

सम्मान समारोह में उपस्थित अधिकारी, सम्मानित कर्मचारी और परिजन।

राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2015

16 दिसम्बर, 2015